



# शरत्-साहित्य

## विजया

( नाटक )



अनुवादकर्ता—

प० रूपनारायण पाण्डेय

प्रकाशक :

भायूराम प्रेमी, मेनेस्त्रिय हायरैकण,  
हिन्दी-ग्रन्थ सनाकर (मा०) लि०,  
हीराबाग, बम्बई-४

पहली बार  
दिसम्बर १९५७

मूल्य १३)

सुरक्षक :

रघुनाथ विपारी बेसाई,  
न्यू मारत प्रिंटिंग प्रेस,  
१ बेकैसाडी, गिरगाँव, बम्बई-४

## निवेदन

दृष्टा ( भा० १८ ) नामक उपन्यासका यह नाटक-रूप है—  
विबन्धा। इसे रक्षक छात्राशाले कमान्तरित किया था और कलकत्तेके  
समर सिनेमामें यह बड़ी लफ्फटाके साथ ज्ञेय गवा था।

इसके पहल हम छात्राशालेके रमा ( ग्रामीण लम्बा ) और  
बोङ्गरी ( देना पाकना ) नामक दो नाटकोंमें प्रकाशित कर चुके  
हैं। निम्न बहूका नाटक-रूप भी पाठकोंके लम्बत बस्ती ही  
उपरिष्ठ किया जावगा।

—प्रकाशक

## नाटक-पात्र

### पुरुष

- रामविहारी — मृत कन्यास्त्रीके मित्र और विजयाके अभिमित्र  
 विद्यामणिहारी — रामविहारीके पुत्र  
 नरेन्द्र (नरेन्द्र) — कन्यास्त्री और रामविहारीके मित्र मृत बगहीराके पुत्र  
 दयाम — विजयाके प्रतिद्वन्द्व आत्मा  
 पूष गांगुली — नरेन्द्रके मामा  
 कपतीपत्र — विजयाका मौजूद  
 परेश — „ बाबू नौदर  
 बन्धुसिंह — „ दरबान  
 रामचारी, निर्मल मदन, कन्यास्त्री आदि

★

### स्त्री

- परेशकी मा — विजयाकी बहिन  
 विजया — कन्यास्त्रीकी कन्या  
 मलिकी — दयामकी मानवी  
 दयामकी स्त्री, पहिली और रामचारी, आदि



# विजया

## प्रथम अंक

### प्रथम दृश्य

स्थान—विजया का बैठकगाला

विजया—बगैरा मुगरी क्या सम्भुन उन परस गिरकर मरे ब ?

स्वयं —इसमें भी क्या कुछ छेदे है ? शराब न नामें उड़न पछे मे ।

विजया—कसे दुगरी दल है ।

स्वयं—दुगरी क्यों है ? असलतम उनकी मौत न होगी तो और किसकी होगी ? बगैरा बाबू फल आपक गिरा स्वयं बनमायी बाबूके ही सहाठी क्यु न ब, बह मरे बाबूके भी बचनक लायी और मित्र मे । लेकिन बाबूरी उनका मुँह भी नहीं देखत ब । वे मरे शिखरक पल हा कर कप उबार मँगन आप ब—विजया के ऊँचे नौकराके सब दिखार बाहर निशान दिया था । बाबूरी हमसा कहत है कि इन अग्निरिष लेलोका प्रलय या महाग दनस मनुष्य मन्मथ मगानक निर अन्तर्पो होय है ।

विजया—यह तो जय है ।

स्वयं —मित्र हो, जाद कार्र हो, दुष्टाारा किर्त लह ननावके बरम आदरको दूरित करना उचित नहीं । बगैराभी सारी सम्पत्ति बर म्यावस हमी मालोकी है । उनका लक्ष्य निग्रक फरका बुझा लह तो अन्तर है अगर न बुझा लके तो हमें इली पड़ी लह कुछ करने हाथमें कर देना

पारिए। वास्तवमें छोड़ देना हमें आविष्कार भी नहीं है। कारण, इन बपोंसे हम बहुत-से अच्छे काम कर सकते हैं। उमाबके किसी होनाहार समझके कियवत एक घेब सकते हैं—धर्मके प्रसारमें सर्व कर सकते हैं—न बाने कियना क्या कर सकते हैं। हम यह क्यों न करें, आप ही पताइए ! आपकी सम्मति पाते ही बाबूजी लज ठीक कर लेंगे।

( विजया कुछ हथर ठपर करने लगती है । )

विजया०—ना ना, मैं आपको किसी तरह झूठ-मल्लेख न करने दूँगा। दुनिया दुर्बलता पाप है—केवल पाप बन्नी, महात्म्य है। मैंने मन ही मन संकल्प कर लिया है, आपके नामसे—जो कभी नहीं है, जो कभी नहीं हुआ—बही बर्सेगा। इस गैरगैरके बीच ब्रह्मन्विरही रघुनाथ करके देशके इन अभागों मूल्योंको बर्सेगी सिद्ध होगा। आप एक बार बरा खेचकर देखिए, इन बीमोंकी अलछाके अत्माधारसे छेड़में पड़कर आपके पितृदेवको अपना गर्व—अपना घर छोड़ना पड़ा था कि नहीं ! उनकी कम्पा होकर आपको क्या यह उचित नहीं है कि उठ बदलसूत्रीय यह नोडुल ( मद्रबनोवित ) बदल लें, अर्थात् उनका यह घर उतार करे ! ( विजया चुन रही है ) बरा सोचिए तो, देशमें आत्मज्ञ किना बड़ा नाम होमा—किन्ती बड़ी शोहरत होगी ! लपकापागमको स्वीकार करना होगा—और यह स्वीकार करनेका मार गुहार है—कि हमारे लम्बकमें मनुष्य हैं, इंसान हैं, स्वार्थताग है। उन्होंने जिसे लम्बा, मानविक बीड़ा पहुँचारा, और अपना घर-नीच छोड़नेके लिए बाध्य किया उसी महात्माकी महीनकी कम्बाने केवल ऊँचीक लम्बके लिए यह इतना बड़ा स्वार्थताग किया। तारे मारतपर इतना किना मौरक पपेक ( नेतिक प्रभाव ) पड़ेगा, बरा लचकर लो देखिए !

विजया—यह तो है, लेकिन मुझे खान पड़ता है कि बाबूजीकी ठीक यही हप्ता नहीं थी। बददीय बाबूजी से हमारा मन ही मन प्यार करत रहे।

विजया०—ऐसा हो ही नहीं सकता। इस कुछमों शयबीको वह प्यार करत न यह निश्चल में नहीं कर सकता।

विजया—एत कारेमें मैंने भी बाबूजीसे बहुत की थी। उन्होंने मैंने मुना है कि वह, अपने पिता और बददीय बाबू—तीनों बने केवल लम्बाई ही

नहीं, एक इन्तरेके घनिष्ठ मित्र भी थे। बगदीय बाबू ही सबसे मयाही छत्र के किन्तु जैसे दुर्लभ थे, वैसे ही दरिद्र भी। बड़े होनेपर आपके पिता और मेरे पितान माहात्म्य स्वीकार कर लिया, मगर बगदीय बाबू नहीं कर लेंगे और मौखिक इत धन-परिकल्पने के कारण निर्वासन शुरू हो गया। आपके पिता अत्याचार छोड़ते हुए गौरमें ही रह गये, लेकिन मेरे बाबूजीसँ नहीं छोड़ा गया। वे अपनी तारी कमीन बापदादजी बेगरेम्बका भार आकर पिताको खोपकर, माफ़ो लेकर, कसकसे बल आये और बगदीय बाबू अपनी खीको लेकर बकास्य करनेके लिए पछौड़की और पछे गये।

विमल०—यह सब मैं भी जानता हूँ।

विद्या—जानता ही था। फिर मैं वह एक बड़े बारीब हो गये। उनमें परस कोरं होत नहीं था। कल्ल खीके मरनेके बाद ही उनकी दुर्गति शुरू हो गई।

विमल०—पर वह अशुभ अपराध है।

विद्या—यह ठीक है। लेकिन इनके बहुत दिन बाद मरी अपनी माऊ मरने पर मेरे बाबूजीन एक दिन एकएक बातों ही बातोंमें कहा था—बगदीयने क्यों छत्र पीना शुरू कर लिया था, यह मैं अब समझ सका हूँ विद्या।

विमल०—कहती क्या हो? उनका मृगम दण्ड पीनेका justification!

विद्या—आज भी क्या कहते हैं विमल बाबू। यह बख्शीकछत्र का समर्पण न था। हमने उन्होंने अपने बन्धु-बन्धुकी रक्खाके परिमायकी आर हो लोके किया था। प्रतिज्ञा गह, कमाई गई, नव नव करके वे देखो मोट आय।

विमल०—बड़ी नीति कमाई।

विद्या—नव रखा, लेकिन जान पड़ता है, मेरे स्तिर मनम मित्रका स्नेह मही गया। हमीन अब कभी बगदीय बाबूने इनसे मोंगे, सब व 'ना' नहीं कह गह।

विमल०—ऐसा होता तो जय न देखर दान भी तो कर सकते थे।

विद्या—यह तो मैं नहीं जानती विमल बाबू। हा सचता है, उन्होंने दान करके मित्रक बड़े दुर आत्मम्यान-खोपको समझ न जाना जाहा हो।



साहिए । वास्तवमें छोड़ देनेका हमें अधिकार भी नहीं है । कारण, इन कपड़ोंमें हम बहुत-से अच्छे काम कर सकते हैं । लम्बाके किसी हीनद्वार लम्बेको निम्नपर तक मेव सकते हैं—धर्मके प्रसारमें लाने कर सकते हैं—न जाने किना कवा कर सकते हैं । हम यह क्यों न करें, आप ही कारण ? आपकी सम्मति पाते ही बाबूजी तब दीख कर मेंगे ।

( विजया कुछ हथर उधर करने लगती है । )

विजया—जा ना, मैं आतमी किसी तरह बाल-मयेत न करने दूंगा । बुनिया दुबक्या पाव है—केवल पाव क्यों, महापाव है । मैंने मन ही मन संकल्प कर लिया है, आपका नामने—बो कहीं नहीं है, बो कहीं नहीं हुआ—बरी कर्कश्य । इस गैरगैरके बीच ब्रह्मस्मिरकी रचना करके देखके इन अमना मूलोंको धमकी सिधा दूँगा । आप एक बार बरा लोचकर देखिए, इन लोनोंकी अकलाके अत्याचारमें पड़कर आपके जिन्देबको अपना दीर—अपना घर छोड़ना पड़ा या कि नहीं ? उनकी बम्बा होकर आतमी क्या यह उचित नहीं है कि उन बरतनूकीका यह नोतुल ( मद्रबनेकित ) बदल लें, अर्थात् उनका यह परम उपहार करें ? ( विजया पुन रहती है ) बरा सोनिए तो, देखमें आपका कितना बड़ा नाम हीमा—किती बरी शहरत होगी ! सर्वनाचारको स्वीकार करना होगा—और यह स्वीकार करनेका मार मुहार है—कि हमारे लम्बवमें मनुष्य है, इरप है, रगर्वताम है । उन्होंने बिठे लयाबा, मानविकि पीका पहुँचार्, और अमना पर-मोन छड़नके सिध बाप किमा, उमी महात्माकी महीपली कन्यान केवल उहीकि लमनेके सिध यह इतना बड़ा त्वापेत्याग किया । तारे मारतपर हमरा किना मौरल एपन ( नैतिक प्रभाव ) पड़ेगा, बरा लोचकर हो रनिए ।

विजया—यह ता है, लेकिन मुझे बान पड़ता है कि बाबूजीकी दीक बही हण्ड नहीं थी । बगरीय बाबूको वे हमारा मन ही मन प्यार करते रहे ।

विजया—ऐसा हो ही नहीं सकता । इस दुनियों शराबीको यह प्यार करते व यह विधान में नहीं कर सकते ।

विजया—इस बारेमें मैंने भी बाबूजीसे कहल की थी । उन्होंने मैंने मुना है कि बा, अपने मित्र और बगरीय बाबू—लोनो बने केवल लहपाटी हो

नहीं, एक दूसरेके पनिष्ठ मित्र भी न। बगदीघ बाबू ही अपने मंषाही छत्र के  
 किन्तु वेसे दुर्जेय थे, वेसे ही दखि भी। बड़े होनेपर आपके पिता और मरे  
 पिताने आपपरम स्वीकार कर लिखा, मगर बगदीघ बाबू नहीं कर लेंगे और गौबमें  
 इस समय-परिपक्वताके कारण निर्यातन शुरू हो गया। आपके पिता अत्याचार सहते  
 हुए गौबमें ही रह गये; लेकिन मरे बाबूजीस नहीं सह्य गया। वे अपनी सारी  
 अमीन आपदादही देखरेखका भार आपके पिताको सौंपकर, माफ़ो लेकर  
 कम्पनसे बछ भाग और बगदीघ बाबू अपनी बीबीको लेकर बकालत करनेके  
 लिए पछौहकी ओर चले गये।

विष्णु०—बह सब मैं भी जानता हूँ।

विष्णु—जानना ही पारिए। पछौहमें बह एक बड़े कमीन हो गय। उनमें  
 परत कोई दोन नहीं था। कल्प लीके मरनेके बाद ही उनकी कुगति  
 शुरू हो गई।

विष्णु०—पर यह अधम्य अपराध है।

विष्णु—यह ठीक है। लेकिन इसके बहुत दिन बाद मरी अपनी  
 माऊ मरने पर मरे बाबूजीने एक दिन एकएक बत्ती ही बत्तीमें कहा था—  
 बगदीघने क्यों घरान पीना शुरू कर दिया था, यह मैं अब समझ पाता  
 हूँ विष्णु।

विष्णु०—कहती क्या हो! उनके मुखमें घण्टा पीनेका justification।

विष्णु—आज भी क्या कहते हैं विहात बाबू। यह बरदीकिरण था  
 कमयन न था। इनमें उन्होंने अपने कल्प-अनुरी व्यापारके परिमादकी ओर  
 ही लगेत किया था। प्रतिष्ठा गई, कमाई गई, सब नष्ट करके वे देशको  
 सोर भाग।

विष्णु०—बड़ी कीर्ति कमाई।

विष्णु—सब गया, लेकिन जान पड़ता है, मरे पिताके मनम मित्रका  
 स्नेह नहीं गया। रूसीय सब कभी बगदीघ बाबूने करव मोंगे, सब वे 'ना'  
 नहीं कह लेंगे।

विष्णु०—ऐसा होता तो पता न देकर जान भी तो कर सकते थे।

विष्णु—यह तो मैं नहीं जानती विष्णु बाबू। हो सकता है, उन्होंने जान  
 करके निश्चय बचे हुए आत्ममान-सोपको समझ न जाना पाया हो।

विष्णु०—बुनिया, वह सब आपकी कमिस्तकी बातें हैं। नहीं तो वे श्रम छोड़ देनेका ठपरेस आखीरे दे पा सकते थे। वे आस अपने मित्रका फल मांग कर देनेके लिए क्यों नहीं कह गये ?

विजया—वह मैं नहीं जानती। वह मुझ कोई भी आवेश लेकर बचनमें नहीं डाल गये। बर्फ़ का पतले पर बाबूजी कह करते थे कि बड़ी, तुम अपनी घम-कुदिले ही अपने कर्मियोंको जानो। मैं अपनी इच्छाके सामना मुझे न बीच बाँझ्या। किन्तु मुझे बान पड़ता है कि फिाके कदम अदालतीमें पहुँचने पर-हीन करनेका उनका इरादा नहीं था। मुना है, बगदीश बाबूके लड़केका नाम नरेन्द्र है। आप जानते हैं, वह क्यों है ?

विष्णु०—जानता हूँ। शराबी आपकी तरफ़ी करके वह अपने घरमें ही है। पिताके श्रममें वो असा नहीं करता वह कुपुत्र है। उनपर दया करना व्यर्थ है।

विजया—जान पड़ता है, आपन उनकी बान-बिद्वान है ?

विष्णु०—बान-बिद्वान ! छि—आप मुझ क्या लमशील हैं क्याहण तो ! मैं तो वह मोन ही नहीं लक्या कि बगदीश मुग़बीके लड़केके हाथ मरी बान-बिद्वान का बानपीत हो लक़ी है। हाँ, उन दिन रातमें अचानक एक पान्थन-बैन नये आदमीका दमकर मुझे आकर्षण अरुण हुआ था। मुना, वही नरेन्द्र मुग़बी है।

विजया—पान्थन-बैन ! लकिन मुना है वह तो हास्य है ?

विष्णु०—हास्य ! मैं तो विरुध्न नहीं करता। जेसी बाबूजी जेसी ही प्रकृति एक निरुध्न लक़ा है।

विजया—अपना विष्णु बाबू, अगर बगदीश बाबूके परपर हममेंसे लममुन लक़ा कर में, तो गौरमें क्या एक मरा गोप्यमय न उठ पड़ा होगा ?

विष्णु०—विष्णु नहीं। आप इधरके पौन-जाय गौरमें एक आदमी भी पेना न लक़ेगी, दिन हल शराबीन रचीनर भी लहनुमृति रही हा। उनके पिा 'हास' करे, पेना कोई आदमी हल तरफ़ नहीं है।

( नोकर आकर पाप व ल्या। रासमर बाद छोट आकर होता —)

बगदीश—( नोकर ) एक मय आदमी में करना चाहत है।

विजया—उन्हे वहीं लू आओ । ( नौकरका प्रस्थान )

विजया—मुझमें अब यह नहीं सहा जाता । लोगोंके जाने जानेका ठाना गया ही रहता है । इनसे तो बिल्कि कछड़सेमें ही अच्छी थी ।

( नरेन्द्रका प्रवेश )

नरेन्द्र—मेरे मामा पूजनन्द गांगुली महाशय आपके पड़ोसी हैं । वह बाग़्यक़ा पर उन्हींका है । मैं वह नुनकर अवगत रह गया कि उनके बान्-दादोंके बमानसे खर्ची आ रही दुर्गापूजाको आप शापद अबकी फन्द कर देना चाहती हैं । यह क्या लय है ? ( इतना कहकर एक कुर्मी लीककर गगर बैठ जाता है । )

विजया०—इसीस आन करने मामाजी तरफ़से शाग़ज़ा करने आय हैं क्या ? लेकिन आप किनाग़ चाते कर रहे हैं, वह न भूलिएगा ।

नरेन्द्र—जी नहीं, यह मैं नहीं भूलूँ । और शाग़ज़ा करन भी नहीं आया । बिल्कि हम बानस विज्ञान नहीं दुभा, इनसिए सब बान बानेके लिए आया हैं ।

विजया०—विज्ञान न होमेरा करव ?

नरेन्द्र—कैम विज्ञान होता ? निरवक़ अरन पहालीके घम विज्ञानको चो पछुनादण्ग, वह विज्ञान न होना ही तो स्वाभाविक है ।

विजया०—आनको अर्थ मालूम हमेने ही और किसीकी दृष्टिमें उसका कोई अर्थ नहीं रहेगा अथवा आनके घम कहनस ही वूसर उम शिष्टपाय कर सेंग, हमका कोई हलु नहीं है । मूर्तिपूजा हमारी दृष्टिमें घम नहीं है और उम राइनका भी हम अन्याय नहीं मानते ।

नरेन्द्र—( विजया ) आन भी क्या यही करती हैं ?

विजया—मैं ! मुझका क्या आन इसके विरुद्ध मन्तव्य नुननकी आया करके आय है ?

विजया०—( विजयाको लप करके ) लेकिन यह तो विदेशी आदमी है । बहुत मीमा है, हमारे घरमें कुछ भी नहीं जानते हो ।

नरेन्द्र—( विजया ) मैं विदेशी न होमर भी गौरवा आदमी नहीं हूँ, यह कहना ठीक है । तो भी मैं ननन ही आनस यह आया नहीं थी । मूर्तिपूजाकी बात आनके मुहम न निजमनेस भी मैं साकार निराशतका दुगना हाग़ा नहीं उठाऊँगा । अरन मीग एक दूरे समारके हैं, यह मैं जानता हूँ । लेकिन वह तो यह बात नहीं है । गौरव-भरमें यही एक पूजा होती है । सब ए-

सन्मर हली दिनकी प्रतीक्षामें रहते हैं। आपकी प्रज्ञा आपके बन्धन-बन्धनों की तरफ है। आगे के बानेके साथ साथ यौवमें आनन्द-उत्पन्न होयुना बढ़ जानेकी आशा ही तो सब ओर करते हैं। किन्तु ऐश्वर्य न होकर इतना बढ़ा हुआ, इतना बढ़ा निगमन भाव आप अपनी प्रज्ञाके तिरपर आद बेगी—बढ़ मिरावा करना क्या चाहते हैं ! मैं तो किसी तरफ विश्वास नहीं कर सका ।

विमर्श०—आपने अनेक बातें कही हैं। हमारे पास इतना पण्डित कम नहीं है कि हम आपसे साक्षर-निराक्षरकी बहुत करें। सो वह क्यूरेमें था। आपने मामा एक क्यों, एक सौ पुनर्जन्मों के बाद परम बैठकर पूजा कर ली है। उसमें हमें कोई आशंका नहीं है। पर बहुत-से लोग छाने और पण्डित पंडितों दिन-रात आपकी बातें पढ़कर इन्हें असुरान् अथवा परेशान करनेमें हैं। हमें आपकी है।

मरेन्द्र०—दिन-रात तो ये चाहे बरते नहीं। एक-दो बार अवश्य बरते हैं, ल तभी उसमें कुछ पुष्ट-पुष्ट हुए-गुठ होना ही है। कुछ अमुकिया ही नहीं। अगर लोग मायायी जाति हैं। इन चीयोंके आनन्दके अभावकारको भार नहीं गड़ेगी तो कौन मरेगा ?

स्निग्ध०—आपने तो कसम निश्चयनेके लिए मा और बाल-बच्चोंकी उम्माद ही, और वह मुननमें भी अगली लगी। किन्तु मैं पूछता हूँ कि यदि आपके मास्त्रके कमरोंके पाल महारमके बाड़े बीट्ठा शुद्ध कर दिया जाय, तो क्या उन्हें वह भयानक कम्पा ! और, वह पवित्र हो ही, बच्चाह बच्चाके लिए हमारे पास अन्य नहीं है। कपूने जो दुःख दिया है वही बीष।

मरेण्ड—अपने कानू कोन है और उन्हें मना करनेवा क्या अधिकार है वह बग खना नहीं है। नमिन नामने वह को पीरमई अरुमा ठगमा वे दाई को कुछ लपटने नहीं आई। मैं कहता हूँ, वह तोयनपीर म हाइर अरर कुलन-कुलन-कुलन कस होना तो अपन क्या करन, क्या मुने? वह तो केरम निराद ल-कालिक अरर लपटकरके निरा और कुछ नहीं है।

विचार :- क्यूँकि कर्मकाण्डे पुनः व्यवस्थान होकर सब पढ़ा, यह ये कहे  
 देना है। जहाँ जो कर्मों का व्यवस्थान कर्मों का पुनः विचार होना है और  
 जहाँ सब कर्मों का व्यवस्थान है।

नरेन्द्र—( विस्मयही उपेक्षा करके विजयासे )—मेरे मामा बड़े आदमी नहीं हैं। उनका पूजाका आयोजन साधारण ही है। तो भी आपकी गरीब प्रजापत बरमेरमें वही एक आनन्दोत्सव है। ही कहता है कि इससे आरम्भ कुछ अनुविधा हो; किन्तु उनका लयात करके क्या हटना भी न सह सकेगी ?

विजया—( देखियार एक प्रचंड पूजा मारकर ) ना, नहीं सह सकती—एक सौ बार नहीं सह सकती। कुछ मूल्य खोतीने पागलपनको बर्दाश्त करनेके लिए कोई कर्मिंदारी नहीं करता। तुम्हें और कुछ करनेको न ।। तो बान्मो—बकर हम स्वेगोका समय बरबाद न करो।

विजया—( विस्मयसे ) आपके बापू मुझे सड़कीधि तरह प्यार करते हैं, इसीसे उन्होंने इन खोगेकी पूजा मना कर दी है। लेकिन मैं कहती हूँ तीन-चार दिन कुछ हुन्कड़-हुन्कड़ होगा ही तो क्या हुआ—

विजया—और—बह अथवा हुन्कड़ होगा। आप बान्मो नहीं हैं, इसीसे—

विजया—बान्मो क्यों नहीं। होने दो हुन्कड़, तीन दिनका ही तो मामला है। और मेरी अनुविधाकी बात आप सोचन हैं तो अगर कलकत्ता होना तो आप क्या कर लेंगे, कण्ठ तो ? वही तो अगर कोई आठों पहर बान्मोके पल तोरे हाजिर रहता, तो भी ठम पुण्याप महना पड़ता। ( नरेन्द्र ) आप अपने मामा कह दीजिये, वह हाँ लाभ किस तरह पूजा करते हैं उन्ही तरह अबकी भी करें, मुझे तनिक भी आपत्ति नहीं है। अथवा तो कण, नमस्कार।

नरेन्द्र—कणसाद—नमस्कार, नमस्कार।

( दोनोंको नमस्कार करके प्रस्थान )

विजया—हमारी धापीन तो समाप्त ही नहीं होने पाई। तो क्या ठान्दुरा से सेाधि ही आपके बापूकी गव है।

विजया—हाँ।

विजया—लेकिन हममें किसी तरहका कुछ गोप्यात्म तो नहीं है।

विजया—ना।

विजया—आज क्या बह उन बेतब हथर आर्वेगे ?

विजया—कह नहीं जाता।

तापमर इती दिनकी प्रतीक्षामें रहते हैं। आपकी प्रथा आपके बाल-बन्धोकी तरह है। आरके आनेके साथ साथ गोंबमें आनन्द-उत्सव लीगुना बहू बानेकी आवाज ही सब लोग करते हैं। किन्तु ऐसा न होकर इतना बड़ा दुःख, इतना बड़ा निराश्रय यद्य आप अपनी प्रथाके विरपर लय देगी—यह विस्मय करना क्या लय है? मैं तो किसी तरह विस्मय नहीं कर सका।

विष्णु०—आपने अनेक बातें कही हैं। हमारे पास इतना फलनू समय नहीं है कि हम आपसे साक्षात्-निराश्रयकी कहल करें। या वह झूठेमें बात। आरके माया एक बन्धो, एक ली कुलुत बनसहर परमें बैठकर पूजा कर लकते हैं उनमें हमें कोई आश्रय नहीं है। या बहुत-से दोस्त लाने और पञ्च-पकिवास दिन-रात आनेके लय पीठकर इहें असुरल अपरा परेष्ठान करनेमें ही हमें आश्रय है।

नरेन्द्र —विष्णु लो य लकते रहते नहीं। एक-दो बार अवश्य पकते हैं, ल लम्बी लम्बामें कुलुत-कुलुत दुलुत-गुलुत होना ही है। कुलुत अनुविषा ही ली। आर लोम मलारी बानी है। इन लोगोके आनन्दके अस्वाभावको आप नहीं लहेगी ल। कौन लहेगा?

विष्णु०—आपने लो कम निरालनेके लिय ल और बाल-बन्धोकी लम्बा दे ली, और लह मुनलमें ली अल्ली लम्बी। किन्तु मैं लूला हूँ कि लरि आपके लम्बाके बानोके लय लोहरलके लय पीछा लुक कर दिया लला, लो क्या लहे लह अल्लु लम्बा? लर, लह लरि लो लो, लललर ललल लिय लमल लल लम्ब लही है। ललने लो दुल्ल लिय है लरी लीगा।

नन्द०—आलर लल कौन है और लहे लना करनेल क्या अलललर है लह लल लाना लही है। लकिन आलर लह लो लोहरलमें अल्लु लल्लु लहे लल ल ल कुलु लललमें लही आल। मैं ललल हूँ, लह ललललली ल लोहर ललल ललल-ललल-लुलल लल लोय लो आर लल ललल, लल लने। लह लो ललल ललल ललललीके ललर अललललके लल और कुलु लही है।

विष्णु०—ललल लललमें लुल लललल ललल लल लल, लह मैं लहे देल हूँ। लरी लो अल्ल अल लललमें लुलल लल लूला कि लह लौन है और लहे लना करनेल क्या अलललर है।

नरेन्द्र—( विस्मयी वन्या करके विवशते )—मेरे मान्ना बड़े बदली नहीं है। उसका पूराका बायोमन साधारण ही है। तो भी आन्धी गरीब प्रशिक्षा दर्शनमें यही एक आनन्दोन्मत्त है। ही मन्त्रा है कि इसने आरक्षो कुछ अनुविद्या हो किन्तु उनका ल्पान्त क्क क्क क्या इतना भी न सह सकेगी ?

विष्णु०—( टविस्तर एक प्रचर दूता मारकर ) ना, नहीं सह सकेगी—एक ही सह नहीं सह सकेगी। कुछ मूर्ख ओग्रेक एन्डल्लको ब्रदाष्ट करनेक विर बोरे वन्देदारी नहीं कृता। इन्हें और कुछ करनेको न हो तो पाओ—बकर हम आन्देक समन कष्ट न करो।

विश्वना—( विस्मये ) आरके बाटू मुझे सखीधर तरह प्यार करत है, इतने उन्होंने इन सन्नेषी पूरा मना कर दी है। उच्चि में कहती हैं तीन बार दिन कुछ दुन्ध-दुन्ध इत्य ही या क्या हुआ—

विष्णु —ओ—बह क्क कुछ इत्या। आर बान्नी नहीं है, इतने—विश्वना—बान्नी क्यों नहीं। होने हा शुम्भ, तीन दिनका ही ल मान्ना है। और मेरी अनुविद्याही बात आन साधत है, तो अमर कलकला होता या आर करा कर म्ते, ब्याहए तो। वही तो अमर और आदों पर कानोंके एत तों दान्न रहता, तो भी उस पुम्मार म्हना पड़ता। ( नरन्धन ) आर अन्ने मान्ना कह दीदिए, बह इर काज विर तरह पूरा करत हैं टनी तरह अदकी भी करे, मुज टनिक भी आन्ति नहीं है। कष्टा ले क्क, नन्धकार।

नरन्ध —कन्धकार—नन्धकार, नन्धकार।

( दानोओ नन्धकार करके प्रगपन )

विश्वना—हमारी सन्धीत तो क्क ही नहीं होत एह। तो क्या लान्दुका क सेनेकी ही क्क के बाटूही गन है।

विष्णु०—हो।

विश्वना—ऐकिन इनने किनी तरहका कुछ गोकन्ध तो नहीं है।

विष्णु —ना।

विश्वना—आर क्या बह म्म क्क इकर आरेंग।

विष्णु०—बह नहीं कृता।



विजया—आप लपट हो गये क्या ?

विजयल०—सद्य न होने पर भी, पिताके अपमानत पुत्रके मनमें शोभ होना शाब्द असंभव नहीं है ।

विजया—किन्तु इसमें उनका अपमान हुआ, वह गम्भ्य लपट आपके मनमें कैसे पैदा हुआ ? उन्होंने स्नेहवश होकर लपटा किया कि मुझे क्या होगा । स्थिति मुझ पर नहीं होगी, वही तो मैंने उन भले ब्राह्मणको बताया था । इसमें मान-अपमानकी तो कुछ बात नहीं है विजयल बाबू ।

विजयल०—बह तो बात ही नहीं है । अच्छी बात है आप भारी रटवटकी जिम्मेदारी लेना चाहती हैं तो धीरे-धीरे । स्थिति अब मुझे भी बाबूको मारवाना पड़ेगा । नहीं तो मेरे पुत्र-कर्मभयमें भ्रष्ट होगी ।

विजया—मैंने बह सोचा भी नहीं था कि इन साधारण घण्टों आप इतने रूपमें छेकर इतना मरुता देंगे । अच्छी बात है, मरी लपटनेकी भूमि अगर कोई अन्धाव ही हो गया हो, तो मैं अपराध स्वीकार करती हूँ । आइया ऐसा फिर न होगा ।

विजयल०—तो फिर पूरा गौंगु पीओ वह तृप्ति कर दक्षिण कि गन्धिवहारी बाबूने जो हुस्म दिया है उस बात ठग्य नहीं सकती ।

विजया—वह क्या बहुत अधिक अन्धाव न होता ? अच्छे में आप ही बिड़्डी स्मिरर आपसे पिताजीकी अनुमति माँग लेती हूँ ।

विजयल०—अब अनुमति लना—न लना दोनों बराबर हैं । आप अगर बाबूछ नार मौखिक उपालाना चाहें क्या सम्मता चाहती हैं तो मुझे भी अपने अन्धता अधिक कसकर साधना करना होगा ।

विजया—( अपने ऊपर संभव करके ) वह अधिक कष्ट क्या है, बरा मुझे ?

विजयल०—बही कि आपके बम्पेदारी-घालनके बीच वह अब हाथ न डाले ।

विजया—आप क्या वह समझा है कि वह आपके मना करनेछा मुनेंग ?

विजयल०—कमसे कम बही पता मुझ करनी होगी ।

विजया—( शर्मिल मीन रहकर ) अच्छी बात है । आपने थोड़ी नफे पर भेजना किन्तु दूसरीक समय-समयमें मैं बाधा नहीं डाल सकूँगी ।

विजयल०—आपके पिता भिन्न-भिन्न यह कथनका नादन न बन्द ।

विजया—( कुछ रुले स्वरमें ) अपने पिताके चारेमें मैं आपकी अपेक्षा बहुत अधिक और अच्छी तरह जानती हूँ निश्चय बाबू। लेकिन इस बातको छुड़ करस करना बेकार है—मेरे ज्ञानका उमर हुआ, मैं जाती हूँ। ( जानेके लिए दठ जाती होती है। )

विष्णु०—औरतोही जाति ऐसी ही नमकहराम होती है।

[ विजयाने जानेके लिए वर बढ़ाया ही था कि बिकलीश्री तड़पके वेगसे घूमकर जाती हो गई। एकमर विष्णुको प्रति दृष्टिपात करके चुपचाप बहसि पक सी। हली छमप बुद्ध रासबिहारी पीरे पीरे प्रवेश करते हैं और उन्हें देखते ही पुन उल्लस पड़ता है— ]

विष्णु० —बाबू, तुमसे मुना अमी बो कुछ हुआ ? पूर्ण यांगुली अकली भी दोस्त-दाश पण्य-भडिवाल बगकर दुर्वापूबा करेगा, उसे मना नहीं किया जा सक्या। अमी उमका कोई मानका प्रतिपाद करने आया था। निजयाने उसे हुस्म दे दिया है कि पूरा हो।

रस० —तो इससे छम इसने आग-क्यूव क्यों हो उठे ?

विष्णु०—आग-क्यूव न होऊँ। बिजया तुम्हारे हुस्मके लिम्पक हुस्म है, और मेरे राकने पर भी।

रस०—तो क्या तुमने इसी बातपर उससे सिगाड़ कर लिया ?

विष्णु०—लेकिन उपाय ही क्या था ? आत्मसम्मान बनाए रखनेके लिए—

रस —देखो मेरा, अपना वह आत्मसम्मान-बेष कुछ दिनके लिए पोका काम कर लो, नहीं तो अब मुझसे सैमाख्य न जायगा। ब्याह हो जाने वा, फिर भी भरकर आत्मसम्मानको बढ़ा देना मैं मना नहीं करूँगा।

( विजयाप्र प्रवेश )

रस०—अब बिजया बंदी आ गई।

विजया—आपको आते देखकर मैं जोर आरे कपल बाबू। मुनकर घावर आप नागब होने, लेकिन केकल तीन ही दिनकी तो कल है, होने कीबिए हुलक-गुलक—मैं बनायात उसे सह सहेगी गांगुली महाशयकी पूराको रोडनेकी कस्यत नहीं है। मैंने अशुम्नि दे दी है।

रस०—बही बात तो विष्णु मुझे समझ रहा था। बूढ़ा अरमी ठहरा,

हुनकर एकएक खबल हो उठा था कि मक्खियोंमें फिर येना होनेसे तो काम नहीं चलया। तब आत्मतन्त्र्यान्त्री राजाके लिए मुझे अपनेको तुम्हारी बायदाद और कमीशरीसे भक्षण करना ही होया। किन्तु विहासकी छतोंसे मरे मनरी मौज जाती रही बेटी। तमस सिवा, वे अज्ञानी हैं, करें पूजा। बलि पायेके लिए कुत्त लहना ही महत्त्व है। इस विस्तारकी प्रकृति भी अद्भुत है। इनके स्वन और कामकी दृढ़ता देखकर कोई बह नहीं समझ पाता कि इतना दुःख इतना कोमल है। और, इसे जाने दो। वह बयारीयरा मन्त्रमन्त्र तमस सम्राट (जाय सम्राट) को ही जान कर दिया है, तो अब देर न करके, इन छुट्टीके दिनोंमें ॥ उठकी तब तैयारी पूरी कर दावनी हमी। तुम्हारी क्या राय है ?

विजया—आर को भक्षण समझेंगे, वही होया। दण्ड अदा करनेकी उनकी मियाद तो लगन हो गई है।

राज — बहुत दिन हुए। अब आठ साप्ताहकी थी, पर अब वह नवीं तमस चेत रहा है।

विजया—सुनती हूँ, उनके पुत्र वही हैं। उन्हें बुलकर और भी थोड़ी मुरत देना क्या ठीक न होगा ? शायद कोई उपाय कर लेंगे।

राज — (निर हिम्मे हुए) नहीं कर लेंगा—नहीं कर लेंगे—कर गलत हो—

विजया — अगर वह दण्डोंका कुछ हस्तजाम कर भी ले, तो हम क्यों रेंगे ? दण्ड सेत समय उस घातकीये हीरा न था कि क्या घर्त की है ? इस कैम अदा कैसे ?

[ विजयाने विष्णुविहारीकी ओर एक बार दृष्टिगत करके गन्धर्विहारीके मुखकी ओर देखन हुए घाम्त, किन्तु दृढ़ कण्ठसे कहा— ]

विजया—वह बाबूजीके मित्र थे। उनके लक्ष्मणमें बगव्यानक साथ था जानेकी आज्ञा मुझे दे गय हैं।

विजय — (एकदम) हजार आठ सेमेन भी वह एक —

राज — आह, पुर रहा न विजय। पारके प्रति तुम्हारी आत्मरिक्त पुनः पारक ऊपर न था पड़े, हमला वपात गय। हमी अगर तो आत्मरिक्तमन्त्रा मन्त्र अर्पक प्रचेदन दे भेता।

विवाह — नहीं बाबू, ये सब फिक्कू सेण्टिमेंट (Sentiment—मनोभाव) मैं फिजी तरह बर्दाश्त नहीं कर सकता, सो इसके लिए चाहे कोई क्रोध करे या कुछ भी करे। मैं सब बात कहनेमें नहीं डरता, सब क्रम करनेसे पीछे नहीं हटता।

राम—सो तो ठीक है। तुमको ही माला मैं क्या बोलूँ। अपने बचपन में राय स्वप्नचतुर्द्वे होने पर भी अभी तक नहीं गया। अन्धाय अंधम देखते ही बसे रहमें आता क्या वाली है। समझीं न बंटी बिक्का, मैं और तुम्हारे पिता, दोनों इसी कारण सारे गाँवके बिरुद्ध सब क्रम ग्रहण करनेमें नहीं हिचके,—नहीं डरे। फादीस्वर, तुम्हीं छत्त हो। (बह बहकर दोनों हाथ जोड़कर माथसे लगाकर बगदीस्वरके प्रणाम किया।) किन्तु देखो बेटी, मैं कुछ भी होऊँ, फिर भी सुदीप्त व्यक्ति हूँ। तुम दोनोंके मतभेदके बीच मरना खोजना उचित नहीं है। कारण, जिससे तुम लोगोका मरना होगा, वह जान नहीं तो कब तुम्हीं खेप ठीक कर सकोगे। इस चतुर्द्वेक मतभेदकी आवश्यकता त होगी। लेकिन अगर बात कहनी पड़े तो कहना ही होगा कि इस मामलेमें तुम ही मूल कर रही हो। बगदीस्वरी बगनेके काममें मुझे भी बिरुद्धके आगे हार माननी होती है, वह मैं बहुत बड़ देखा कुछ हूँ। अच्छा, तुम्हीं बगओ मरना, जिसके प्यारा गरब है। हम लोगोको या बगदीस्वके सहकेसे। कर्म बुझनेका बूता ही अगर होता तो एक बार आप आकर क्या वह कोशिश करके न देखता। उसे तो मालूम है कि तुम वहाँ आइ हो। अब हम ही अगर उपवासक होकर उमे कुछ भर्त्से तो वह निश्चय ही बहुत लंबी मुरत बाईगा। उसका फल देख्य बही होगा कि देना भी न चुकवा होगा और तुम लोगोका वहाँ ब्रह्मत्यागकी स्थापनाका संकल्प भी तब तक लिए समाप्त हो जायगा। अच्छी तरह खेपकर देखो तो बेटी, यही क्या ठीक नहीं है। फिर उससे छिराकर तो कुछ हो नहीं सकेगा। तब वह खुद आकर कुछ समझ मींगे, तो न हो उतगर बिचार करके देखा जायगा। कबो बेटी, तुम क्या कहती हो।

विवाह—(अग्रजम मुन्से) अच्छा। फाफ बाबू, मुझे बड़ी बेर हो गई। अब क्या मैं का सकती हूँ।

राम—बाबा बंदी बाबो, मैं भी जाता हूँ।

घुनकर एकएक खंखस हो उठा था कि यमिष्यमें फिर ऐसा होनेसे तो काम नहीं चलेगा। तब आत्मसम्मानकी रक्षाके लिए मुझे अपनेको तुम्हारी बगलदार और बर्मादारीसे बचावा करना ही होगा। किन्तु विजयकी बातें मेरे मनमें जोर बाँधी रही बेदी। समझ सिखा, ये अज्ञानी हैं, करें पूछा। बलि परायेके लिए दुःख सहना ही महत्त्व है। इस विजयकी प्रकृति भी अद्भुत है। इसके बचन और कर्मकी दृढ़ता देखकर कोई यह नहीं समझ पाता कि इसका इतना इतना कोमल है। सैर, इसे जाने दो। वह बगलीघन मकान का तुम्हें सम्राट (ब्रह्म सम्राट) को ही ज्ञान कर दिया है, तो अब डेर न करके, इन कुटीके दिनोंमें ही उसकी सब तैयारी पूरी करवा ली होगी। तुम्हारी क्या राय है ?

विजया—आप का क्या समझ, वही होगा। बपू बड़ा करनेकी उन्की मियाद तो कतम हो गई है ?

राज — बहुत दिन हुए। छुट्टी काट ली है, पर अब यह नहीं लाल बोल रहा है।

विजया—कुनटी हैं, उनके पुत्र नहीं हैं। उन्हें कुलधर और भी पोसी मुरत देना क्या ठीक न होगा ? साथ ही कोई उपवास कर लेंगे।

राज—(सिर हिलते हुए) नहीं कर सकेगा—नहीं कर सकेगा—कर लाल तो—

विजय — अगर वह उपवास कुछ इच्छाम कर भी ले, तो हम क्यों होंगे ? बपू कैसे समझ उस लालकी होय न था कि क्या छुट्टी की है ? इसे कैसे बड़ा करेंगा ?

[ विजयने विजयविहारीकी ओर एक बार दृष्टिपात करके लालविहारीके मुँहकी ओर देखते हुए शायद, किन्तु दृढ़ कण्ठसे कहा— ]

विजया—वह बाबूजीके मित्र थे। उनके सम्बन्धमें ये सम्मानके व्यवहार करनेकी आज्ञा मुझे दे गये हैं।

विजय — (गरजकर) हजार भाषा देनेपर भी वह एक —

राज — आहा, चुप रहो न विजय ! आपके प्रति तुम्हारी आन्तरिक प्रीति पापीके ऊपर न जा पड़े, इसका सवाल रखे। इसी वजह से आत्मसम्मान लाल अधिक प्रबोधन है ऐसा।

विस्मय — नहीं बाबू, ये सब फिजूल सेण्टिमेंट ( Sentiment=मनोभ्रम ) मैं किसी तरह बर्दाश्त नहीं कर सकता, तो इसके लिए चाहे कोई क्रोध करे या कुछ भी करे। मैं सब बात कहनेमें नहीं डरता, सत्य काम करनेसे पीछे नहीं हटता।

राज— तो तो ठीक है। तुम्हको ही मालूम मैं क्या बोलूँ। अपने बराबर मेरा यह स्वभाव बूढ़े होने पर भी अभी तक नहीं गया। अन्धाय अशर्म देखते ही कैसे बेहमें आता लग जाती है। समझी न बेटी बिजया, मैं और तुम्हारे पिता, दोनों इसी कारण लारे पोंवते विरुद्ध क्षय वम ग्रहण करनेमें नहीं हिचके,—नहीं डरे। बगदीस्तर, तुम्हीं साथ हो। ( वह कहकर दोनों हाथ जोड़कर माथसे सम्पर्क बगदीस्तरको प्रणाम किया। ) किन्तु देखो बेटी, मैं कुछ भी होऊँ, फिर भी तृतीय व्यक्ति हूँ। तुम दोनोंके मतभेदके बीच भग्न होना उचित नहीं है। कारण, किमंत तुम श्रेयोभा मग्न होगी, वह भाव नहीं तो कल तुम्हीं श्रेय ठीक कर सकोगे। इस बूढ़ेके मतभ्रमकी भावस्वकता न होगी। लेकिन अगर बात कहनी पड़े तो कहना ही होगा कि इस मामलेमें तुम ही भूल कर रही हो। बर्मीदारी बचानेके काममें मुझे भी बिलम्बके आगे हार माननी होती है, यह मैं बहुत दफ देख चुका हूँ। अन्ध, तुम्हीं बराबरी मना, किसको जवाबदा गार है? हम श्रेयोभा का बगदीशके कहकेको? कर्ष चुकानेका बूता ही अगर होता तो एक बार आप आकर क्या वह कोशिश करके न देखना? उक्त तो मायूम है कि तुम नहीं आइ हो। अब हम ही अगत उपपात्रक होकर उक्त बुद्ध मेरे तो वह निम्न ही बहुत कभी मुरत जाहेगा। उक्तका पत्र कल्प नहीं होगा कि देना भी न चुकता होगा और तुम श्रेयोभा नहीं ब्रह्ममावकी स्वाप्नाका संकल्प भी उक्तक लिए समस्त हो जायगा। अन्धों तरह साबकर देखो तो बेटी, नहीं क्या ठीक नहीं है? फिर उक्तसे ठिगकर तो कुछ हो नहीं सग्न। तब यह लुद आकर कुछ समय मींगे, तो न हो उगार विचार करके देना जायगा। क्यों बेटी, तुम क्या करती हो?

बिजया—( अप्रसन्न मुखे ) अन्ध। क्या बाबू, मुझे बड़ी बेर हो गई। अब क्या मैं ना सकती हूँ।

राज— बाबू बड़ी बाबू, मैं भी जाता हूँ।

( विवाह प्रस्थान । )

विजय० — ( कोचके साथ ) यह अगर इस वर्षकी मुहल गौंगे, तो मी ठग-पर बिपार करना होगा क्या ?

राव — ( कुछ, दधी हुई आवाजसे ) करना न होगा तो क्या सब खो देना होगा ? ब्राह्म मन्दिरकी प्रतिष्ठा ! देल विजय, इस लक्ष्मीकी बरकतका अधिक नहीं है, लेकिन अपनी तरह जानती है कि कही अपने आपकी सारी सम्पत्तिकी स्वामिनी है और कोई नहीं । मन्दिरकी स्थापना न होनेपर भी कोई हानि न होगी, लेकिन मेरी बात भूलनेसे काम नहीं चलेगा । ( प्रधान )

( काशीप्रसाद प्रवेश )

काशीप्रद—माजीने पूछा है कि आपके स्थिर क्या बातें मेव हैं ?

विजय० — ना ।

काशीप्रद—वा घरका—

विजय — ना, कोई कसरत नहीं है ।

काशीप्रद—फिर वा कुछ मिठाई ?

विजय — कह तो दिया, कुछ न चाहिए । उनसे कह देना, हम घर वा रहे हैं । ( प्रधान )

काशी० — कहना न होगा, वे बातें ही जान चायेंगी । ( प्रधान )

## द्वितीय दृश्य

स्थान—गौबन्ध रास्ता

( पूर्ण गंधुषी और दो-तीन ग्रामवासियोंका प्रवेश )

१ ब्राह्मन — हौं पूर्ण पाया, तुना है, पूरा करनेका कुलम मिल गया ।

पूरा—हौं मैवा, बगलभाने क्या-हथिसे देल किया । चमीदारके घरसे कुलम मिल गया है कि पूरा करनेके बारेमें उन्हें कोई आपत्ति नहीं है ।

१ ब्राह्मन — बचम तुना कि पूरा रोक ही गई है, सबने बुद्धिमानकी सीमा न थी बाबा । लयी सोन रहे थे कि तुम्हारे यहाँकी हलने दिनोंकी पुरानी पूरा पावद अपनी बन्द हो बायमी । — कुलम दिया किन्ने पाया !

पूर्व — कमीदागरी कन्याने स्वयं । वह सब मामला उन्हें कुछ भी मालूम न था । हमारे नरेन्द्रने बाहर कहा तो सुनकर आपसर्बके साथ उन्होंने कहा — वह कैसी बात है ! आप अपने मामासे बाहर कह दीजिए कि वह सदाकी तरह विधिपूर्वक मेराफरी पूजा करें । मुझे तनिक भी आशय नहीं है । — भरे वह सब उन्हीं दोनों कदवात बाप-बेटोंकी कारवाही थी । मुझसे वे बसत हैं ।

१ बा — तो वह क्यों कि सदाकी बहुत मली है !

२ बा — हाँ, मली है । मलमल बिषयी । मैं पूछता हूँ, तुमको कुछ पता है !

पूर्व — होखी मेल्ल । लेकिन मैसा, सब भी एन-बंदकी सदाकी है — हरि रामकी पोती । सुना है, इस विषयस छोकरेने पूजा बन्द करनेकी बड़ी चेष्टा की थी, किन्तु उन्होंने उसकी कोई बात नहीं सुनी । सब कह दिया कि हजार अनुविधा होनेपर भी मैं पराये धर्म-कर्ममें हस्तक्षेप नहीं कर सकूँगी । — यह क्या तरह बात है !

१ बा — कहते क्या हो पान्ता ! पहले जिस दिन ब्रह्म-मोबा पहनकर छिट्ठनपर बाढ़कर गौवमें आई, तो बीग बेसकर समयसे बचमरे हो गये । अफवाह फैल गई कि इसीके साथ विष्णु बाबूज ब्याह होनेवाला है, इसीस गौवमें आई है । सभीने मनमें सोचा कि अकेले रामसे ही बान नहीं बन्ती, ठहर तापमें यह सुप्रीत भी । अब कोई नहीं बवेगा, यह इन्द्रियस ( तलबिहारी ) साथ सभीको पकड़ पकड़कर घोंसीपर चढ़ा देगा । किन्तु तुम्हारा यह मामला बेसकर बचनेका मरोला होता है क्यों न बाबा !

पूर्व — हाँ मैसा, होता है । मैं कहता हूँ, आगे चलकर तुम लोग बेस लेना — इस सदाकीके मनमें दवा-बर्म है । यह किसीको तरहमें दुःख नहीं देगी ।

२ बा — किन्तु — किन्तु — सब किन्तु बात है । भरे वह बिषयी है । शास्त्रने जिसे मेल्ल कहा है, उसके दमा । उसके धर्म ! कहेंति माया !

१ बा — तो तो ठीक है । शास्त्रका बाव सब तरहमें मिला नहीं होता । किन्तु पान्ताकी पूजा तो मा कृष्णीने अपने चोरसे पसा दी । बाप-बेटा दोनों हजार चेष्टा करके भी उसे बन्द नहीं कर पाये ।

२ बा — ( सिर हिलकर ) लेकिन तुम लोग बादकी बेसना, यह भूता मोबा पहननेवाली मलमल सदाकी सारे गौवको बचकर लाक करके छोड़ेगी । मैं यह एतद देन पा रहा हूँ ।



पूर्व—क्या जाने मेया, हमारे नरेन्द्रने तो साहस देकर कहा है कि कोई डर नहीं है वह किसीको क्या नहीं होगी। महामाया ने माम्में जो खिला है वह तो होना ही।—सैर, तुम सब खेप यह पूछाका काम देखो मेया। मैं अभी बाहरा हूँ कि तुम सब मिच्छकर मरा यह काम क्या हो।

२ मा०—देखो पापा हम सभी मिच्छकर तुम्हारे इस काममें ख्य बाँधेगे—तुम्हें किसी और देखना न होगा।

१ मा०—माताजी पूछा कुछ-कुछसे निपट जाव। इसके बाद जाना, तुम्हारा भी हम खेयोभी योभी-सी खायता करना होगी। तुम्हें और नरेन्द्रका साथ देखन, मौका देखन, एक दिन हम खेप एक मौका पर पहुँच जायेंगे बर्तारके वहाँ। कहेंगे कि मा, काम-देखता सिद्धेश्वरीका पोतर भाप छोड़ दीजिए। बड़े चाहेने डरा-धमका कर बर्बरसी उठपर कम्मा कर लिया है। लेकिन साह-दरसाह जो हमसे निच्छनेवासी मलखियों को रूपवेसी चिट्ठी है उन रूपोंमेंसे कितने रूप सरकारी तरहसे कमा होते हैं, इसका क्या पता लगाए। मुझे इसकी खबर है पापा, इन छ. लाख मस्तोंमें एक पैसा भी नहीं बचा किना गया। तब देखें, बूढ़ा इसका क्या करता है।

२ मा०—तब बूढ़ा कह देगा कि वह बात छूट है। मलखी केवी नहीं जाती।

१ मा०—यह कहे तो बरा। गरीबोंके लोड़ो मधुएके मैं जानता हूँ। उसके पुरोहितसे मेरी बड़ी मित्रता है। उसकी गवाहीसे मैं प्रभावित कर दूँगा कि हमारा करना छूट नहीं है। वह सोनो मधुमा ही बूढ़ेके हाथमें जो रूप देकर हरगल कामसे मलखियों सेकता है।

पूर्व—मगर मुझे इस मामलमें न पसीये मेया। परके पास ही पर है। मैं गरीब आदमी ठहरा—मुफ्तमें मारा जाऊँगा।

१ मा०—किन्तु तुम्हारा मानवा नरेन्द्र कमी नहीं करेगा, वह मैं कह सकता हूँ। उसे भेजेंगा, साथमें हम खेप रहेंगे। तुम क्या यह सोचते हो कि दिक्काके इतने लोगोंके हलमें काम वह कर देता है, और हम लोगोंने इतना उपकार न करेगा। निश्चय ही करेगा।

२ मा०—तो इसके साथ ही मेरे बड़े बम्पाईके बबूलेवाले मेदानकी खबर भी उस मुना देना मार—कम बमीन नहीं है, पड़े तीन बीजे है। बम्पाई रहा नहीं;

देखने-सुननेवाला कोई है नहीं। सबकी मेरे पास जखी ब्याह। तीन-चार सालका लगान बाकी हो गया। इसके बाद किसीको लखर नहीं हुई कि कब वह मैदान मुर्क हो गया और कब नीलामपर चढ़ गया। अब माखूम हुआ उस बाकर मैंने किन्नी बुधामर की, हाथ-पैर बोजे, मगर इतना बड़ा बरबाद यह बूढ़ा है कि किसी तरह उसे नहीं छोड़ा।

पूर्ण—बूढ़े के धरके उत्तर ओर वह जो नया कलमी आगला बना लगाया गया है, वही न ?

२ आ०—हाँ पान्ना, वही अब बूढ़े के चौककी आगली बसिता है।

पूर्ण—लेकिन वह तो नीलाममें लगी ही हुई बगीचा है। इसे तो कोई छोड़ नहीं सकेगा मेमा।

२ आ०—न छोड़ सके। इसकी भाषा भी मैं नहीं करता। लेकिन बूढ़ा लाल हो दिन बहर समुत होगा कि नहीं। इसीसे कहण हैं कि समन रहते समुतके गुन-दोष बोजे बहुत मा-सखी सुन रहा।

१ आ०—बगलीस मुसलीम मकान भी तो सुना है, बूढ़ा हथिया सेना चाहता है।

पूर्ण—कनफुलीमें वही तो सुन रहा हूँ मेमा।

२ आ०—ऐसा कोई हो जो इस बरबाद बूढ़ेकी दाढ़ीको एक सक्केमें उन्नाड़ से, तो मरे हृदयकी बखन मिटे।

पूर्ण—रहने दो मेमा, रहने दो। उसके बीच सके होकर ये सब बातें करनेकी मसरत नहीं। कोई कहीं मुन लंगा और बाकर कह देगा तो मेरी जान नहीं बचेगी।

२ आ०—नहीं पान्ना, सुनेगा और बोलें ! यहाँ तो हमी तीन आदमी हैं। सेर जाने दो ये सब बातें, देर हुई। पसो, अब घर बख बाव।

पूर्ण—हाँ पसो मेमा। सुबीर, लम्बाके बाद मेरे यहाँ बर आना। अब अधिक समय नहीं है—शुम ल्येगोसि कुछ लम्बाह करनी होगी।

१ आ०—लम्बाके बाद ही आऊंगा पान्ना। जसो, अब घर पख बाव।

( सबका प्रस्थान )

## मृतीयु इत्य

स्थान—सरस्वती नदीके किनारे

[ घरके आँगनके अन्तर्गत दीर्घ संकीर्ण सरस्वती नदी है। उसके दूसरे किनारेपर कला-सोडा मैदान है। इधरके किनारेपर कलाओं और हाथियोंसे भरा हुआ बना बंगला है। बंगलाके आँगने दिपका गौव है। नदीके ऊपर छोटी-सा बौलोका बना पुल है, जो दोनों किनारोंकी बीड़ता है। नदीउत्तरे एक फाइन्सी बंगलाके मीतर होकर दिपका गौव तक बहती गई है। इन सब चीजोंके आँगने नरेन्द्रके बड़े फड़े मकानका कुछ हिस्सा भर दिखाई देता है। नदीके किनारे बैठा हुआ नरेन्द्र छीपसे मछली पकड़नेमें लगा है। बिबबा और कन्हारि सिर्फ प्रवेश। ]

बिबबा—इसी नदीके किनारे ही दिपका है न कन्हारिखिंह ?

कन्हारि—हाँ मछली।

बिबबा—इसी गौवमें कगदीया बाबूका घर है ?

कन्हारि—हाँ माजी, बहुत बड़ी इमारत है।

बिबबा—इसी पुलपर होकर शासक उस गौवमें जाना होता है ?

[ बिबबा पुलके फल जाती है। नरेन्द्रकी नजर उसपर पड़ जाती है। ]

नरेन्द्र—आइए आइए, नमस्कार। तीसरे पहर बीका बूमने फिन्नेके छिर वह नदीके किनारे कुछ लुटी कहा नहीं है। लेकिन आज-कालके दिनोंमें मछेरियाका घर भी कम नहीं है। इस बारेमें शासक किसीने आपसे सम्बन्ध नहीं किया ?

बिबबा—नहीं। लेकिन मछेरिया तो आजभी पहचानकर आक्रमण नहीं करता। मैं तो बसकि बिना जाने यहाँ आई हूँ, लेकिन आप तो जान-बूझकर पानीके किनारे बैठे हैं। देखें, कौन सी मछली आपसे पकड़ी है ?

नरेन्द्र—(पुलके दूसरे छोरसे) रूँदी और वह भी दो घण्टेमें सिर्फ दो मछली हैं। मरुती नहीं पोताह। लेकिन समय तो किसी तरह आटना है।

बिबबा—लेकिन अपने मामाकी पूजाके अग्रपर सहायता न करके बस जान बपाते फिर रहे हैं आप ? इन दो रूँदी मछलियोंसे तो उनकी परमात्मा न होगी।

नरेन्द्र—(हँसकर) ना। लेकिन एक तो मैं मामाके घर नहीं आया, दूसरे उनकी उहासता करनेके लिए और बहुत-से खेग हैं—मेरी बसलत नहीं है।

विद्या—मामाके घर नहीं आये ? तो फिर यहाँ क्यों रहते हैं ?

नरेन्द्र—घर मेरा दिमाका गँवामें है। इसी बीसके पुत्रसे यहाँ घाना होता है।

विद्या—दिमाकामें ? तो आप नरेन्द्र बाबूको जानसे होंगे ! क्या सकते हैं कि वह कैसे आदमी हैं ?

नरेन्द्र—ओह—नरेन्द्र ! उठकर घर तो आपने अपना सब पुत्रानेके लिए लौटा दिया है न ? अब उसके बारेमें खीच-तकर सेनेसे क्या काम ! जिस उद्देश्यसे आपने यह घर दिया है, सो भी इस तरहके सब खेगोंने सुन लिया है।

विद्या—आपका इस तरह की बात कैसे गई है कि मरदान एकदम से लिया गया है ?

नरेन्द्र—कैसी ही चाहिए। बगरीब बाबूका सर्वस्व आपके बाबूजीके पास मिवाही किसी क्वाकेपर बँधक था। उठने रूप, पुत्राना उनके छड़केके बूतेकी वस्तु नहीं है। और फिर मिवाह भी खीच गई है। वह वस्तु सब खेग जानते हैं।

विद्या—आप स्वयं अब इसी गँवामें आदमी हैं, तब सब कब आपके होनी ही चाहिए।—अच्छा, सुना है, नरेन्द्र बाबू बिजयपुरसे नामवरके साथ डाकघरी पत्र करके आये हैं। किसी अच्छी बगह प्रेसिडेंट चुन करके, और कुछ समय मौफकर, क्या वह आपका कम नहीं कुछ सकते ?

नरेन्द्र—वह संभव नहीं। सुना है, प्रेसिडेंट करनेका उच्छा विचार ही नहीं है।

विद्या—तो फिर क्या करनेका विचार है ? इतना लच करके विस्मय गये और यह उठाकर डाकघरी सीसी। उच्छा और फल ही मध्य क्या हो सकता है ? एकदम आपाथ्य है।

नरेन्द्र—अपराध ? (हँसकर) ठीक समझा आपने। घान पकटा है, यही उच्छा बहुत रोग है। मगर सुनाई पड़ रहा है कि वह स्वयं निश्चिन्ता करनेकी अपेक्षा ऐसा कुछ आभिचार कर जाना चाहता है, किन्तु बहुत खेगोंका उच्छा

होया । मुझे लकर मिली है कि इसके लिए वह मेहनत भी कर रहा है ।

बिजया—अगर वह सच है तो बेचक बहुत बड़ी बात है । किन्तु घर-घर वाले जाने पर वह यह सब कैसे करेगा ? तब तो उन्हें कोई रोबगार करना ही पड़िए । अच्छा, आप तो यह निश्चय ही बता सकते हैं कि बिजायत-बाग्य करनेके कारण पड़ोसियों को उनको समाजके बाहर कर दिया है कि नहीं ।

नरेन्द्र—ले ले निश्चय ही लोगोंमें उत्पन्न बहिष्कार कर रहा है । मेरे मामा पूर्ण बाबू उसके भी एक तरहसे आत्मीय हैं, तो भी पूजाके दिनोंमें वह उसे अपने बहो दुस्मनेका लाहल नहीं कर सके । किन्तु इससे उत्पन्न कोई हानि नहीं हुई । वह अपने काम-काजमें डूबा रहता है । उससे समय बचता है तो बिजय बनता है और घरसे बहुत कम बाहर निकलता है ।

कन्हारू—माथी, कन्वा होनेको है घर औरतें रात हो जायगी ।

नरेन्द्र—हाँ, बातों ही बातोंमें कन्वा हो आई ।

बिजया—तो यह कहिए कि घर खड़ा होनेपर किसी आत्मीय या नज्दिकारके घरमें भी उनके आश्रय पानकी आशा नहीं है ?

नरेन्द्र—किन्तु ही नहीं ।

बिजया—( खबर सुन रहकर ) वह तो किसीके पास जाना ही नहीं चाहते—नहीं तो इसी महीनेके अन्तमें तो उन्हें मकान छोड़ देनेका नोटिस दिया गया है । और कोई होता तो कमसे कम मुझसे ही एक बार मिलनेकी चेष्टा करता ।

नरेन्द्र—हो सकता है कि उसे चकराव न हो, अपना लेबरा हो कि इससे काम क्या है ? आप तो सम्भव ही उसे उसके घरमें रहने नहीं दे सकती ।

बिजया—इमेद्याके लिए न लगी, और कुछ दिन तो रहने दिया था सकता है । लेकिन जान पड़ता है, आपसे उनकी विरोध जान-बूझकर है । क्यों, क्या है न ?

नरेन्द्र—लेकिन देखिए, अगर घाम होती या रही है ।

बिजया—आवे ।

नरेन्द्र—आवे ! मजबूत वह कि पौषके प्रति आपका सम्मान आकर्षण है ।

बिजया—इसके माने ?

नरेन्द्र—माने वही कि लम्बा-बेझम यहाँ लड़े रहकर गौबके मछेरिया तकमो अपनाये किता आरफ़ मन नहीं मानता ।

बिबबा—( हँसकर ) ओह, वह बात है । लेकिन यों तो आपका भी है । जान पड़ता है, मछेरियाको आप अपना चुके हैं । लेकिन मुँह देखकर तो ऐसा नहीं जान पड़ता ।

नरेन्द्र—डान्दरोको बरा छत्र करके लेना होता है ।

बिबबा—आप डाक्टर हैं क्या ।

नरेन्द्र—हाँ डाक्टर बकर हूँ, लेकिन बहुत लौट डाक्टर हूँ ।

बिबबा—तो आप केवल पकोखे ही नहीं हैं—उनके व्यवसाय-वस्तु भी हैं । उनके सम्बन्धमें जो बातें मैं कह रही हूँ वे सब आप उनसे बात कर लेंगे—क्यों न ?

नरेन्द्र—( हँसकर ) क्या कहूँगा ? वही तो कहूँगा कि आपने कहा है कि वह तो एक अपदार्थ और अमाया आदमी है । आप कुछ चिन्ता न करें—वह तो बहुत पुरानी बात है, सभी लोग उसे ऐसा कहते हैं । नवे सिरेसे कहनेकी बक़्त नहीं है—वह कोई नई बात नहीं है । मगर हाँ, कहनेसे छानद किन्ती दिन आपसे मित्रनेके स्थिर बा सफ़टा है ।

बिबबा—मुझसे मित्रकर उन्हें क्या काम होगा ?—लेकिन उनके सम्बन्धमें तो मैंने ठीक ऐसी बात आपसे नहीं कही ।

नरेन्द्र—न कहनेपर भी, कहना चाहिए था ।

बिबबा—कहना चाहिए था । क्यों ?

नरेन्द्र—कर्म बुझानेमें जिसका रहमेका परतक, जिसका सर्वस्व तक, जिस जान, उसे सभी अभाग्य कहते हैं । हम लोग भी कहते हैं । सामने न कह सकनेपर भी पीठ-पीछे कहनेमें बाधा क्या है ?

बिबबा—( हँसकर ) आप तो उनके बड़े आपछे मित्र हैं ।

नरेन्द्र—( दर्पन हिसाकर ) हाँ, अमित्र भी कहा जा सकता है । वहाँ तक कि उसकी ओरत मैं खुद ही आपसे सिफ़ारिश करता मगर वह न जानता कि आप एक अगळे मजसबसे ही उसके घरको से रही हैं ।

बिबबा—अच्छा क्या आप अपने मित्रसे एक बार रासबिहारी काबूचे पत्र - बानेके स्थिर नहीं कह सकते ?

नरेन्द्र — लेकिन उनके पास क्यों ?

विजया — वही तो बाबूजीकी बायदाएँका प्रकट और बेसमझ करते हैं ।

नरेन्द्र — तो मैं जानता हूँ । लेकिन उनके पास जानेसे कोई क्षम नहीं ।  
छुट्टा हो गई । अच्छा अब धन्य हैं । नमस्कार ।

[ नरेन्द्र कुछ पार होकर बैसफ़के मीटर आदर हो गया । विजया उसी ओर  
छाकती रही । ]

कन्हारी — यह बाबू कौन हैं माँजी ?

विजया — ( चौंकर मनमें कहा ) — कौन हैं, तो तो नहीं जानती । वह  
मिनके यहाँ पूजा हो रही है, उसीके मानने हैं ।

( एतद्विहायिका प्रवेश )

एतद्विहायिका — तुम्हींको क्यों रहा था बेटी । माझम हुआ कि तुम नदीकी तरफ  
बरा टुकड़े आई हो । अच्छी बात है — उसे हमने नोटिस दिया है, और फिर  
हमें उसे खतरा करने छोड़ें, तो यह भ्रम हुआ कि और प्रवाही नहरमें कैसा  
बैसपा, वह तो बरा लोचकर बेसी ।

विजया — एक चिट्ठी लिखकर उनके पास सेव दीमिए न । मुझे निश्चय ही  
खान पड़ा है कि वह सिर्फ अपमानके करते ही यहाँ आनेका चाहत  
नहीं करते ।

एतद्विहायिका — ( झंझके स्वरमें ) देखता हूँ, महाप्रानी भावनी है । इसीसे  
अस्मान सिर पर लादकर हम झंझके ही उपवासक हीकर उसे चिट्ठी लिखनी  
होगी कि महारानी करके वह अभी पर न छोड़ें ।

विजया — ( कातर मानसे ) इसमें कोई दोष नहीं है काका बाबू ।  
अपमानित दवा करनेमें अच्छा कोई कारण नहीं है ।

एतद्विहायिका — ( बरा हँसकर ) बेटी, अपनी नीच तुम जान करोगी तो उसमें  
कि मैं क्यों बर्सेला ? मैंने तो केवल वही लिखना चाहा था कि लिखने  
को करना चाहा था, वह न सार्थके कारण था और न किसीकर कोपके  
कारण — केवल कर्षण समझन ही करना चाहा था । एक दिन मेरी बाबूदाद  
और तुम्हारे पिताजी बायदाद सब मिश्रकर तुम्हीं दोनों बर्सेलाके हाथमें आयेगी ।  
एक दिन मुझि बेमेके लिए वह नुस्खे तुम हँदे न फाँटोगी बेटी ।

( विधवाविहारीका प्रवेश )

[ विधवाविहारी विधवायी पोछाकमे है । हाथमे छेय-सा हंडबग है ।  
अस्वन्त अस्व माय है । ]

विधवा०—तुम लोग यहाँ हो !—बापू, अभी तक घर जानेका अवकाश नहीं  
मिल्य । कनकसेसे झोठे ही मुना कि तुम लोग नहींकि किनारे टहलने आये  
हो । मगर टहलना । इतना बड़ा काय-मार सिरपर लेकर कैसे आदमी आस-सुखमें  
समय गँवा सकता है, मैं यही सोचता हूँ । बापू, मैं एक तरहसे अभी काम  
प्राप्त समाप्त कर आया हूँ । किन लोगोंको बुझाना होगा, किनको उत दिनके  
कामका मगर सौंपना होगा, क्या क्या करना होगा—सब ।

राज —सब ? कहते क्या हो । इसी बीचमें वह सब कैसे कर काम तुमने ?

विधवा०—हाँ सब । मुझ क्या नराने जानेका होता था !—विधवा, तुम  
निधवा ही सोचती होयी कि मैं इतना दिन नाराज होकर नहीं आया । यद्यपि मैंने  
श्रीव नहीं किया लेकिन अयर करता भी तो वह कुछ अन्धारा न होगा ।

राज०—कन्हारसिंह, चलो तो भैया, क्या भाग कुछ बुर तक घूम आऊँ ।  
बहुत दिनेंति नदीक तरफ था ही नहीं सका हूँ ।

कन्हार०—बखिर हुआ । ( उधविहारी और कन्हारसिंहका प्रस्थान । )

विधवा०—तुम मनेसे चुप रह सकती हो; किन्तु मुझसे नहीं रहा जाता ।  
मुझे अपनी विधवायीका बख है । एक बिराट् कायका मार सिरपर लेकर मैं किसी  
तरह चुप नहीं रह सकता । हमारे मन्दिरकी प्रतियोग इसी बड़े दिनकी घुड़ियोंमें  
होगी । सब तय हो गया है । यहाँ तक कि निमन्त्रण करना तक मैंने नहीं बाकी  
रखा । ओह—कस सगरसे बेगी दीह धूप मुझ करनी पड़ी है । खैर, उस तरफक  
कामस तो एक तरहसे निमित्त हो गया । कौन कौन आएंगे, यह भी नोट कर  
रखा हूँ । पढ़कर देखो, बहुतोंको तुम पहचान सोगी ।

[ कैा लोककर उनके भीतरसे वह कागज निकालकर बिजपाये देता है ।  
विधवा उसे सती अवश्य है, किन्तु उसका मुन देखकर जान पड़ा कि वह  
बहुत सिद्ध हो गई है । ]

विधवा०—मायस क्या है ? इस तरह चुपचाप क्यों हो ?



विजया—मैं यह सोच रही हूँ कि आप जो उन लोगोंके निम्नत्व के भावे, सो उनको अब क्या कहा जायगा ?

विजय—इसके माने ?

विजया—मन्दिरकी स्थापनाके सम्बन्धमें मैं अभी तक कुछ रिपर नहीं कर पाई हूँ ।

[तीस विम्ब और उसके मी अधिक ओरसे विजयके मुकामा मात मयानक हो उठा, किन्तु कंठके स्वरको यह बचावकि संकट करके बोला—]

विजय—इसके माने क्या हैं ? तुमने क्या सोचा है कि इन छुट्टियोंमें यह काम न किया जा सका तो फिर कभी किया जा सकेगा ? वे लोग तो तुम्हारे—यह क्या करते हैं—यह नहीं हैं कि तुम्हें अब सुविधा होगी तभी बँके आकर कृतार्थ होंगे । मन्दिर नहीं हुआ इसका मतलब क्या है, क्या तुम्हें ?

विजया—( बीस स्वरमें ) वहाँ ब्रह्ममन्दिर स्थापित करनेकी कोश चर्यकता नहीं है । उसकी स्थापना नहीं होगी ।

विजय—( कुछ देर लंगित रहकर ) मैं जानना चाहता हूँ कि तुम बचार्थ प्राप्त महिमा हो कि नहीं ।

विजया—( विजयके मुकामा ओर चुपचाप ताकते रहकर ) घर बाहर, वहाँसे छान्त होकर छोटे किता आपके साथ इस बारेमें बात नहीं हो सकेगी । इस समय इसे रहने दीजिए ।

विजय—हम लोग तुम्हारा संसार त्याग दे सकते हैं, यह जानती हो ?

विजया—इन बारेमें मैं कदा कबूते बात करूँगी, आपके साथ नहीं ।

विजय—हम लोग तुम्हारा संस्कार सब होंगे तो क्या होय, जानती हो ?

विजया—नहीं । किन्तु आपको अगर विम्बदारीका स्वभाव इतना बर्बरता है, तब मरी इच्छा न रहन पर मी किन्हीं निर्भीक करके अपहरण करनेकी विम्बदारी आपने की है उनका घर आप ही उठाइए । मुझसे उठने हित्य वैदमन्त्र अनुरोध न कीजिएगा ।

विजय—मैं कामकाजी आशमी हूँ । काम ही मुझ प्यास है, विजयाइ मुझे पसंद नहीं—यह बाद किसी विजया ।

विजया—( घायलस्वरमें ) आश, मैं यही भूँसी ।

विष्णु०—( प्रायः चीत्कार करके ) हाँ—किसमें तुम न भूलो, यही मैं देखूँगा ।

[ विष्णु कुछ न कहकर जानेका उपक्रम करती है । ]

विष्णु०—अच्छा फिर इतना बड़ा मकान किस काममें आवेगा, सुनूँ तो सही ! उसे तो कासी पड़ा रहने नहीं दिना जा सकता !

विष्णु०—( फिर ठठकाकर हड़मासके ) लेकिन वह तो अभी तक तब नहीं हुआ कि वह घर लेना ही होगा ।

विष्णु०—( ओंकार के मारे जोरसे जमीनपर पैर पटककर ) हो गया है, तो बार तब हो गया है । मैं समाजके मान्य व्यक्तिबोको बुझाकर उनका सम्मान नहीं कर सकूँगा । वह घर हम ओंकारोंके चाहिए ही—वह मन्दिरकी स्थापना करके ही मैं माँऊँगा । वह तुमको अभी बतावे देता हूँ ।

( रातबिहारी खींच आते हैं । )

विष्णु०—सुना बाबूजी, विष्णु कहती हैं कि वह अभी नहीं होगा । वह सम्मान—

रात०—नहीं होना ? क्या नहीं होगा ? कौन कहता है कि नहीं होगा ?

विष्णु०—( उँगलीसे दिखाकर ) वह कहती हैं कि मन्दिरकी प्रतिष्ठा इस समय नहीं हो सकती ।

रात०—विष्णु कहती हैं कि न होगी ? करते क्या हो ? अच्छा स्थिर होओ मेरा, स्थिर होओ । किसी भी अवस्थामें अस्थिर ना उठावस्य न होना चाहिए । पहले सब सुन लें । अच्छा, निमन्त्रण दे दिया गया है ? दे दिया गया है । अच्छी बात है, वह तो बल औद्योगिक नहीं था सकता—असंभव है । इधर दिन भी अधिक नहीं हैं । करना है तो इसी बीचमें तैयारी पूरी करनी चाहिए । इसमें तो संदेह नहीं है बटी ।

विष्णु०—किन्तु वह अगर अपनी इच्छासे घर छोड़कर न चले गये, तो किसी तरह वह मन्दिरकी स्थापना नहीं हो सकती काका बाबू ।

रात०—स्वच्छासे घर छोड़नेकी बात किन्तु कह रही हो बेटी ? अपनीआके बड़केछे ? उसमें तो घर छोड़ दिया है—तुमने सुना नहीं ?

[ विष्णु विष्णुकी ओर पीठ मुकाकर लड़ी होती है । उसके होठ झोपने लगते हैं । वह अपनेको संतुष्ट करके, सँगाकर कहती है— ]

विजया—मैं यह सोच रही हूँ कि आप को उन लोगोंको निमन्त्रण दे द्याये, जो उनको बन्ध बना कहा जायगा।

विजय०—इसके माने।

विजया—मन्दिरकी स्थापनाके सम्बन्धमें मैं अभी एक कुछ स्थिर नहीं कर पाई हूँ।

[ तीस विजय और उससे भी अधिक शोधसे विजयके मुसलमान मान मानक हो उठा, किन्तु कठके स्वस्वो वह बचावकिए संभव करके नीचा—]

विजय०—इसके माने क्या है? हमने क्या सोचा है कि इन धर्मियोंमें यह काम न किया जा सके तो फिर कभी किया जा सकेगा? वे लोग तो हमारे— यह क्या कहते हैं— यह नहीं है कि तुम्हें अब सुविधा होगी सभी दौरे अन्तर कृतार्थ होंगे। मन्दििर नहीं हुआ इसका मतलब क्या है, क्या सुनो?

विजया—( धीमे स्वामे ) यहाँ मन्दिर स्थापित करनेकी कोई सार्थकता नहीं है। उसकी स्थापना नहीं होगी।

विजय०—( कुछ देर सोचि रहकर ) मैं जानना चाहता हूँ कि तुम सचार्थ प्राप्त महिष्य हो कि नहीं।

विजया—( विजयके मुसलमान और सुपनाप ताकते रहकर ) घर बाइए, वहींसे छात्र होकर कौटे बिना आपके साथ इस घरेमें बस नहीं हो सकेगी। इस समय इसे रहने दीजिय।

विजय०—हम लोग तुम्हारा संस्कार स्वागत के सज्जे हैं, यह जानती हो?

विजया—इन घरेमें मैं कभी बाबूते बस नहींगी, आपके साथ नहीं।

विजय०—हम लोग तुम्हारा संस्कार तब देंगे तो क्या होम्, जानती हो?

विजया—नहीं। किन्तु आपके अगर बिम्बेदारीका अपास इतना बर्दस्त है, तो मेरी इच्छा न रहने पर भी किन्हीं निर्ममिन करके अपहरण करनेकी बिम्बदारी आपमें भी है उनका मार आप ही उठाइए। मुझसे उसमें हिस्सा बँटाना अनुचित न कीजिएगा।

विजय०—मैं कामगामी आहमी हूँ। काम ही मुझे प्यारा है, बिम्बदारी मुझे प्यार नहीं—यह बात स्वयं विजया।

विजया—( धान्तस्वामे ) अच्छा, मैं नहीं भूलूँगी।

विश्वस—( प्राया पीतकर करके ) हाँ—जिसमें तुम न भूलो, वही मैं देखूँगा ।

[ बिबबा कुछ न कहकर जानेका उपक्रम करती है । ]

विश्वस—अच्छा फिर इतना बड़ा मन्त्रान किस क्षममें आवेगा, हुनूँ तो धरी ! उसे तो जासी पड़ा रहने नहीं दिया जा सकता !

बिबबा—( सिर उठाकर हड़मावसे ) लेकिन यह तो अभी तक तब नहीं हुआ कि वह घर सेना ही होगा ।

विश्वस—( कोचके मारे बोलेसे बमीनपर पैर पटककर ) हो गया है, तो बार तब हो गया है । मैं समाजके मान्य व्यक्तिपोंसे कुछकर उनका अपमान नहीं कर सकूँगा । वह घर हम लोगोंने चाहिए ही—यह मन्दिरकी स्थापना करके ही मैं मानूँगा । वह तुमको अभी बताये देता हूँ ।

( रासबिहारी खैर भाते हैं । )

विश्वस—सुना बाबूजी, बिबबा कहती है कि वह अभी नहीं होगा । वह अपमान—

रास—नहीं होगा ? क्या नहीं होगा ? कौन कहता है कि नहीं होगा ?

विश्वस—( ठोंगसीसे बिलाकर ) वह कहती है कि मन्दिरकी प्रतिष्ठा इस समय नहीं हो सकती ।

रास—बिबबा कहती है कि न होगी ! कहते क्या हो ! अच्छा सिंघर होओ मेरा, सिंघर होओ । किसी भी अवस्थामें अस्थिर वा उदात्तत्व न होना चाहिए । पहले सब सुन लें । अच्छा, निम्नस्वयं दे दिया गया है ? दे दिया गया है । अच्छी बात है, वह तो अब सौकरवा नहीं जा सकता—असंभव है । हफ्त दिन भी अधिक नहीं हैं । करना है तो इसी बीचमें वैमारी पूरी करनी चाहिए । इसमें तो सन्देह नहीं है बटी !

बिबबा—किन्तु वह अगर अपनी इच्छासे घर छोड़कर न चले गये, तो किसी तरह यह मन्दिरकी स्थापना नहीं हो सकती काका बाबू !

रास—स्वच्छासे घर छोड़नेकी बात किनकी कह रही हो बेटी ! बगरीछने सकरेकी ! उठने तो घर छोड़ दिया है—गुमान गुना नहीं !

[ बिबबा विश्वसकी ओर पीठ गुमाकर जाती होती है । उसके होठ खिंचे लगे हैं । वह अपनेको संतप्त करके, सँभाळकर कहती है— ]

विजया—ना, मैंने नहीं सुना । किन्तु उनके सब सामान क्या हुआ ! वह सब से गये ?

विजय—( हँसती मुद्रा में ) सुना है, सामान के नाम पर रहनेकी दायमर्त में उन्होंने एक दूरी चारपाई भी । जान पड़ता है, उसीके ऊपर वह सोया करता था । मैं उस चारपाई पर निम्नस्तर पेड़के नीचे डाक देनेकी आवाज देकर कम्पकसे गया था । आज स्टेशन पर उतरते ही दरबानकी बगानी सुना कि यही सब देनेके लिए वह आज खेरे फिर आया है । सैर, उच्छ्वस जो कुछ है, उस वह से जान, मुझे कोई आपत्ति नहीं है ।

राज —यही तुममें शोक है विजय । मनुष्य यदि ऐसा अपराधी हो, मगान्तर उसे चाहे किना दण्ड दे, हमें उसके दुःखों में दुःखित होना, समवेदना प्रकट करना उचित है । मैं यह नहीं कहता कि तुम इसमें उसके लिए कष्ट अनुभव नहीं करते किन्तु मेरा कहना यही है कि बाहर भी उसे प्रकट करना तुम्हारा कर्तव्य है । तुमने मुझसे उससे एक बार मिलनेके लिए क्यों नहीं कहा ?

विजय —उससे मेट करके निम्नस्तर देनेके सिवा क्या मुझे और कोई काम नहीं था बाबूजी ! आप भी न जाने कैसी बातें करते हैं । इसके सिवा मेरे पहुँचनेके पहले ही तो डाक्टर साहब अपना सबूत पिघल, मशीन पुर्बे करके सब समझकर निकल गये थे । विजय के डाक्टर हैं—और क्या ! एक अपवाद है ( Hambag ) कबिता ।

राज —ना विजय, तुम्हारी इस तरहकी बातचीतको मैं क्षमा नहीं कर सकता । अपने इस व्यवहारके लिए तुमको खिन्न होना चाहिये—परमात्मा करना चाहिए ।

विजय —किरायि—क्या तुम्हें तो ? पराब दुलमें दुःखित होनेकी, पराब स्तेय निवारण करनेकी शिला मैंने पाई है । किन्तु जो सामाजिक परपर बढ़कर अपमान कर जान उसे मैं माफ नहीं कर सकता । इतनी गणहता या बलात्कृत तुममें नहीं है—मैं बरा आदमी हूँ ।

राज —परपर बढ़कर कौन तुम्हारा अपमान कर गया ? किन्तु बात तुम कह रहे हो ।

विजय —बादगीच बाबूके सुपुत्र नरेन्द्र बाबूकी ही बात कह रहा हूँ बाबूजी ।

वह एक दिन इन विद्यवाके घरमें बैठकर मेरा अपमान कर गये थे। तब मैं उन्हें पहचानता नहीं था, इसीसे—(विद्यवाको दिखाकर) वह आत्मसी इनका भी अपमान करेगासे जाना नहीं आता। तुम लोग वह बात जानते हो? (विद्यवासे) पूर्ण बाबूका भानसा कहकर जितने अपना परिचय दिया था और उस दिन तुम्हारा लक अपमान कर गया था, जानखी हो, वह कौन है? उस समय तो तुमने बहुत प्रमथ दिया था। वही नरेन्द्र है। उस समय अगर वह अपना बचाव परिचय दे देता—तभी मैं कहता कि हाँ, वह मन् है। ठम करीका?

विजवा—वही नरेन्द्र बाबू हैं? दरबान मेबरकर उनकीको आपने घरसे निकाल दिया है। मेरे ही नामसे? मेरे ही कर्मको चुकानेके लिये?

[ श्लेष और श्लेषसे बेसे वह दौमकर चली गई। ]

राठ०—( विमूढ़ भावसे ) वह और क्या हुआ ?

विमूढ०—हां मैं क्या जानूँ।

राठ०—अगर जानते नहीं हो इतना बम करके वह कहनेकी ही क्या करत थी? झुल्ले ही सुन रहे हो कि वह जगदीशके बेटेके ऊपर जो बर्दशी नहीं चाहती, तो भी—

विमूढ —इतनी आत्मबली मुझे नहीं आती। मैं सीपी राठसे बसना पसंद करता हूँ।

राठ०—वही पसंद करो। सीपी राठ वही एक दिन तुमको अच्छी तरह दिखा देगी।—सीपी राठ। सीपी राठ।

( कहत कहते दोनोंके साथ प्रस्थान । )

## द्वितीय अंक

प्रथम दृश्य

स्थान—विजयाके बैठनेका कमरा

[ विजया बाहर किन्नीकी ओर एकटक ताक रही है। फिर उठकर किन्नीके पास जाकर उसे हाथके इशारेसे बुलाती है। तब एक क्षणक प्रवेश करता है। बाळक नंगे कपड़ों में है। बोलीक काठेमें बैठा है, जिसे जाना अभी सम्भव नहीं हुआ। ]

परेश—तुझे बुला रही थी माँजी !

विजया—क्या कर रहा था ते ?

परेश—सना ला रहा था।

विजया—वह थोड़ी तुझे कितने से दी है परेश ! नर देख एक रही है।

परेश—हाँ, नर है। माने के दी है।

विजया—यह थोड़ी कटीर दी है। छी छी—कैसी मरी किनारी है रे !

( अपनी साँपकी सुन्गर थोड़ी किनारी दिखाकर ) ऐसी किनारी तुझे पारिए—  
वह नहीं अच्छी लगती।

परेश—( गर्दन दिखाकर सहमति प्रकट करता हुआ ) या कुछ भी कटीरना नहीं जानती। तुम्हें वह थोड़ी कितने कटीर दी है !

विजया—मैंने आप कटीरी है।

परेश—आप कटीरी है ? बाम कितने पड़े ?

विजया—तुझे इससे क्या है रे ! लेकिन देख, मैं ऐसी ही एक थोड़ी तुझे छ दूँगी अगर तू—

परेश—कह से बोली !

बिबबा—ले पूँछी, अगर तू एक बात मेरी सुने । लेकिन तेरी मा या और कोई न जानने पाये ।

परेश—मा कैसे जानेगी ! तूम कहा ना—मैं अभी सुनूँगा !

बिबबा—तू दिपका जानता है !

परेश—बही तो बहों । कोशिकी सिस्सियों लोहने बहुत दिपका जाता हूँ ।

बिबबा—बहों सबसे दहा मकान किछक है, जानता है !

परेश—हाँ, बाग़ानोका है । बही जो उस सार ताड़ी पीकर छत्ते पड़े पड़े थे, उनका । बही बहों गोबिन्दकी सेवा-बजानेकी बुझन है और उसीके पस उनका पक्का मकान है । गोबिन्द स्वा करता है, जानती हो माजी करता है—जीमे माँगी हो गई है, अब आये पैस ( पैसे ) के दार मण्डा कपड़ा नहीं मिलेंगे, अब किछ हो गण्डा मिलेंगे । लेकिन तूम अगर हमारे एक पैसेके मगावरे तो मैं पाँच गण्डा लय सकता हूँ ।

बिबबा—तू दो पैसेके कपड़ो मोल अब सकता है !

परेश—हा, इस हाथमें पहले एक पैसेके पाँच गण्डा मिलकर खैर — फिर कहूँगा, दुकानदार इस हाथमें और पाँच गण्डा मिल दे । दे चुकने पर कहूँगा—माजीने दो कपड़ो खैरमें देनेकी कहा है—क्यों न !—तब उसे दोनों पैसे हूँगा—औरक है न !

बिबबा—( हँसकर ) हाँ, तब दोनों पस उसके हाथमें देना और तब दुकानदारस पूछना कि उस बड़े मकानमें या नन्द बाबू रहत थे—बह कहों गये ! क्यों रे, यह तू कर सकता कि नहीं !

परेश—( तिर हिसाकर )—अच्छा, हो पैसे कपड़ो न तूम—मैं बीड़कर बाऊँ से आऊँ ।

बिबबा—( उसके हाथमें पैसे देकर ) कपड़ो हाथमें पाकर पूछना भूक तो न बाबया ।

परेश—ना—

[ करकर ही बीड़ता हुआ पक दिया । बिबबा खोकर एक झुसीपर बैस ही बैठती है, बैस ही परेशकी मा प्रवेश करती है ]

परेशकी मा—बान पड़ता है, परेशको कहीं तूमने मेका है बिबबा यमी ।



वह एकदम कड़कट्टा मारा गया है। मैंने पुछारा तो बनाव ही नहीं दिया।

विजया—( हँसकर ) ओ, परेश बौका गया है। तो निबबय ही बिभन्न गया है ब्याहो लेने। अचानक मुझसे दो पैसे पा गया है कि नहीं।

परे मा—लेकिन ब्याहो तो जहाँ पाठ ही मिमते हैं—वहाँ क्यों गया।

विजया—क्या जाने, वहाँ कोई गोविन्द हलवाई है; वह शावर कुछ ब्यादा बेता है।

परे मा—वह जो तुमने किनारे ठठाकर ठीकसे लपनेके लिए कहा था— ठठाझोती नहीं।

विजया—इस समय रहने दो परेशजी मा।

परे मा—एक बात तुमसे कहना चाहती हूँ बिटिया रानी, मगर डरके मारे कह नहीं सकती।

विजया—क्यों, तुम्हो कारिश्वा डर है। क्या बात है।

परे मा—कालीपद कहता था कि वह तो बच टिक नहीं सकता। छोटे बच्चे उधे फूँटी बीँसों नहीं बेक सकते। अब बेसो लव डॉलर—बनकते हैं। वह जो बड़े मालिकका लानतामा था; उसे कलकत्तेमें रहनेका अम्बार था। सुनती हूँ, कल छोटे बच्चे उधे कुम दिसा है कि वहाँ काम कम है। उसे उड़िया मालीके लव बगमें मेहनत करनी होगी। नहीं तो ब्याव दे दिया जावगा। अब वह बूढ़ा हुआ; मरम बागमें जाकर कुदाक कैसे ब्याव पड़ेगा।

विजया—( हड़कण्ठसे ) ना उसे कुदाक नहीं बचानी पड़ेगी। छोटे बच्चे मैं कह दूँगी।

परे मा—हमारे बबु पोय गुमाव्या कहते थे कि—

विजया—इस जगत् रहने दो परेशजी मा। मुझे एक बकरी चिट्ठी छिपना है, फिर सुनूँगी। अब तुम जाओ।

परे मा—बकरी जाती हूँ बिटिया रानी।

[ परेशजी माके बजे जानेपर विजयाने सिङ्गीक पास जाकर लौककर देखा; फिर तुरन्त ही लौट आकर एक चिट्ठीका कागज पैरस निकालकर खिजने बैठा। कालीपदने दरवाजेके पास मुँह कड़ाकर पुछारा— ]

कालीपद—बिटिया रानी।

बिबा—परेदात्री मासे तो मैंने तुमसे कहनेको कह दिया है कस्मीपद काममें जाकर काम न करना पड़ेगा ।

मन्त्री —लेकिन छोटे बाबू—

बिबा—उनसे मैं कह दूंगी, तुम्हें कोई डर नहीं है । अच्छा, अब जाओ ।

मन्त्री —वे तो कपड़े घूमने जाते गये हैं, उन्हें—

बिबा—उन्हें अभी रहने दो कस्मीपद । यह बकरी चिट्ठी समाप्त किये । मैं न उठ सकूंगी ।

कस्मीपदके जानेपर बिबा उठकर और एक बार खिन्नकी श्लोक करती कहापर आ बैठी । चिट्ठीका पढ़ भस्म होकर भस्मवार कीच बिबा । ६ मन्त्रसे जान पड़ता है, बहुत ही पंचर हो रही है किसी काममें मन लगा पत्नी । ]

बबु—( नेपथ्यसे ) माथी ।

बिबा—कौन है ?

बबु—( दरबानेके पास आकर ) मैं बबु हूँ । क्या आ सकता हूँ माम्बिकिन ?

बिबा—नहीं बबु बाबू, इस समय मुझे अवकाश नहीं है । आप और श्री समन आइयगा ।

बबु—अच्छा माथी ।

[ बिबा भस्मवार पढ़ रही थी । बूझती ओरसे दूधे पैरों बड़ी सत्वधानीत, होने प्रवेश किया । बिबाने उठकर एक होकर भस्मन्त ध्यस्त स्वरमें न किया— ]

बिबा—दुःखानदारने क्या कहा परेदा ?

परेदा—( धोतीके फस्तेमें छिपाये हुए कतायेकी ओर इशारा करके ) बजारो तो ! एक पैसेके छः गण्डाके हिसासे दिये हैं ।

बिबा—भरे नहीं—तुमने नरेन्द्र बाबूके बारेमें क्या क्या कहा, खे क्या ?

परेदा—( तिर हिसकर ) महीं जानता । दुःखानदारने पैसमें छः गण्डा देनेकी किसी कहनेको मना कर दिया है । कहाँ क्या है, जानती हो माथी—

बिबा—तू नरेन्द्र बाबूकी बात क्या जान आया है, कही कह न ?

परेष—वह क्यों नहीं है—कहीं चले गये हैं । गोविन्द कहता क्या है, जानती हो माँबी ! कहता है, बारह मण्डके—

विजया—( हँसे स्वरमें ) ठे का अपने बारह गण्डा क्ताओ मेरे सम्मनेसे ।

( विजया सिङ्गरीके पात बाँकर कासी हाँ जाती है । )

परेष—( क्ताओंके दोनों दोनों हाथमें डेकर ) इच्छे क्तावा वह देता नहीं माँबी ।

विजया—( बरा बेर बाद मुँह झुमाकर ) परेष, वे तू से बाँकर ला ले ।

( वह कहकर फिर सिङ्गरीके बाहर टाँकने लगती है । )

परेष—( डरकर ) सब ला है ?

विजया—( मुँह झुमाते बिना ) हाँ, ला सब ला ले । मुत्तकी बरसत नहीं है ।

परेष—इच्छे क्तावा उछने दिवे ही नहीं माँबी—मैंने बहुत कहा ।

विजया—बाने दे । मैं लज्ज नहीं हूँ परेष—क्ताओ तू से ला—बाँकर ला ।

परेष—सब आकेले ला है ! ( बरा चुप रहकर ) उन काने मञ्जुबातबीसे बाँकर पूछ आऊँ माँबी !

विजया—काने मञ्जुबातबी कौन रे ? क्या पूछ आयेगा ?

परेष—पूछ आऊँगा कि नरेन बाबू क्यों मरे ?

[ मुँह झुमाते ही निकलने बेसा, नरेन कमरक मीतर प्रवेश कर रहा है । उसके हाथमें एक कमोका वस्तु है । उसे नीचे रखाकर हाथ उठाकर नरेन नमस्कार करता है । ]

विजया—( अस्मित होकर ) का का, अब पूछनेकी बरसत नहीं है । तू बा ।

परेष—( मुन्न स्वरमें ) काने मञ्जुबातबी उनके पड़ोसके ही घरमें रहते हैं कि नहीं । गोविन्द कहता है कि मरेनबाबूजी लम्बर बड़ी जानते हैं ।

विजया—( लूनी हँसी हँसकर ) आहए, बैडिए । ( परेषसे ) तू अब का न परेष । कौन ऐसी बड़ी बात है—म हो उसे फिर कमी बाँकर बान आना ।  
अभी का— ( परेषकी समझमें कुछ न आया । वह लज्ज गया । )

नरेन—आप नरेन बाबूजी लम्बर जानना चाहती हैं ? वह क्यों है, बड़ी !

बिब्या—( कुछ इधर-उधर करके )—हाँ, छे किसी दिन जान रूंगी ।

नरेन्द्र—क्यों ? कोई दरबार है ?

बिब्या—दरबारके आसपास क्या कोई किसीके बारेमें जानना नहीं चाहता ?

नरेन्द्र—कोई क्या करता है या क्या नहीं करता, इसे छोड़ दीजिए । लेकिन आपके साथ तो उसका सब सब समाप्त हो गया है । अब फिर क्यों उसका पता लगा रही हैं ? क्या आपका सब कर्मा नहीं कुछ ? ( बिब्या चुप रहती है ) अगर कुछ और देना उसके बिम्बे निकलता हो, तो मैं यहाँ तक मैं जानता हूँ, उसके पास ऐसा कुछ नहीं है, बिम्बे वह अवा हो सके । अब उसकी खोज करना बुरा है ।

बिब्या—किसने आपसे कहा कि मैं कबोंके बिम्बे ही उनका पता लगा रही हूँ ?

नरेन्द्र—इसके सिवा और क्या कल्प हो सकता है, यह तो मेरी कल्पनामें नहीं आता । वह भी आपको नहीं पहचानते और आप भी उनको नहीं पहचानती ।

बिब्या—वह भी मुझे पहचानते हैं और मैं भी उन्हें पहचानती हूँ ।

नरेन्द्र—वह आपको पहचानते हैं, यह ठीक है, लेकिन आप उन्हें नहीं पहचानती ।

बिब्या—कौन कहता है कि मैं उनको नहीं पहचानती ?

नरेन्द्र—मैं कहता हूँ । मान लीजिए, मैं ही अगर आपसे कहूँ कि मेरा नाम नरेन्द्र है तो उसे ही आप मान लेंगी ? ना ' नहीं कह लेंगी ?

बिब्या—ना तो मैं स्वयं ही नहीं कह सकती और आपसे भी कहूँगी कि यह सत्य बात आपको भी बहुत पहले ही मुझसे कह देनी चाहिए थी । ( नरेन्द्र का चेहरा उठर गया और वह चुप रहा ) अपना औरका और परिचय देकर अपनी आलोचना सुनना और आइमें जाके होकर सुनना क्या आपको एक ही बात नहीं जान पड़ती नरेन्द्र बाबू ! मुझे तो जान पड़ती है । लेकिन इतना ही मुझमें और आपमें अन्तर है कि हम ब्राह्म समाधी हैं और आप लोग हिन्दू ।

नरेन्द्र—( चुप रहकर ) आपके साथ अनेक प्रकारकी आलोचनाके बीच मेरी अपनी आलोचना भी अवश्य थी, किन्तु उठते मर कोई बुरा अहिंसावा किन्तु न था । आखिरी दिन परिचय देनेका इरादा भी मैंने किया

बा, लेकिन न जाने क्यों, पैसा हो नहीं पाया। मगर इससे तो आपकी कोई हानि नहीं हुई !

विजया—हानि तो आदमीकी कितनी ही तरहकी हो सकती है नरेन बाबू। और अगर दुर्घटना हो तो वह हो ही गई। अब आप उसे पूरा करनेका कोई उपाय नहीं कर पावेंगे। उसे जाने बीबिए, किन्तु यदि इस समय सम्भव ही आपके निक्के बारेमें कोई बात मैं जानना चाहूँ तो क्या—

नरेन्द्र—नास्तब होऊँगा ! ना—ना—ना ।

[ प्रशान्त निर्मल हैसीसे उसका मुँह उलझा हो उठा । ]

विजया—अब आप हैं क्यों !

नरेन्द्र—एक दूसरे गोंवमें मेरी दूरके नातेकी एक दुआ आप भी मौजूद हैं।  
उन्हींके पर बाहर ठहरा हूँ ।

विजया—किन्तु आपके सम्बन्धमें जो सामाजिक संकट है उसे क्या उस व्यक्ति लोग नहीं जानते ?

नरेन्द्र—जानते क्यों नहीं !

विजया—फिर !

नरेन्द्र—( बरा धोतकर ) उनकी किस कोठरीमें हूँ, उसे ठीक परके मीटर नहीं क्या जा सकता। और मेरी इच्छाके बारेमें सुनकर उनके सङ्गठने भी धायद कुछ दिन मेरे ठहरनेमें कोई आपत्ति नहीं की। मगर हाँ, यह ठीक है कि अधिक दिन उनके घरमें ठहरकर उन्हें संकष्टमें नहीं डालना चाहता। ( बरा घुर रह कर ) अच्छा, सब क्याइए, क्यों यह सब पता लगा रही थी आप ! बाबूजीका क्या कुछ और देना बाकी निकलता है ? ( विजया चेष्टा करके भी कुछ कह नहीं सकती ) पिताका मूल कौन कबूका नहीं चुकाना चाहता ! किन्तु स्व करता हूँ आपसे कि अपने नामसे या किसी औरके नामसे मेरा कुछ भी ऐसा नहीं है, जिसे बेचकर मैं आपको बचत दे सकूँ। सिर्फ यह माइक्रोस्कोप ( Microscope ) या अणुवीक्षण यंत्र है। इसे कम्बोरे लिये जा रहा हूँ, धायद इसे कहीं बेचकर और किसी बगल जानेका सर्व प्रयत्न करूँ। दुभाकी भी हालत बहुत खराब है। यहाँ तक कि लाना-पीना तक—( विजया मुँह घुमाकर दूसरी ओर देखती रहती है ) हाँ बचा करके अगर कुछ समय बीबिए तो बाबूजीका कर्म बाँटे कितना हो, मैं उसे अपने नाम लिखाकर बाँटने जा सकता हूँ। यदि हमें

उसे पुकानेकी प्रायपणसे चेष्टा करेगा । आप रासबिहारी काबूसे बराबर हँसी तो वह इस बारेमें मुझपर और दयाव नहीं डालेंगे ।

विजया—इस समय क्यामग लीन बचनेकी है । आपका मोहन हो गया ।

नरेन्द्र—हाँ, एक तरहसे हो ही गया है । कलकत्ता जानेके छिट्ठी ही पठा है न राहमें छात्रा, एक बार आपसे मिलता जाऊँ । इसीसे एकएक का पत्र ।

विजया—लेकिन आपका मुँह देखकर तो जान पड़ता है कि आपने अभी मोहन नहीं किया ।

नरेन्द्र—( हँसकर ) गरीब-दुस्तियोंका चेहरा ही ऐसा होता है कि उसमें मोहनकी दृष्टिपर विश्व सचमे नहीं खिलना चाहता । आप जेम्सके साथ मरा अन्तर इसी बगइतर है ।

विजया—तो मैं जानती हूँ ! अच्छा आपके इस माइक्रोस्कोपका मूल्य कितना है ।

नरेन्द्र—करीबनेमें तो मेरे पैंत सौस अधिक बचप डग वे लेकिन अब दारि ली—बो ली—मी मिलें तो मैं दे दूँगा । किस्कुल नवा है ।

विजया—इतने कममें दे देंगे ? आपको क्या अब दूसरी बस्तु नहीं रही ? किंतु कामके लिए किया था वह हो गया ।

नरेन्द्र—काम ! काम तो कुछ भी नहीं हुआ ।

विजया—मुझे अपने लिए वह मर्यादा करीबनेकी बहुत दिनोंसे इच्छा है, लेकिन वह थोड़ा पुरा नहीं कर पाई । और करीबकर ही क्या होगा ? कलकत्ता छोड़कर चली आइ हूँ, वहाँ इसे ठिलानेवास्तव करी पाऊँगी ?

नरेन्द्र—मैं सब सिखाकर जाऊँगा । देखिएगा ?

[ विजयाकी सम्पत्तिकी राह न देखकर माइक्रोस्कोप निकालकर एक छोटी सिपाईके ऊपर रखकर पोंकत ठीक करके बोला— ]

नरेन्द्र—आप इस बेयरपर बैठिए, मैं अभी सब दिखाकर समझाये देता हूँ । बिन स्लेयमें इस अणुबीजग बच ( लाइवीन ) का साक्षर परिचय नहीं प्राप्त किया, वे सोच भी नहीं सकते कि इस छद्म-ली बीजके भीतर कितना बड़ा विस्मय छिपा हुआ है । वह स्लाइड ( Slide ) बहुत ही स्पष्ट है । बीज-बगलका कितना बड़ा विस्मय इसनेसेमें मौजूद है । यह देखिए ( विजया मर्यादाके शोभ पर अन्त स्थाकर देखने लगती है )—क्यों देख पा रही हैं न ?

विजया—हाँ, बेच पा रही हूँ—पुँपमय चुम्बों-का सब एकठाकर बेच पड़ रहा है ।

नरेन्द्र—चुम्बों ?—ठहरिए—ठहरिए—बान पड़ता है—(कम-कमरे कुछ घुमा फिरफिर, आप देखनेके बाद सिर उठाकर ) अब देखिए । वह जो छोट-सा एक—क्यों, अब तो पुँपमय नहीं है ?

विजया—नहीं । अक्की हुँबलेके बहले चुम्बों मूल मान्दा हो गया है ।

नरेन्द्र—गान्दा हो गया है ? यह कैसे हो सकता है ?

विजया—( सिर उठाकर ) वह मैं कैसे जान सकती हूँ ? चुम्बों देख पड़े तो क्या वह कहीं कि आपा बेच रही हूँ ?

नरेन्द्र—मैं क्या यही कह रहा हूँ ? यह छू घुमा-फिरकर अपनी नजरके माफिक कर खोजिए न ? इसमें कठिन क्या है ?

[ विजया मशीनमें बीस स्याकर हावसे पैर घुमाते जाती है । ]

नरेन्द्र—( गस्त होकर ) अरे अरे, यह क्या कर रही हैं—कितना घुमा रही हैं—यह क्या बर्बाद है ? ठहरिए, मैं ठीक कर हूँ । ( ठीक करने ) अब देखिए ।

[ विजया फिर देखनेकी चेष्टा करती है । ]

नरेन्द्र—क्यों, अब देख पाया ?

विजया—ना ।

नरेन्द्र—तो अब देखनेकी कसरत मही । मैंने अपने पीछनमें ऐसी मोटी बुद्धि फिरोकी नहीं देखी ।

विजया—मेरी बुद्धि मोटी है या आप लिखाना नहीं जानते ?

नरेन्द्र—( अतुनापके स्वरमें ) क्याएह, और किस तरह दिखते ? आपकी बुद्धि कुछ लम्बयुक्त मोटी नहीं है, किन्तु मुझे निश्चय बान पड़ता है कि आप मन नहीं लगा रही हैं । म बड़ रहा हूँ और आप मशीनमें बीस स्याते, सिर झगधने ईत रही हैं ।

विजया—कितने कहा, मैं ईत रही हूँ !

नरेन्द्र—मैं कहता हूँ ।

विजया—आपकी मूल है ।

नरेन्द्र—मेरी भूख है ! बच्ची बात है, पर यह मशीन तो भूख नहीं है, फिर क्यों नहीं आपकी देख पड़ता ?

बिबहा—आपकी मशीन खराब है ।

नरेन्द्र—( बिबहासे ) खराब है ? आप जानती हैं, ऐसी पावर-फुल ( powerful—शक्तिशाली ) माइक्रोस्कोप मशीन यहाँ अधिक खर्चोंक पास नहीं हैं—इतनी बरी और इतना स्पष्ट दिखानेवाली ।

[ इतना कहकर एक बार खुद अपनी आँखोंसे देखकर बौननेकी अति व्यस्ततामें छुटते ही दोनोंकि फिर हँस बाते हैं । ]

बिबहा—ओ ! ( हाथसे फिर छहकते-तहकते )—बानत हैं, फिर टकरा देनेसे क्या होता है ! सींग निकल आते हैं ।

नरेन्द्र—अगर सींग निकलत हैं तो आपके ही सिरसं निकलने चाहिए ।

बिबहा—और नहीं तो क्या ! इस पुराने टूट माइक्रोस्कोपको मैंने अच्छा नहीं कहा, इतकिया मेरा माया सींग निकलने बाधक है । बाह छाह, बाह !

नरेन्द्र—( छट्टी बँधी हैकर )—आपसे सब कहता हूँ, यह मशीन टूटी नहीं है । मेरे पास कुछ न होनेके कारण ही आपको कन्वेज हो रहा है कि मैं आपको ठगकर रुपए छेनेकी चेष्टा कर रहा हूँ । लेकिन आप चाहको देखिएगा ।

बिबहा—कदको देखकर फिर क्या कर सँगी ! तब मैं आपको कहीं पाऊँगी !

नरेन्द्र—( सीसे खरमें ) फिर आपने क्यों कहा कि सँगी ! क्यों इतनी देर बेधर परेधान किया ! अब मैं कलकसे नहीं जा सका ।

बिबहा—आपने ही क्यों नहीं कहा कि यह टूटा है !

नरेन्द्र—( बहुत ही बीसहकर )—सैकड़ों बार कह चुका कि यह टूटा नहीं है, तो भी आप इसे टूटा कहे जाती हैं ! ( खेपको संगत करके, ठठकर लड़े होकर ) अच्छा यही ठाही । मैं और बहस करना नहीं चाहता—यह टूटा ही है; लेकिन तभी तो आपकी तरह अन्ध नहीं हूँ । अच्छा, अब बल्ला हूँ ।

( मशीनको बसतमें रखन आता है )

बिबहा—( गम्भीर भावमें )—अभी कैसे बाहरएगा ! आपको मारन करके जाना होगा ।

नरेन्द्र—ना उधड़ी बसत नहीं है ।

बिबहा—फिरने कहा कि नहीं है !



नरेन्द्र—किसने कहा ! आप मन-ही-मन ईश्वर रही हैं ! क्या मेरी ईश्वरी उड़ा रही हैं !

विजया—लेकिन आपको निश्चय ही साधर जाना होगा । बरा बैठीए, मैं बर्फी खाती हूँ ।

[ विजया उठ जाती है । नरेन्द्र माइकोल्सोव्स्की कमरेमें बन्द करके तिपटारके पीछे रहता है । विजया आप मौबन-सामग्रीकी बाखी क्रिये जोरती है । उसके पीछे कमरूपर आपका सामान क्रिये है । ]

विजया—इतनी ही बेरमें आगन उसे बन्द मी कर दिया ! आपका श्रवण तो कुछ कम नहीं है ।

नरेन्द्र—( उदास कण्ठसे )—आप नहीं सेंगी, इसमें श्रेय काहेका ! लाठी कुछ बेर कड़ कड़ करके मरा, इतना ही हुआ ! और कुछ नहीं ।

विजया—( बाखी डेकुम्बर रखकर )—हाँ, यह हो सकता है । लेकिन आपने जो कुछ कहा तो लाकिन अपने लिए—एक दृष्टि मर्दान मरने मरने के मरकम्से ।—अच्छा अब लगने बैठीए, मैं चाय बना दूँ । ( नरेन्द्र सीधा बैठा रहता है ) अच्छा लाइन, न हो मैं ही इसे सँभाली, आपको झेदकर से जाना न पड़ेगा । आप अब जाना शुरू कीजिए ।

नरेन्द्र—आपसँ दया करनेका तो मैंने अनुरोध नहीं किया ।

विजया—लेकिन उठ दिन किमा या, बिना दिन मरमाके लिए सिफारिश करने जानें वे ।

नरेन्द्र—वह बूतरेके लिए, अपने लिए नहीं । यह सम्भाव मुझे मही है ।

विजया—कैर वह चाहे जो हो, लेकिन अब आप यह माइकोल्सोव्स्की झेद नहीं सँभालेंगे । यह मही रहेगा । अब जानें बैठीए ।

नरेन्द्र—इसके जाने !

विजया—मझे कुछ तो है ही ।

नरेन्द्र—( कुछ होकर ) वही मैं आपके मुँहसे सुनना चाहता हूँ । आप क्या इसे अच्छा रक्ता चाहती हैं ! यह मी क्या आपकीने आपके पास बँधक रक्ता या ! आप तो देखना हूँ तब मुझे मी अच्छा लगती है—वह लगती है कि बाखी मुझे मी आरके पास रहन रक्ता गये हैं ।

[ विनयाग्र मुँह खल हो जाता है । वह गर्दन मुमा छेती है । ]

विनया—कासीपद, तू लके लके क्या कर रहा है ? का, पान छ आ ।  
( कासीपद वायका सामान देविष्ठपर रखकर चला जाता है ) छीबिए, सगढ़ा न  
कीबिए—अब लाना हुरु कीबिए ।

( नरेन्द्र कुम्हाप गमीर मुलसे काने जाता है । )

नरेन्द्र—मुनिए ।

विनया—मुनैती फिर । पहले पेग्मर का कीबिए ।

नरेन्द्र—बहुत तो का चुध ।

विनया—अमी तो बहुत-सा पका हुआ है ।

नरेन्द्र—इतके छिए मैं क्या करूँ ? मुलसे और न लाना बायगा ।

विनया—तो मैं जानती हूँ आपमें कुछ भी कर लक्ष्मेश्वरी शक्ति नहीं  
है ।—अच्छा, मादकोस्कोप देखना सीखकर मुझे क्या खाम होमा ?

नरेन्द्र—( विरमयके साथ ) देखना सीखकर क्या खाम होमा ?

विनया—हाँ वही तो । इस सीखनेका खाम अगर आप मुझे समझा दे  
सकें तो मैं सुधी सुधी इसे करीब दूँगी, फिर वह सारे कैसा ही दूय और  
रही क्यों न हो ।

नरेन्द्र—आप न लरीबिए ।

विनया—अच्छा तो समझा कीबिए न ।

नरेन्द्र—देखिए, मैंने आपको सीखानुअधी गढ़न दिलाती चाही थी ।  
साथी अँलोति वे नहीं देख सकते—बैसे उनका अस्तित्व ही नहीं है । उन्हें  
केवल इती यन्त्रके द्वारा देखा जा सकता है । सधि और प्रत्यक्षी चितनी बड़ी  
शक्ति लेकर वे जीवाणु पृथिवी मरमें व्याप्त हैं उनका यह जीवनका इतिहास—  
लेकिन आप तो कुछ मुन ही नहीं रही हैं ।

विनया—मुनती नहीं हूँ तो क्या !

नरेन्द्र—क्या हुना, बग़ाइय तो !

विनया—साह, एक दिनमें ही कहीं मुनकर सीख जाता है ? आपने ही  
क्या एक दिनमें सीख लिया था ?

नरेन्द्र—( अहसास करके ) लेकिन आप तो एक ही बरसमें भी न सीख  
पावेंगी । इसके सिवा वह सब आनन्द सिखाएगा ही कौन ?

विजया—( होठ दबाकर हँसकर ) क्यों, आप सिखाएंगे; नहीं तो वह हूँ मैं मशीन मेरे सिवा और कौन केगा ?

नरेन्द्र—आपके डेनेकी जरूरत नहीं है, और मैं सिखा भी नहीं पाऊँगा।

विजया—सिखाना ही होगा आपके। और आप बेच जाएँगे और भिक्षाने को भेज दूँगा आपकी आँखों। न ही तो और एक काम कीजिए। मुना है, आप ठन्डीर जल्दी बनाते हैं। वही मुझे सिखा दीजिए। वह तो मैं सीख लूँगी !

नरेन्द्र—( उल्लेखित होकर ) वह भी नहीं। बिल्कुल औरको सीखनेमें मनुष्यको नहाने-कानेका भी होश नहीं रहता, उसीमें वह आप मन नहीं लगा सकती तो बिना कानेमें क्या आपका मन लगेगा ? किसी तरह नहीं।

विजया—तो मैं बिना बनाना भी नहीं सीख लूँगी !

नरेन्द्र—ना। आप तो कुछ भी मन लगाकर नहीं सुनतीं।

विजया—( सघ्न माम्भीर्यक साथ ) लेकिन कुछ भी सीख न पानेपर तो सम्भव ही माँसेपर सींग निकलने।

नरेन्द्र—( ठहाका लगाकर ) वही आपके लिए उचित दण्ड होगा।

विजया—( मुँह फेरकर हँसी छिपत हुए ) और नहीं तो क्या। आपमें सिखानेकी क्षमता नहीं है, यह क्यों नहीं कहते। लेकिन ये नौकर-चाकर क्या कर रहे हैं ! सस्येन क्यों नहीं बजाते ! बरा बैठीए, मैं कालेन बजा देनेके लिए कह आऊँ।

[ विजया ने तेजीसे ठठकर बेसे ही दरवाजेपरका पर्दा हटाया, बेसे ही अचानक मानों भूत देकर वह पीछे हट गई। पिना पुत्र रातबिहारी और किरातबिहारी दोनों प्रपंच करके पास परी हुई कुर्तियाँ खींचकर उनपर बैठ गये। विजया के चेहरेपर बेसे किरातने स्वादीका एक हाथ फेर दिया हो, ऐसा दिखी हो रहा था। ]

विजया—( अपनेको रौंदाकर ) आप क्या आने काका का ?

गल०—( लक्ष्मी हँसीके साथ ) सामग आध पैरा हुआ, आकर उठ सामनेक बरामदेमें बैठा था। लेकिन हम बातचीतमें बहुत व्यस्त थी इसलिए नहीं पुछरा।—यह घायल बगलीका क्या है ? क्या चाहता है।

विजया—( दबी आवाजमें ) एक माइकेलोप उनके पास है। उसीको बचकर वह यहाँसे चले जाना चाहते हैं। वही दिला रहे थे।

विष्मस—( गरजता ) माइक्रोस्कोप ! ठगनेके लिए और कोई बपाह बान  
कटा है, नहीं मिली ! ( नरेन्द्रजी धीरे-धीरे वृद्धे द्वारसे प्रस्थान । )

रस०—अरे वह बूढ़ क्यों कहते हो ? उधका उद्देश्य क्या है, सो तो हम  
जानते नहीं । अच्छा भी तो हो सकता है । अवश्य यह भी ठीक है कि बोर  
फर कुछ भी नहीं कहा जा सकता । केर वह चाहें वो हो, उधकी हमें क्या  
बखरत है ! दूरबीन होती तो न हो, कभी किसी समय दूरकी कोई चीज या  
दृश्य देखनेके काम भी आ सकती । ( डेम्प हाथमें लिये कागजीपरका प्रवेश । )

रस०—कागजीपर, वह बाबू चायद कहीं बैठा चाह देख रहा है—उससे  
बखर कह दो कि वह मशीन के साथ ।

विजया—( डरते डरते ) उनसे तो मैं लेनेको कह चुकी हूँ ।

रस —( विष्मसका माग दिखाने ) जेगी ! क्यों, उसकी क्या बखरत है ?  
( विजया चुप खती है । )

रस०—वह उधके दाम क्या मोंगता है ?

विजया—दो सौ रुपए ।

रस०—दो सौ ? दो सौ रुपए मोंगता है ? विष्मस, हा तो निहायत—क्या  
विष्मस, कागजेमें तुम्हारे एक प. इराक़ी केमिस्ट्री ( Chemistry=रसायन )  
में वह सब तो तुमने कागजी देख माग और इलेमन्ट किता है—दो सौ रुपए  
एक माइक्रोस्कोपके दाम ! वह तो कमी नहीं मुना । कागजीपर, जा, उससे ले  
बानेक लिए कह आ । यह सब पाल्साजी बाहों नहीं खलेगी ।

विजया—कागजीपर, बाबू तुम अपना काम करो । ले कहना होगा सो मैं  
आप ही कहूँगी । ( कागजीपरका प्रस्थान । )

विष्मस—( स्टेज करके ) क्यों बाबू, तुमने बखर अपनेको व्यग्रमानित  
कराया ! उधे चायद अभी कुछ दिखानेको जाती है । ( रसबिहारी  
चुप रहता है ) हमने भी अनेक प्रकारके माइक्रोस्कोप देखे हैं बाबू, लेकिन  
हो हो करके अइहाज करनेकी बात किसी मशीनमें नहीं पाई ।

विजया—( विष्मसकी ओर पूरी सौरसे पीठ करके, रसबिहारीसे )—मुझसे  
क्या कुछ रस बात करनी है कागजी बाबू ?

रस०—( अलस भावसे पुनः प्रति कुछ कयाउपात करके और मारसे )

हों, करनी कमों नहीं बेटी । लेकिन क्या सम्मुख तुमने उससे करीबनेका बात कर लिया है । अगर वादा कर चुकी हो तो सेना ही होगा । दाम उछल जाये वो हो, । सुधारमें ठगाना जाना या ठगाये जानेसे बचना ही बड़ी कला नहीं है विजया, सत्य ही बड़ी थीक है । सबसे मुकरनेके लिए तो मैं तुमसे कह नहीं सकेगा ।

विजया — लेकिन इसीलिए क्या वह ठग ले जायगा ?

रात — बाब, वह ठग ले जाय । बगरीबाके कदमसे इससे अधिक या इसके सिवा और कुछ प्रत्याशा न कर । काभीपर उससे बाहर कह आवे कि कम आकर कचहरीसे बपर ले जाय ।

विजया — वो कहना होगा, मैं ही उनसे कहेगी — और किसीके कहनेकी जरूरत नहीं है काका बाबू ।

रात — अच्छा अच्छा, तुम्ही कहना बेटी । कह देना, वह डरे नहीं, वो तो बपर ही ले जाय ।

विजया — रात हुई जा रही है उन्हें बहुत पुर जाना होगा । आपके साथ क्या कम बात नहीं हो सकती काका बाबू ।

रात — अच्छी बात है बेटी, कम ही सही । ( जाना चाहता है, लेकिन एकदम रुककर ) हाँ, शायद तुमने सुना होगा, तुम्हारे मन्दिरके भग्वी आचार्य दवाक बाबू आज छोरे ही आ गये हैं — मन्दिर-मस्जिदों ही ठहरे हैं । और हमारे उमाचके वो सब गन्ध-माल्य व्यक्ति हैं, किन्हे सम्मानके साथ हमने बुझवा है, वे सब कम छोरे आवेंगे । मैं तुम दोनोंको उनके निजट परिचित कर दूँगा । अब और कितने दिन चिन्ता बेटी ।

विजया — ( निश्चयसे ) वे सब कम ही आवेंगे ? कहाँ, मैं तो कुछ भी नहीं सुना ।

रात — ( निश्चयसे ) तुमने नहीं सुना बेटी ? तो जान पड़ता है, कस्टीके कारण भूख गया बेटी । कुदापका वही तो बीम है ।

विजया — लेकिन वो दिनकी सुविधाओंमें तो अभी बहुत दिन बच्ये हैं काका बाबू ।

रात — बहुत दिन बाकी हैं, इसीसे तो मैंने सोचा कि अब तुम कर्ममें डेर नहीं करो । वह मस्जिद तो तुम ब्रह्म-मन्दिरकी स्थापनाके लिए मन्-ही-मन् जान

कर ही चुप हो, अब कंचस अनुग्रह ही बाकी है। बिजनी बन्दी हो सके, कर्तव्य सम्पन्न करना ही उचित है। वे लोग भी जब आनेको राजी हो गये तब पुष्पकर्म पका रहने देनेको मन नहीं चाहता। बाबू बेटी यह क्या व्यञ्जना नहीं किया ?

बिजया—नरेन बाबूको बही रात हुए बा रही है कसका बाबू।

राम०—ओ हाँ। व्यञ्जना, उसे बुलकर यही कह दो कि दो सी रुपए ही दिये जायेंगे।

बिजया—रुपए क्या गिन्की हैं ? एक आठमीकी सनक पूरी करनेके लिए दो सी रुपए नष्ट किये जायेंगे ? तुम उसीके लिए राजी हो रहे हो बाबू ?

राम०—बिजया स्तिम न होओ मेरा। तुम खगोके पास बहुत है—बन्ने दो दो सी। मे बाब यह दो सी रुपए। बडी बिजया हयामयी है। दुष्टी गरीबको सोकेस रुपए सहायता करनेके लिए अमर देना ही चाहती है तो उसके लिए तुम्हें लीसना न चाहिए। कस अब देर न करो मेरा, बैचरा होता आ रहा है—चलो। कस सवेरे बहुत काम करना है, बहुत संस्त है। चलो चलो।—चलता हूँ बिजया बेटी।

[ रातबिहारी आते हैं। बिजया भी बिजयाके प्रति कुछ कयास डालकर पिनाह पीछे पीछ जाता है। ]

बिजया—( लज्जित लम्ब रहकर )—कामीपद ।

[ नेपथ्यमें 'आता हूँ माजी' कहकर काशीपरका प्रवेश । ]

बिजया—कामीपद, चायद नरेन्द्र बाबू बाहर कही बठ हैं। उनको बुल ल।

( कामीपद सिर हिलकर जाता है । )

नरेन्द्र—( प्रवेश करके ) यह मशीन मैं साथ ही लिये आ रहा हूँ। लक्ष्मि आपका आग्रह दिन बहुत लगाव बीता। अनेक अधिप बातें मैंने भी आपको सुनाई और वे भी कह गय। क्या जाने किन्ना मुल बेलाकर आज आप सवेरे उठी थीं।

बिजया मैं तो कहती हूँ कि रोब ॥ उसीका मुँह देखकर उन्हें नरेन बाबू। बाहर लड़े लड़े आम्ने अपने जानाम ही तब मुना है, दर्शन करती हूँ कि आपक सम्पन्नमें वे लोग बा सब बातें कह गय हैं, वह तब उनकी अनधिकार पया है। कस मैं उन्हें यह पना दूंगी।

नरेन्द्र — हजारी क्या व्यग्रवस्त्रता है ! इन लक्ष पीबोपी पीरणा में होनेके कारण ही तो उनकी मेरे ऊपर संदेह हुआ है । नहीं तो मेरा अपमान करनेमें काम कुछ नहीं है । किन्तु रात होती जा रही है, अब मैं परेशान ।

विजया — कम या परतों क्या आप एक बार आ सकेंगे ?

नरेन्द्र — कम या परतों ? लेकिन उसके लिए तो समय न होगा । कम मुझे कमजोर बना दिया । बहो दो तीन दिन ठहरकर इसे बेचकर मैं बच निकलूँगा । अब फिर शायद मुझका न हो सकेगा ।

[ विजया की दोस्तों ऑल्टोमें ऑल्टो मर आते हैं । वह न बिर उठा सक्ती है, न कुछ बोल पाती है । ]

( कुछ हँसकर ) आप स्वयं इतना हँसा सक्ती हैं और आपको ही मामूली-सी बातमें कोब हो जाता है । बल्कि मैंने ही एक बार गुस्सेमें आपको 'मोदी बुद्धि' आदि न बने क्या क्या कह डाला था । किन्तु उसके तो नाश न हुई और ओठोंमें हँसने लगी जिससे मुझे और गुला आगवा । यदि फिर मुझका न मौ हुई, तो मैं आप मुझे हमेशा बच आयेगी ।

( विजया मुँह फिरकर ऑल्टो पोंकने लगती है । )

नरेन्द्र — वह क्या ! आप तो रो रही हैं । मा — मा, आप नहीं के लफेंगी, तो इसके लिए कोई हुआ न बीबिए । कमजोरमें मैं लचमुच इत बेच लूँगा, आप निन्दा न करें ।

[ हल्ला कहकर वह कमजोर की ओर की ओर हड़कर हाथमें उठा केना चाहता है । ]

विजया — न, मैं नहीं लूँगी । वह मेरा है । एक बीबिए ।

[ कमजोर के बेमकौ बहा न पानेके कारण विजया केबिचके ऊपर रत्ने मारकी-लपके ऊपर मुँह रककर रोने लगती है । हतबुद्धि होकर नरेन्द्र बग बेर लहा रहकर धीरे धीरे पल्ल जाता है । ]

## द्वितीय दृश्य

स्थान — ग्रामाधी राह

[ निम्नलिखित पुरुष और महिलाएँ विजयाके गौँव कुण्डपुरकी ओर धीरे धीरे चलती हैं । रंगमंचमें सभी एक साथ प्रवेश नहीं करते । दो बने प्रवेश करके अब चले जाते हैं तथा और दो-तीन बने प्रवेश करते हैं । ]

१ पुरुष—दयालु बाबू ही आपाज होगी, यह क्या पक्का हो गया है ?

२ पुरुष—हाँ, पक्का ठो है ही । सुना है, वह कल ही यहाँ आ पहुँचे हैं ।

१ पु०—मगर उनकी उपासना तो मैं सुन चुका हूँ, कहीं हृदयमारी नहीं होती । इसीसे दाऊके योगेश बाबूके यहाँ पिताक भाइमें सावेकसकी उपासना मुझे करना पड़ी थी । शरीर असुख था । कुप्रमक कारण मरता उसका हुआ था । मैंने बार-बार अस्वीकार किया लेकिन योगेशने नहीं छोड़ा । किन्तु कदवानिबिंदी बेसी अघर करवा है कि इस दीन हीनकी उपासना मुनकर उस दिन वहाँ उपस्थित सभी लोगोंने औत्सोचि बार-बार औत्सु बहने लगा—कहना चाहिए कि आमुओकी कही सग गई । औत्सोका तो कुछ कहना ही नहीं, भावक आवेशसे वे प्रायः विह्वल हो गई ।

२ पु०—इसमें क्या सन्देह है, आपकी उपासना ही एक स्वर्गीय वस्तु है ।

१ पु०—किन्तु तीस रुपयेसे कममें तो दयालु बाबूका गुजर हो नहीं सकता ।

२ पु०—क्या कहते हैं प्रमात बाबू, तबत रुपए ? बनमासी बाबूके इस्तेमालमें उन्हें कुछ साधारण-सा काम भी करना होगा । सुना है, उन्हें सत्तर रुपये दिये जायेंगे । परका किराना तो कमोगा ही नहीं ।

१ पु०—कहते क्या हैं ? सत्तर रुपए । ईश्वर उनका मेताब करे ।

२ पु०—इसके अन्वावा सुना है कि बनमासी बाबूकी कड़की बेसी मुरीब है, बेसी ही दबामकी । प्रसन्न हो गई तो एक सौ रुपए बेतन मिलना भी विचित्र नहीं है ।

१ पु०—एक सौ ! ईश्वर उनका कस्साज करे । कहीं अच्छी सत्तर है । बरत सब पसिय, किन्तु उनकी प्रात-कासकी उपासनामें शामिल हो सकें । (प्रस्थान)

[ तीसरे, चौथे और पाँचवें व्यक्तिज प्रवेश । साथमें दो महिलाएँ हैं । ]

१ पु०—वह ब्याह अगर हुआ तो कहना हा होगा कि बनमासी बाबूकी कन्या कहीं माम्पत्नी है । विवर्गविहारी अति सुपुत्र है । वेमे बलवन् बेस ही उद्यमशील । उनमें बेसी भगवद्-भक्ति है बेसी ही अपने धर्मपर निष्ठा भी । उन्हें अघर समाजका उशीरमान श्रम कहना बाब तो मैं कुछ असुखि न हागी । भावकके बहुत-से शिषित विरक्तवासे मुनकोके लिए वह दयामत या भादय है ।



४ पु०—वनमाझी बाजूची सम्पत्ति क्या बहुत अधिक है ?

३ पु०—अधिक ! अरे जयाप है अगाध । बितनी बर्फीदारी है, उतनी ही नमदी । वनमाझी बाजू एकमात्र कच्चाके लिए बहुत वैमल्य छोड़ गये हैं । मैं कहे देता हूँ, जिसस बाजूके हाथमें आकर वह सब बड़े गुना हा बावगा ।

५ पु०—किन्तु मुनते हैं, यह पुरक कुछ स्वभाषी है ।

३ पु०—स्वभाषी नहीं स्वभाषी है । सत्यस्य वह आदर करता है ।  
( पक्षी महिषको हथारेसे दिखकर ) मेरी जी द्वारा प्रतिष्ठित महिष-विद्या-बन्धो उसने वनमाझीकी कच्चा विवराके हाथसँ सौ रुपयोंकी सहायता दी है । उसमें पुरस्कार किरानके लिए और भी सौ रुपयोंका बचन दिया है ।

१ महिष—राहमें ये सब बातें करनेकी क्या जरूरत है ?

४ पु०—तब तो बाकिअ विद्यालयकी ओर उन लोगोंका बहुत रुकाव है ।

३ पु०—सुख ! अभी, मुस्तहल है ।

४ पु०—मुस्तहल है ! लू लू, मंगलमन उनका मगक करें । ( प्रवान )

[ छटे और सातवें व्यक्तिअ प्रवेश ]

३ पु०—ना, अरे बुर नहीं है, हम लोग आ पहुँचे हैं ।—हाँ, वनमाझी बाजूची सारी बावदास्तक देखने-माखने और तैमाखनेका मार रातबिहारी बाजूके ऊपर ही है । केवल इसी समय मही, पक्षेसे ही यह व्यवस्था बन्धी आ रही है । वनमाझी बचते गौनधे छंड़ गये उसने फिर लौटकर आये ही नहीं ।

७ पु०—उनकी कच्चाक साथ क्या रातबिहारी बाजूके कहकेका प्याह पखा हो गया है ?

३ पु०—पखा तो है ही । यह सम्भव कच्चाके पिना स्वयं कर गये । एकाएक उनकी मृत्यु न हा जाती तो वह आप प्याह कर जाते ।

७ पु०—वह प्याह क्या गौनधे ही होगा ?

३ पु०—वह बाल तो रातबिहारी बाजूने उल दिन थाप ही करी । केवल बही नहीं, प्याहके बाद बेरा और बहू बही गौनधे रहेंगे । शहरके अनेक प्रबन्धनोंके भीतर उन्हें न मेरेगे, बही उनका विचार है । कमसे कम किन्ने दिन वह चले हैं वह तक । जातकर इतनी बड़ी सम्पत्ति बुरसे या बेबी-मुनी

नहीं था सज्जती—नष्ट होनेका डर रहता है। वह अपने जीवनकालमें ही वह सब काम-काज सड़केको सिला बाँधेंगे।

७ पु०—बहुत ही अच्छे विचार हैं। ब्याह होगा कब ?

६ पु०—इच्छा तो यही है कि जितनी कम्पनी हो सके। मेरी जानमें मन्दिरकी प्रतिष्ठाके साथ साथ आप खेगकि सामने ही बात पक्की हो जायगी। यह कहे मुझका ब्याह है अविनाश बाबू। बर-बभूके ऊपर मगवान् अपना कुम हाथ रखें—हम यही प्रायना करते हैं। यक्षिण, इस बागके उस छोरपर ही कनकस्थी बाबूका घर है।

७ पु०—आप क्या पहले कमी नहीं आये थे ?

६ पु०—( हँसकर ) बहुत दूरे। रसबिहारी बाबू मेरे बहुत दिनोंके पुराने मित्र हैं। उन्होंने अपने घरमें कहावा है कि नवीन मन्दिरका भवन नदीके उस पार है—वहीं बरा दूरपर हम खेगोंके ठहरनेकी जगह मी कवाई गई है। किन्तु निववाकी इच्छा है कि आप सबेरे एक छोटा-सा अनुष्ठान उनके अपने रहनेके घरमें ही हो जाय और उसके बाद हम खेग मन्दिर भवनमें जायें।

७ पु०—अच्छा प्रस्ताव है। यक्षिण, धावद हम खेगोंको देर हो गई।

( प्रस्थान )

## तृतीय दृश्य

स्थान—विष्वाके घरमें नीचेका हल

समय—दिनका पहला पहर

[ विष्वाके घरकी नीचेकी बड़ी दाखन फूल-पत्तियोंसे बहुत कुछ लवाई गई है। बीचमें लगे रसबिहारी और निष्ठाबिहारी यह बौंच रहे हैं कि कहीं कोई मुक्ति तो नहीं रह गई है। इसी समय सख्त समागत अतिथि खेग एक-एक करके प्रवेश करते हैं। ]

रस०—( हाथ जोड़कर ) स्वागतम् ! स्वागतम् ! आप केकड यह घर

ही नहीं, हमारा तारा गौन बाप बोगोंकी परब-रबते घम्य हो गया। बाप  
में घम्य हैं। बाप बोग बातनोपर विराजिए।

१ पु — हम बोग मी ठही तरह घम्य हुए हैं एतविहारी बाबू। ऐसे  
पुन्यभारमें कुम्हने बाहर शामिल हो छटना बीननका सीमाव्य है।

एत०—रस्तेमें कुछ क्लेश तो नहीं हुआ।

तब—ना ना कुछ मी नहीं। कोई क्लेश नहीं हुआ।

एत०—होना मी नहीं चाहिए। पर तो उनकी सेवाके लिए, उनके  
कामके लिए ही बाप आगेका माना हुआ है—मानव-जातिके परम कल्याणके  
लिए ही तो बाप हम सब वहाँ गया हुआ है।

१ पु०—मैं खिन्नि। ओ खिन्नि। ओ खिन्नि।

एत०—खराबत कामकी बाबूकी क्या किम्मा बीर उनके मरी  
मात्र किम्मतविहारी—यह अनुमान उम्मीद है। मैं कोई नहीं हूँ—कुछ  
ही नहीं हूँ। काली इसे भौल्लोसे देकर पुन्य-संभव कर जाऊँ, वही मेरी  
रक्षण कायना है। बेदा विपत्त, बेटी विजयाको बाहर अभी बाहर नहीं  
हुई। बाबूपरको कुलकर कर हो कि पूजनीय अतिथि सब आ पहुँचे हैं।

किन्तु०—केकिन उसे बाहर पना चाहिए बा।

१ पु — कुना है दवात बाबू पहले ही आ गये हैं। क्यों, वह तो—

एत०—कुम्हानका आते ही वह असुर्य हो गये थे। पर बाप अच्छे हैं।  
आते ही होंगे।

१ पु — बाबावर्क काय तो ?

एत०—हाँ, वही करेगे, वह सब हुआ है—वह बीजिए, नाम केने ही वह  
आ गये—आइए आइए दवात बाबू, आइए। शरीर तो सब सुरक्ष है।

(दवातबाबूका प्रवेश और लक्ष्मी अभिवादन करना।)

एत०—मेरा मी शरीर सुरक्ष है सब बाहर सब नहीं से लक्ष्मी, किन्तु  
उनसे (ऊपर देकर) बाबावर्क प्रार्थना कर रहा है कि बाप शीघ्र आरोग्य  
बाबू छम कर्ममें कोई किन्तु न हो।

[इसके बाद कुछ देर तक लक्ष्मी कुल-प्रान्त यच्छते हैं और प्रीति-संभा  
होता है। फिर सब अपनी अपनी बगलपर बैठ जाते हैं।]

राज०—मेरे दृश्य-सुहृद् बनमाझी आज स्वर्गमें हैं। भगवानने उनको अस्मयमें ही अपने पास बुला लिया। भगवानकी भगवत्पद दृष्टाके विरुद्ध मेरी कोई नाखिल नहीं है। मगर वह मुझे कैसा बनाकर छोड़ गये हैं, इच्छा अनुमान थाप छोड़ मुझे बाहरसे देखकर नहीं कर पावेंगे। हम दोनों अभिस-हृदय मित्रोंकी यैठकी पड़ी प्रतिदिन निष्कट होती पथी आ रही है, वह आमत-मुझे हर पड़ी मित्र रहा है। तथापि उस पथीके वारधोंमें यही प्रार्थना है कि मेरी वह अन्तिम पड़ी और भी निष्कट पहुँचा दें।

[ रातबिहारी कुर्सेकी आस्तीनसे औलें पोंछकर व्यायामप्रवृत्तिसे हो जाते हैं। उपरिष्ठ अम्बामय ओग भी कैसा ही भाव जारण कर लेते हैं। बोली बेर तब चुप रहते हैं। ]

राज०—बनमाझी आज हम ओगोंकी बीच नहीं हैं—वह बड़े गये हैं। किन्तु मैं औलें मूरते ही देख पाया हूँ कि वह सामने लगे मुकाम रहे हैं।

[ सभी औलें मूर लेते हैं। इसी समय विजया और विस्मय प्रवेश करते हैं। विजयाके मुकाम विपाद और वेदनाके विह्वल गहरे और बने हो आये हैं और वे स्पष्ट दिखाई देते हैं। ]

राज०—यही उनकी एकमात्र कन्या विजया है। वह विजयाके सभी गुणोंकी अधिकारिणी है।—और वह मेरा बेटा विजयविहारी है, जो कर्तव्य-पथमें कठोर और उत्कृष्ट पथ लेनेमें निर्भीक है। ये दोनों बाहरसे अस्वहदा दिखाई देनेपर भी हृदयसे—हाँ, और वह हमदिन भी निष्कट आ रहा है, किन्तु दिन फिर आय ओगोंकी वारधोंके कल्याणसे इन ओगोंका सम्मिलित नहीं बन कर रहेगा।

दयाल—( अस्फुट स्वरमें ) ओ स्वस्थि ।

राज०—बेटी विजया, यही तुम्हारे मन्दिरके होनेवाले आचार्य दयालजन हैं। इन्हें प्रणाम करो। और ये सब तुम्हारे सम्मानित पूजनीय अतिथि हैं। वे बहुत कठोर स्वीकार करके तुम ओगोंके पुण्य कार्यमें सम्मिलित होने आये हैं। इन सबको नमस्कार करो।

[ विजया हाथ छोड़कर नमस्कार करती है। वह दयाल बाबू विजयाके पाठ जाकर लगे होते हैं। ]

दयाल (विजयाका हाथ पकड़कर) आम्हो बेटी, आम्हो ! मुझ देखकर ही जान पड़ता है, कैसे बेटी मेरी बहुत दिनोंकी बानी-पहचानी है !

[ इतना कहकर लीजकर विजयाको अपने पास बिठाते हैं । अनेक होठ बचाकर मुसकाने लगे । ]

रास — दयाल बाबू, मेरे लहावरसे अधिक स्वीय बनमासीको यह शुभ कर्म — एकमात्र कन्याका विवाह — औलोसे देख जानेकी बड़ी छाप थी, किन्तु मेरे ही अपराधसे यह पूरी न हो पाई । ( कुछ देर चुप रहकर एक छोटी लौट झेककर ) लेकिन अब मुझे हाथ आ गया है । इसीसे अपने शरीरकी ओर देखकर इसी आगामी अग्रहणसे अधिक विजय करमेका चाहत नहीं होता । क्या बाने, मैं भी न कहीं यह ज्वाह औलोसे बिना देखे ही चला जाऊँ ।

दयाल — ( अस्फुट स्वरमें ) — ओम् शान्ति ! ओम् शान्ति !

रास — ( विजयासे ) बेटी, तुम्हारे पूज्य पिता और तुम्हारी छोटी साखी बननी दोनों पहले ही स्वर्ग सिवार चुके हैं, नहीं तो यह कत आब मुझे तुमसे न पूछती पड़ती । अम्मा न करो बेटी, यह बा आब इसी बगह इन पूजनीय अतिथिवाको इसी आगामी अग्रहणके महीनेमें ही फिर एक बार इस घरमें बरज-भूमि डालनेका निर्माण कर रक्खें ।

विजया — ( अन्वष्ट कंठसे ) बाबूजीकी मृत्युके एक ताकटे मीतर ही क्या — ( आगे बोलत नहीं जाता )

रास — ओ, ठीक तो है बेटी, ठीक कहा तुमने । इन्का मुझे खयाल ही न था । लेकिन तुम मेरी मा भी हो कि नहीं, इसीसे थुड़े बटेकी मूख क्या ही । ( विजया औलोसे औलोसे पोछती है ) नहीं होगा । लेकिन तब बीतनेमें जो तो अधिक सिक्क नहीं है । ( लक्ष्मी और देखकर ) अच्छा आगामी वैशाखके महीनेमें ही यह शुभ कर्म तय्य होय । अथ स्योयेंके निकट हमारी यह बात पक्की रही — मेरा विवाहविवाही, देर हो रही है । अब इन स्योयेंके ठर घरमें बानेकी व्यवस्था कर दो । — आइए आप जेग ।

[ विजयाको छोड़कर लक्ष्मी जाते हैं । किन्तु दयाल बाबू अग्रमरमें ही जेद भाव है । ]

दयाल — ( फिर आकर ) बेटी विजया ।

विजया—( चौकड़ फिर अपनेको सँभालकर ) आइए ।

दयाल—वे सब दिपड़वाले घर गये । मिमस बाबू उनके ठहरनेकी व्यवस्था करनेके बाद अपने दफ्तरमें चले गये । मुझसे भी साथ चलनेको कहा, किन्तु मेरा बानेको भी नहीं चाहता । सोचा, इसी अफसरपर बेटी विजयासे दो-चार बातें कर लें । ( एक कुर्सीपर बैठकर ) लकी क्यों हो बेटी, तुम भी बैठो ।

विजया—( सामनेकी कुर्सीपर बैठकर शक्ति कण्ठसे ) आप क्यों नहीं गये ? आपको घनेमें छे घूप हो जायगी, दिन चढ़ जायगा ।

दयाल—हो जाय । क्या सी देर हो जानमें मेरो कोई छति न होगी । तुम्हारे साथ हो पड़ी बात करनेके जोम्मे में दबा नहीं सक्र । मैंने बहुत देखा-सुना है, किन्तु तुम्हारी वैसी कम अकरबाम चमके प्रति ऐसी निद्रा मैंने नहीं देखी । भ्रातृन्के आशीर्वाहसे तुम छोणोका यह महत् उद्देश्य दिन-दिन भीष्टिसे प्राप्त हो । लेकिन बेटी, तुम्हारा मुल देलकर मुसे धान पड़ा बैठे तुम्हारा मन सुखी नहीं है । क्यों ठीक है न ?

विजया—आपने कैस जान लिया ?

दयाल—( मुसक़र ) इतका अरज यह है कि मैं बूढ़ा हो गया हूँ बेटी । कड़के-बाते अमुकी होते हैं वो बूढ़ोको माखम हो जाता है ।

विजया—लेकिन समी तो नहीं जान पाते दयाल बाबू ।

दयाल—छे ठी मैं नहीं जानता बेटी । लेकिन मुसे तो बही माखम पड़ा और इसीलिए मैं तुमसे मिले बिना नहीं जा सक्र, फिर छैट आया ।

विजया—अच्छा ही किया दयाल बाबू ।

दयाल—किन्तु एक मामनेमें तुमका साथबान कर हूँ । बूढ़े लोग कज्जा बहुत पउन्द करते हैं । मेरा भी भी चाहता है कि तुम्हारे पास बैठकर थोड़ी देर बक लें, लेकिन डरता हूँ, कहीं इससे तुम लीश न उठो ।

विजया—नहीं नहीं, लीशगी क्यों । आजकी वो इच्छा हो, करिए न मुनना मुसे अच्छा ही लगता है ।

दयाल—लेकिन इसीलिए बूढ़ोको अधिक प्रभाव भी न देना बेटी । फिर ऐक न पाओगी । और भी एक कारण है । मरे एक कइकी दुर्ग पी, वो थोड़ी ही उम्रमें मर गई । अगर वह बीसी रहती तो तुम्हारी ही अकरबाम्नी होती । तुम्हें बरत देला है, उसके बत उलीका लवाल आ रहा है ।

विजया—आपके छावद और बेटी नहीं है।

दयाल—बेटी भी नहीं है, बेटी भी नहीं है, केवल हमी बुद्धिवा नहीं  
होती हैं। एक मानवीको हमने प्राप्त-प्रेता था। उसका नाम नकिनी है।  
अतिशयमें सुखी होनेके कारण वह भी मेरे साथ नहीं आई है। कुछ अस्वस्थ है,  
नहीं तो—

( सहाय्य निवृत्तता प्रवेश ) ।

किमल०—( विजयाके प्रति कष्ट भावसे ) वे क्यों चले गये, हमने एक घर  
उत्तरी खरर तक न की। इसे कर्मभारी व्यवहारा करते हैं। वह मैं किमल  
पक्ष नहीं करता। ( दयालके प्रति उससे भी अधिक कठोर भावसे ) आपसे  
भी मैंने उन लोगोंके साथ जानेको कहा था। तो नहीं न बाहर नहीं बैठे  
व्यथा कर रहे हैं।

दयाल—( अत्यन्त भावसे ) विजयाके साथ हो-धार पाठ करनेको—अच्छ  
तो अब मैं जाता हूँ।

विजया—नहीं। आप बैठिए। देर हो गई है, यहाँ जा-वीकर फिर जा  
सकेंगे। ( निवृत्तसे ) इनके साथ जानेसे क्या उन लोगोंको विशेष  
सुविधा होती ?

किमल—उनकी देखभाल कर लवत।

विजया—वह इनका काम नहीं है। उन लोगोंकी तरह दयाल बाबू भी  
मेरे अतिथि हैं।

किमल०—नहीं, इन्हें अतिथि नहीं कहा जा सकता। अब वह इच्छेके  
कर्मचारी हैं। इन्हें मातृक देना शीघ्र।

[ विजयाका मुल कोणसे आकर हो उठा, पर उसने धाम्य स्वरमें ही कहा— ]

विजया—दयाल बाबू हमारे मन्दिरके आचार्य हैं। उनके हस्त सम्मानको मूक  
बान्ध अस्फुट होमनी बात है किमल बाबू।

किमल०—( कष्ट स्वरमें ) उस सम्मानका बोध मुझको है तुम्हें पाद  
न सिद्धना होगा। लेकिन दयाल बाबू केवल आचार्य ही नहीं हैं—इनका और  
काम भी है। वह स्वीकार करके ही वह आये हैं।

दयाल—( व्यक्त भावसे लगे हँसकर ) बेटी, मुझसे अपराध हुआ—  
मैं भग्न जाता हूँ।

विद्या—नहीं। आप बैठिए, आपके साकर बाना होगा। और बैठन तो नहीं देते, मैं बेटी हूँ। अगर अपने साथ दो बड़ी बात करनेको मैं दुरा नहीं समझती तो समझना होगा कि आपके कर्त्तव्य-पात्रनमें जुड़ि नहीं दुर, फिर स्वयं बाबूजी कर्त्तव्यकी चारणा कुछ भी क्यों न हो।

विद्युत—ना, कर्त्तव्यकी चारणा हम लोगोंकी एक नहीं है, और मैं तुमसे करनेको अनार हूँ कि तुम्हारी चारणा गलत है।

विद्या—तो फिर वह गलत चारणा ही मेरे यहाँ चलेगी विद्युत बाबू।

विद्युत—तो क्या तुम्हारी गलत चारणा ही स्वीकार कर लेनी होगी?

विद्या—स्वीकार कर लेनेको तो मैंने कहा नहीं; मैंने तो यह कहा है कि यही यहाँ चलेगी।

विद्युत—तुम जानती हो, इससे मेरा अपमान होता है।

विद्या—( घनिक हँसकर ) सम्मान क्या आपके आपकी ही और रहेगा?

दयाल—( व्यक्त भावसे उठकर कचे होकर ) बेटी, अब मैं जाता हूँ। बाकर देखें, उन लोगोंको कोई अशुविधा तो नहीं हो रही है।

विद्या—ना, यह न होगा। हमारी बातचीत अभी समाप्त नहीं हुई, आप बैठिए। ( आप ऊँचे स्वरमें ) काशीपर।

काशीपरने दरवाजेके पास सिर निकालकर कहा—क्या है माँबी?

विद्या—परेशकी मते कह दो कि दयालबाबू यहाँ मोहन करेंगे। मरे खेनेके कमरेके कमरेमें उनके लिए बगह कर दे।—बसिए दयाल बाबू, हम लोग ऊपर बैठक बैठें।

[ विद्या और उसके पीछे दयाल बाबू बीरे-बीरे जाते हैं। विद्युत समझ उठ और खल बल आँखोंसे देखते रहकर फिर बल देता है। ]

### चतुर्थ दृश्य

स्थान—घरक एक हिस्सेका पत्र हुआ बरामदा

[ नरेन्द्रका प्रवेश। साहसी प्रवेशार्थमें है। दोषी उठारकर कमरेमें दयाल और हाथी छी एक और बाड़ी कर देता है। ]



नरेन्द्र—(इधर उधर ताककर) ओह—कहीं धरा छी मी हवा नही, हवाका नाम-निधान नही है। फिर इस बिनासीय पोशाकने कैसे और आकुल कर दिया है। इधर क्या ओई नही है? ओ, वह कासीपद आ रहा है—

(कासीपदका प्रवेश)

नरेन्द्र—कासीपद, क्या अपनी मातङ्गिनको क्या कहर दे लखे हो।

कासीपद—कहर देनेकी जरूरत नहीं, माफी इधर ही आ रही है। मीठ बचके बैठिए न बाबूजी।

नरेन्द्र—ना मेरा, मीठर पुच्छर अपना हम कुत्ताना नहीं चाहता मैं। वहींसे काम करके माँगूँ। बारह बजेकी घड़ीसे ही खैरना होगा।

कासीपद—हाँ बाबूजी, बाबू कभी चली है, कहीं मी हवा नही पसंदी। अपना कहिए तो वही एक कुर्ती बैठनेके लिए आ दें, बैठिए।

[कासीपदने कुर्ती आ बी। नरेन्द्रने बैठकर टोपी पेटोके पल रखकर सिर ठठाकर कहा—]

नरेन्द्र—अरे सामनेकी वह सिक्की क्या लोह तो हो, हवा घाबर आये, घोंत से लँके, भाव बने।

कासीपद—वह बचक मई है, लोहे नहीं सुकती। इस बच कद्दई कहेंसे कौन बाबू!

नरेन्द्र—कद्दई का मिर्चीका इसमें क्या काम है रे? सिक्की-दबजि क्या हम कद्दईसे सुक्यते हो और रातको भीठे ठोकर कर कर बेठे हो।

कासीपद—बी नहीं। यही सिक्की लोहे नहीं सुकती। मातङ्गिन कई दिनसे कद्दई सुककर इसे सुकमानेको कह रही है।

नरेन्द्र—ऐसी बात तो मैंने कहीं नहीं सुनी। कहीं, देखूँ धरा। (फल बाहर फला लीचकर सिक्की लोह देता है) क्या कलकर फले बैठ गये थे, कल। अच्छे, अब बाग अपनी मातङ्गिनको तो बुला दो।

कासीपद—सीकिए, वह आ रही है।

[बिनाका प्रवेश साथ ही नरेन्द्रका उधर घूमकर देखना]

नरेन्द्र—नमस्कार । वाह—इस समय आप कैसी सुन्दर दिखाई दे रही हैं ।  
 वो भी बिज बनाना जानता है, उसीको बिज बनानेका भी पाहेगा ।

बिजया—बाबू काशीपद, मेरे बैठनेके लिए कुछ ले आओ, और बाबूके लिए चाय बनानेको कह दो ।—घान पड़ता है, अभी आपमें चाय नहीं पी ।

नरेन्द्र—ना । कमरसेसे सवेरे ही खान दिया था । स्टेशनसे सीढ़े नहीं आ रहा हूँ ।  
 ( काशीपदका प्रस्थान )

बिजया—आपको क्या मैंने अपनी तस्वीर बनानेका बहाना लेनेके लिए बुझाया है वो आपने मुझे इस तरह अपव्रथ किया ?

नरेन्द्र—अपव्रथ क्यों किया ?

बिजया—नौकर-चाकरोंके सामने क्या इस तरह कहा जाता है । आपमें क्या समझ निस्तुब्ध नहीं है ?

नरेन्द्र—( व्यथित मुद्रासे ) हाँ यह ठीक है । सम्मुख मछली हो गई ।

बिजया—अब कभी ऐसा न हो ।

( कुर्ती लेकर काशीपदका प्रवेश । )

काशीपद—कह आया बिटिया रानी । चाय ही कुछ खानेकी चीज खनेको मी कह आऊँ ?

बिजया—हाँ, कह दो बाबू ( एकएक सिट्कीतर नजर पड़ जाती है । )—  
 मध्य एक घण्टा तो मुनो काशीपद ! तुमने किससे सुझाया यह सिट्की ?

काशीपद—( नरेन्द्रकी ओर इशारा करके ) आपने ही सोझी है ।

[ इतना कहकर वह बाहरसे एक छोटी तिपाई खरकर नरेन्द्रके पास रखकर खस जाता है । ]

बिजया—( नरेन्द्रसे आश्चर्यके साथ ) आपने सोझा ? कैसे सोझा ?

नरेन्द्र—कैसे क्या हाथसे लीचकर ।

बिजया—काशी हाथसे लीचकर सोझा ? और ये सब खोप करते थे कि हाथसे नहीं खुस सकती । आपके हाथ क्या होदेके हैं ?

नरेन्द्र—( हैरत ) हाँ मेरी नैयबियाँ कुछ खसत हैं ।

बिजया—( हैसी इशारे ) आपका माया ही क्या कम खसत है । बग-सी टकरसे किसीका भी माया पट सकता है ।

[ नरेन्द्र खेरसे हा-हा-हा कर उठता है । इसके बाद जैसे नोट निकलकर स्प्रिंगपर रक्ता हुआ पड़ा है— ]

नरेन्द्र—ये बीबिए अपने दो लो रूपए । बीबिए मेरी वह दूटी मछीन । ( बग हैसकर ) मैं कुम्हारनोर हूँ, ठग हूँ, और न जाने क्या क्या गालियाँ इन कुछ रूपएके लिए आपने मुझे कहा मेरी थी । बीबिए अपने रूपए, बीबिए मेरी पीब ।

विजया—ठग कुम्हारनोर बगेर मैंने कितने कहा मेरा था !

नरेन्द्र—बिचके हाथ रूपए मेरे थे, उसीने तो वह लव कहा था ।

विजया—उठ आलमीके मुँहसे और क्या कहा मेरा था, कुछ पार है !

नरेन्द्र—ना, मुझे पार नहीं है । कैर होगा अब वह मछीन जानेको कह बीबिए । मैं दोपहरकी दूनसे ही कच्चेसे बीट बाँटंगा । और हाँ, मैं कच्चेसे ही एक नौकरी पा गया हूँ । बहुत दूर नहीं जाना पड़ा ।

[ विजयाका चेहरा कमक उठता है । ]

विजया—आपके गान्ध अन्ते हैं । रूपए क्या उन्होंने ही दिये हैं ?

नरेन्द्र—हाँ, लेकिन मरा वह मारमोस्कोप जानेके लिए वह बीबिए । मेरे पास अधिक समय नहीं है ।

विजया—लेकिन क्या आपके साथ बड़ी छत हुई थी कि आप दवा करके रूपए लाये हैं, इसलिए चम्पट मछीन बीट देने की सीपी ।

नरेन्द्र—( अन्धित होकर )—ना, ना, वह बात नहीं है । मगर वह दूटी है न, और आपके किसी कामका नहीं है, इसीसे मैंने सोचा कि आप बीट देनेके लिए तभी हो बाँटेंगी ।

विजया—ना, मैं राखी नहीं हूँ । मैंने बैचकर देखा है, उसे मैं अनायास ही बार लो रूपएमें बेच सकती हूँ । वो लो रूपएमें क्यों हूँ ?

नरेन्द्र—( सीधा होकर उठ बैठता है ) अच्छा, आप बच बीबिए । मुझे म पारिए । वो लो लो रूपएके दो दिन पार ही बार लो रूपए मेंगता है, उससे मैं कुछ भी नहीं कहना चाहता ।

[ विजयाने फिर हाँकाकर बड़ी मुश्किलसे हँसीको दबाया । ]

नरेन्द्र—मैं नहीं जानता बसि जानता कि आप एक शायसङ्गक \* हैं !

बिजवा—शायसङ्गक ! लेकिन जब कबमें आपका घर-झर, आपका उर्वस्व मैंने हकप किया, तब क्या आपने नहीं समझा था कि मैं शायसङ्गक हूँ !

नरेन्द्र—नहीं समझा था; क्योंकि उसमें आपका कोई हाथ न था। वह कम आपके पिताजी और मेरे बाबूजी, दोनों कर गये थे। हममेंसे कोई उसके लिए भयभीत नहीं है।—अच्छा, अब चला हूँ।

बिजवा—जाँचेंगे कैसे ? आपके लिए क्या करना गया है न ?

नरेन्द्र—मैं आप पीने नहीं आया।

बिजवा—मगर मिलके लिए आये थे, वह तो सचमुच ही नहीं हो सकता। चार सौ रुपएकी चीज आपको दो सौ रुपएमें कौन देगा ? आपको कच्चा माक्स होनी चाहिए।

नरेन्द्र—मुझे कच्चा माक्स होनी चाहिए ? ओः—आप तो बड़ा आदमी हैं !

बिजवा—हाँ पहचान रहिए। आपका फिर ठगनेकी श्रेष्ठि न करिएगा !

नरेन्द्र—ठगना मेरा पेशा नहीं है।

बिजवा—तो फिर क्या पेशा है ? बान्सी ? हाथ बेचना जानते हैं ?

नरेन्द्र—मैं क्या आपके उपहासका पात्र हूँ ? रुपए आपके यहाँ डेरों रह सकते हैं—किन्तु रुपएके धोरसे किसीकी हँसी उड़ानेका अधिकार किसीको नहीं मिला जाता। आप क्या समझ-बूझकर मुँहसे बात निकालिएगा।

[ नरेन्द्र अपनी धड़ी उठाकर जानेको उत्थन होता है। ]

बिजवा—नहीं तो क्या होगा, कहिए न ! आपके हाथमें धोर ही नहीं, धड़ी भी है, यही तो !

नरेन्द्र—( धड़ी फेंककर हाथा मात्से बैठ जाता है। ) छिः छिः—आप

\* दोस्तपियरके नाटकका एक बहुदली पात्र, जो बड़ा कोभी था। उसने एक आदमीको इस घतपर आज दिया था कि नियत समय पर रुपया भेदा न किया गया तो वह झुकीके छरीरसे सेरमर मांस काट लेगा। अन्तको वह अदाकारने कहा कि नहीं मानते तो मांस काट दो, पर रक्त एक बूँद न मिरे, क्योंकि धर्म केवल मांसकी है, तब वह परास्त हुआ।—अनुवादक।

मुझे वो आता है, वही कह देती है। आपसे मैं जीत नहीं सकता।

विजया—यह कत याद रखिएगा। लेकिन जब आपहीके कारण मुझे डेर हो गई, परसे न निकल सकी, तब आपका भी जाना नहीं होगा। मगर आप निश्चय ही हाथ देकर जानते हैं।

नरेन्द्र—हाँ, जानता हूँ। किन्तु हाथ देकरा होगा? आपका?

विजया—( सहसा अपना हाथ आगे बढ़ाकर ) देखिए तो, मुझे क्या है या नहीं।

नरेन्द्र—( नाड़ी देखकर ) छल ही आपको हुआ है। मात्स्य क्या है।

विजया—कल रातको थोड़ा हुआ हो आया था। लेकिन वह कुछ नहीं है। मैं अपने लिए चिन्ता नहीं करती। लेकिन उस परेश छोड़के तो आप जानते हैं—तीन दिनसे उसे कुछ हुआ है। वहाँ कीरें आपका डाक्टर नहीं है।—कालीपद। ( कालीपदका प्रवेश। )

विजया—परेष्मी मासे करो, परेशको यहाँ ले आए।

नरेन्द्र—नहीं यहाँ कालेशी बसता नहीं। कालीपद, जबसे तो, परेश यहाँ खड़ा है, वही मुझे ले चले।

कालीपद—पक्षि।

[ नरेन्द्र और कालीपदका प्रस्थान। घूसरी ओरसे नखिनीका प्रवेश। ]

नखिनी—( विजयासे ) नमस्कार।—मेरा नाम नखिनी है। बसतब कबू मेरे मामा होते हैं।

विजया—ओ, आप हैं। बैठिए। मंत्रिस्त्री स्थापनावाले दिन आप बहुत बी, इसीसे परिचय करनेके लिए मैंने आपको तत्कालीन नहीं की। उसके बाद ही सुना कि आपकी मामी बीमार हैं, इस कारण आप उनके पास चली गई हैं।—किन्तु क्या पड़ता है, जैसे पहले कहीं आपको देखा है। कबू, आप क्या बेचूँ ( कालीपद ) में पड़ती थी।

नखिनी—जी हाँ। लेकिन मुझे तो बाद नहीं आ रहा है।

विजया—बाद न आनेमें भी कोई आपका दोष नहीं है। मैं अस्मर देहात्रि रह करती थी। अस्मर सभी विषयोंमें फेस होकर मैंने पढ़ना छोड़ दिया। मुना, अब आप J. E. C. ( जी. एल. सी. ) की परीक्षा दे रही है।

नखिनी—हाँ, अब मुझे बाद आ रहा है आप एक बहुत बड़ी धानदार गाड़ीमें बैठकर नखिनीमें जाती थीं ।

विजया—नबरमें पड़ने खयक और कुछ तो है नहीं इसीसे गाड़ीसे ही खोगोकी नबर अपनी ओर लीचती थी । इसके खिच समा करना उचित है ।

नखिनी—बह न कहिए । नबर पड़ने खयक आपमें भी अगर कुछ न हो तो कहना होना कि कष्टमें चोड़े ही खोगोमें ऐसी विशेषता है ।—अच्छा डाक्टर मुसबरी कहीं गये ?

विजया—रोगीको देखने गये हैं उस आते ही होंगे । लेकिन आपने कैसे जाना कि वह यहाँ आये हैं मित दास ? ( नरेन्द्रका प्रवेश । )

नखिनी—झीबिए, ये डाक्टर मुसबरी आ गये । ( विजयासे ) हम खोगो कल-कपेसे एक ही गाड़ीमें आये हैं । स्टेशनपर आकर देखा, हा मुसबरी लड़े हैं । उस दिन मंदिरमें बैब-संयोगसे उनसे मेरी जान-पहचान हो गई थी । कुछ उनका सामान पड़ा रह गया था, वही लेने आये थे । आब फिर हातका स्टेशनपर अचानक उनसे मेल हो गई । उन्होंने भी कहा कि वह यहाँ ठहर नहीं सकेंगे, इसी कारण बनेकी गाड़ीसे खीटेंगे, और मुझे भी साथ ही कलकसे अवसर खीटना चाहिए ।

विजया—( ईत्कार ) आप खोगोका केवल बैबसंयोगसे परिवार और एक यात्रीस आना ही नहीं हुआ, बैबसंयोगसे एक ही गाड़ीस खीटना भी होगा । देखा बैबसंयोग तो एक साथ संसारमें देख नहीं जाता ।

नरेन्द्र—इसके मामले ?

विजया—( नखिनीसे ) इसके पान उन्हें यात्रीमें समझा तो देना मित दास ।

नखिनी—( नरेन्द्रसे ) आप यहाँका सब काम कर चुके ?

विजया—नहीं, काम पूरा नहीं कर पाये । यहाँ सदस्य सबका था । किन्तु उठके बरसे एक रोगी पा गये हैं । यही कहास्त हुई कि " मय इविर मुक्तिपाम । " ●

● इस ईदक्य कहास्तका मतलब यह है—विजया सब कुछ नष्ट हो गया था कुछ नहीं रहा, उतकी कुछ साधारण बीमका रूप जाना ।

नरेन्द्र—( विगड़कर ) आपका इतना भी चाहे मेरा उपहास कर डीबिए, किन्तु सक्ता पहरण भी एक दिन ठगा जाता है, वह भी जान रखिए । मैं आपको चार सौ रुपए ही काँवूँगा, लेकिन वह अन्ततः एक दिन आपको कटवगा । तब अब बेर हो रही है । मिस दास, बहिए, हम भोग चले ।

विजया—परेछन्नी बीमारीके बारेमें तो आपने कुछ बताया ही नहीं ।

नरेन्द्र—उम्मी दया कुछ विशेष अच्छी नहीं है । उसे बहुत अधिक सुखार है । पीठ और गलेमें दर्द है । इस तरफ चेचकका चोर है । जान पड़ता है, परेछन्नी भी चेचक निकलेगी ।

विजया—( डरकर ) चेचक क्यों निकलेगी ?

नरेन्द्र—क्यों निकलेगी, वह ज्ञानमें बहुत कुछ कहना पड़ेगा । सेर, वह चाहे जो हो, उसकी मासे कर डीबिए, बरा लावधान रहे । मैं कर ना परल रुपए लेकर आऊँगा—अबका अगर मिला गये तो । तब उस देख बाँटूँगा ।

विजया—( व्याकुल उठते हुए चेहरेसे ) नहीं तो नहीं भाइयगा ! मुझे भी निश्चय चेचक निकलेगी नरेन्द्र बाबू । कर रातसे मुझे भी कल सुखार है—मेरे भी शरीरमें मजानक व्या है ।

नरेन्द्र—व्या मजानक नहीं है, मजानक है आपके मनका मज । अच्छा अगर थोड़ा-सा सुखार ही हो आया हो तो उससे क्या ! चेचक कुछ औद्योगिके निकली है, इसलिये गौँके लमी खोलीके चेचक निकलगी, ऐसा सोचना ठीक नहीं ।

विजया—लेकिन अगर निकल आये तो मेरा कौन है ? मुझे कौन देखे-मुनेगा ?

नरेन्द्र—देखने-मुनेवाले बहुत-सा लोग मिल जायगे, इसके लिये किन्ता न डीबिए । लेकिन मैं करता हूँ, आपको कुछ न होगा ।

विजया—न हो तो अच्छा ही है । तबतुब ही मैं बहुत अनुत्तर हूँ तो भी छेरे ठठकर चोर करके लारी मुन्ती झाड़ छड़कर बरा बाहर चारो की ।

नरेन्द्र—ना, व्याव आप नहीं भी म चालेगी । बाहर आप सुफताप लेर रहिए, मैं कर फिर आऊँगा ।

विजया—रुपए ॥ मिलनेपर भी आयेगे न ?

नरेन्द्र—हाँ न मिथनेपर भी धाँक्या ।

बिबबा—भूख तो न चाहेगी ?

नरेन्द्र—धी नहीं । मैं मुझका या अनामनी प्रकृति का आत्मी अवश्य हूँ ;  
केन्दु आपकी बीमारीकी बात निश्चय ही न भूलेंगा ।

[ काशीप्रसाद प्रवेश । ]

काशीप्रसाद—माँजी, बाँबी परोसी रक्की है ।

बिबबा—( नसिनीको दिखाकर ) इनके छिप भी ?

काशीप्रसाद—हाँ माँजी, दोनों बनोक छिप ।

बिबबा—मैं चक्कर देखती हूँ, क्या क्या परोसा है । अगर फिर कमी मौका  
न मित्रा तो आत्मा तो पाठ बैठकर आप दोनों बनोकों सिन्ध-पिन्ध हैं ।

नसिनी—मित्र राय, आप यह क्या कह रही हैं ? डर काहेका है ?

बिबबा—क्या जानें, आत्मा मुझे डर ही मानस पड़ रहा है । जान पड़ता है  
कि मेरी बीमारी बहुत अधिक बढ़ जावगी ।—नरेन्द्र बाबू, आत्मा आप ठहर  
न चाहए वहाँ ।

नरेन्द्र—अच्छ मैं रातकी ही देनसे जाँक्या । लेकिन आपको मेरी बात  
सुननी होगी । आप बिबबा-बुद्ध न पावेंगी, और अभी बाहर से रहिए ।

बिबबा—मा, यह मैं न मानूँगी । आप लोगोके जानेकी देसमास आत्मा  
कर करूँगी । उसके बाद बाहर से रहूँगी ।

[ प्रस्थान । साथ ही काशीप्रसाद भी प्रस्थान । ]

नसिनी—कैसी व्याकुल दिनती है । जानकर मुसर्बी, मैं जाँक्या, लेकिन  
आप आग्रह रह चाहए । चाहए नहीं ।

नरेन्द्र—इत बेध तो हूँ ही । मामाके घरसे जानेके पक्षे घामको और  
एक बार देख जाँक्या । सुलार सेव है, डर है कि कुछ दिन का देगा ।

नसिनी—कह देगा ? तब तो बड़ी मुश्किल है ।

नरेन्द्र—मायूस तो यही पड़ता है ।

नसिनी—बड़ी अच्छी लड़की है । आपके ऊपर उसे कितना विरासत है ।  
जान नहीं पड़ता कि यह आपको बे-बुर-बुरा कर दे सकती है ।

नरेन्द्र—( बैठकर ) देखा तो गया कि कर सकती है । बात यह है कि



को पारधी बड़की गरीबके बारेमें बहुत कम सोचती है। पर तो गया ही, आसिरी सहसा वह मारमोस्कोप बन बिकत होकर बेचना पड़ा तो उसके पीपार्ह दाम—केवल दो सौ रुपये देकर बिना किसी संकोचके सरीर दिया, साथमें खपरी बसविद्यके लोह पर ठग, जुआघोर आदि विशेषण दिये। भाव उसे ही बन दो सौ रुपये वापस करके छोड़ केना बादा तब अनायास कह दिया कि बात सीधे कम न लैयी अठपण और भी दो सौ चाहिए। तो इकल मना है, वह मानना ही होगा।

नसिनी—मुझे विद्वान नहीं होना डाक्टर मुसर्बी—कहींपर धानद कुछ मारी भूख है।

नरेन्द्र—भूख है! ना कहीं कुछ भूख नहीं है मिस नसिनी, तब जसकी तरह शाक है—स्थ है।

नसिनी—( सिर हिलकर ) लेकिन ऐसा हो ही नहीं सकता डाक्टर मुसर्बी। औरतें इतनी बड़ी भिन्ती उससे कर ही नहीं सकती—इस तरह ठगरी और बे बेस ही नहीं सकती।

नरेन्द्र—ऐसा ही होगा। औखोफी बात तो आप ही अच्छी तरह जानती हैं, लेकिन मैं कितना जान पाया हूँ, वह तो बहुत ही कठोर हैं—बहुत ही कठिन है।

[ काकीपरका प्रवेश ]

काकीपर—बसिए। मोहन तबार है। माथीम मुज्ज्या है।

नरेन्द्र—बसो बज्जे हैं।

[ वक्ता प्रस्थान । ]

[ इलाक और रत्नविहारीका बातें करत हुए प्रवेश । ]

रा०—इत मन्दिरकी स्थापनाके लिए अनायास परिश्रम करके निम्नत मिठना पक गया था, वह हम समझ ही नहीं पाये। उस दिन उसका छतरा हुआ पोहरा देसकर, डरकर मैंने पूछा—बिजय, क्या हुआ? ऐसा क्यों कर रहे हो? उसने कहा—‘बापू, भाव मैंने अन्याय किया है—बलात् बाबूकी कठार बन कह जाती है। बिजयाको भी कुछ लपट कहा है मैंने—उतने भी मुझे कहा है—मगर इसके लिए मुझे सेव नहीं है। मर तो मुझ पर है कि मैंने इलाक बाबूको क्या कहते कहते क्या कह दिया। यादर वह अब लपट होकर हमारे पहाँ आचार्यका काम नहीं करेंगे।’ इसके साथ ही ठगरी राजों

औलोसे सरसर करके औंसू रहने लगे । मैंने कहा—डरो नहीं मैना, अपराध अगर बन ही पड़ा हो, तो वह पश्चात्तापके औंसूओसे धुल गया । ( औंसू मँदकर फिर छद्ममे रहनेके बाद ) और यही तो हुआ दयालु बाबू, आपकी उदारताको छद्म पाकर विस्मयने मुझसे कहा—बाबू, उस दिन हमने छद्म ही कहा था कि दयालु बाबूका चित्त सम्पूर्ण रूपसे ममत्ताके प्रेममें मग्न है । उनका हृदय कदवा और ममतासे मग्न है । वही हम जैसे छोड़ोकर्य वैसे प्रवेश नहीं कर सकती ।

दयालु—लेकिन मैं छद्म करता हूँ । उस दिनकी बातका मुझे कुछ भी स्मरण नहीं है । आप वह कह दीप्रिया विस्मय बाबूसे ।

रस०—बाबू नहीं । बाबू नहीं । आपके सिर बढ़ केवल विस्मय है—विस्मयविहारी ।—अरे कौन है वहाँ ? काशीपद ।

[ काशीपदका प्रवेश । ]

रस —विद्या बेटी क्या इस समय अपने पुस्तकालयके कमरेमें है ?

काशीपद—जी नहीं, वह छेनेके कमरेमें लेयी है । उन्हें बुलार है ।

रस०—बुलार ? बुलार क्या कहने ?

काशीपद—डॉक्टर बाबूने ।

रस०—डॉक्टर बाबू कौन ?

काशीपद—नरेन बाबू आये थे, वही नाकी देखकर बोले—बुलार है । कहा—जुफ्ताप बाहर सेट रही ।

रस —नरेन ? वह फिर स्थिर आया था ? कब आया था ?—काशीपद, विद्याको बाहर लहर हो कि मैं आया हूँ और उन्हें देखने आ रहा हूँ ।

दयालु—मैं भी विद्या रानीको बरा देखना चाहता हूँ काशीपद । बुलार मुनकर बड़ी चिन्ता हुई ।

काशीपद—मगर मोंबीने मुझे मना कर दिया है । कह दिया है कि वह घर न बुलायें, वह तक कोई उनके पास न जाय । मेरे जानेसे संभव है, वह लपट हो ।

रस०—कष्ट होगी ? यह कैसी बात है ? उसे बुलार भी है । तारा मार, तारी शिमोदारी तो मेरे ही सिरपर है । कोई बौकड़ बाप, विद्याको लपट दे आये । आज उसका भी जी अच्छा नहीं है, पर वह घरमें ही है ।

लेकिन बिजवाले कहते हैं क्या होता है। बिजवा जल्दी आकर कुछ बकपा करे। शहरम गाँधी मेककर हम लोगोके बकिपन बाबूको कुछ मेजे। न हो, कककतेते—हमारे प्रेमांकुर बाबूको—बकिप, बकिप दवाक बाबू, हम बोय बते समय नह न हो।

बवाक—मककक नही रातबिहारी बाबू, बगरीकककी कृपासे डरनेकी कोर बत नही है। नरेक बब कक बेस गया है, अब बगर कुछ चिन्ताकी बात होती हो निबय ही आपको ककर करनेको कह देता।

रात०—नरेन बेस गया है ? कह क्या बाने ?

[ करते करते सेबीसे पक बेते हैं भीतरकी ओर। पीछे पीछे दवाक बाबू और बककीप भी जाते हैं। ]

## पद्यम दृश्य

स्थान—बिजवा बानन-कक

[ बमकक बिजवा बिजनेक पड़ी है। कुछ ही पकसे पर बाप-बेते—रातबिहारी और बिजलबिहारी, दोनों बैठे हैं। ककमे बैठनेके किय और कोर कुर्ती बा बालन नही है। लोगके किय बककक सभी सामान पाव ही एक छोटी-सी मेकपर रक है। बकक मावसे पैर रकते हुए नरेकका प्रवेक। उठके मुकपर ठककठा ककक रही है। ]

नरेक—मामक क्या है ? बमी बककीपके मुँहसे सुना कि कुलार कुछ कह गया है। बेर कदने सीकिय, कोह चिन्ताकी बात नही है—इस समय क्या हाक है ?

बिजल—बाप उबरे आकर उनको बेचकका मव दिला गये थे।

बिजवा—( सीक करमे, दोनों हाप कककर ) बैठिय। ( नरेकको ठकी बिजनेक एक सिरेपर मकनून बैठना पड़ा। ) अब तक कहीं थे ? इतनी देर ककक कपो बाये ? मैं बही बेरते आकरी राह बेस रही थी। ( बिजलक कोहरे मपानक हो उठा। बिजवा नरेकका हाव सीककर अपने हृदयपर रक

सेली है।) जब तक मैं आराम न हो जाऊँ, तब तक कहीं न जानेका काम नहीं किए। आप खड़े जायेंगे तो शायद मैं नहीं पहुँचूँगी।

[ नरेन्द्र हलुमि होकर सिर उठाता है और चाप ही हो थोड़ी भ्रमण नेचोसे सड़के मेज टकरा जाते हैं। काशीपद इसी बीचमें परेको बरा हटकर भीतर आ जाता है। ]

विमल — (खेचते खेच उठता है) ए सुअर, ए जानवर, एक कुर्सी का।

[ काशीपद मगसे हलुमि का हो जाता है। ]

रास० — (गम्भीर स्वरमें) उस तरफसे एक कुर्सी के आत्मो काशीपद। बाबूको बैठनेके लिए दो। [ नरेन्द्र ठठ साड़ा हुआ, और राखबिहारी शान्त कण्ठसे विमलसे बोले—] बीमार आदमीका कमरा है—इस तरह leaky (डटाले) न होकर। Temper lose (मस्तिष्कके समुत्पन्नको खोना) करना किसी मरे आदमीको शोभा नहीं देता।

विमल—इसमें आदमी टेम्पर लूस (Temper lose) नहीं करता, वो और कोरेमें करता है, आप ही बताइए। हठमन्त्रा नौकर, न कहना न सुनना, ऐसे एक असम्य आदमीको भीतर के आत्मा, जो मर महिम्ना सम्मान तक रखना नहीं जानता।

[ विमलाजी धरकी उग्र भ्रमण उचट जाती है। नरेन्द्रका हाथ छेककर वह बूमकर दीवारकी ओर मुँह कर लेती है। ]

रास०—मैं तब समझता हूँ विमल—इस मापलेमें तुमको बीच आना अस्वाभाविक नहीं है, बल्कि बहुत ही स्वाभाविक है—वर भी मैं जानता हूँ। लेकिन तुमको वह सोचना चाहिए था कि समी इच्छा करके या जान-बूझकर अपराध नहीं करते। समी अगर मर पुण्योन्नी रीति, नीति आधार-मन्त्रा आनते तो फिर चित्ता ही क्या थी। इसी लिए कोच न करके शान्त मापसे मनुष्यके दोषों या कुटियोका संशोधन कर देना होता है।

विमल०—मा बाबू, इस तरहकी Impertinence (उद्वेगता या बेभरवी) सही नहीं जाती। इसके सिवा हमारे इस बरके नौकर-चाकर बेसे बदमाश हैं वेस ही बदमाश भी हो गये हैं। कम ही मैं इन सब नासमयकोको निग्रह बाहर करूँगा।

राज०—हमका मन जब साराग होता है तब क्या क्या बक जाता है, कुछ ठीक नहीं। और अड़केको ही क्या रोपें, मैं बड़ा आदमी हूँ, फिर भी बड़ियाके हुनारकी बात सुनकर कैसा रोबका हो उठा था।—परमैं ही एक आदमीके झीठका निकली, उसपर यह सड़कीको बरस गये।

नरेन्द्र—ना मैं किसी तरहका मय नहीं दिखा गया।

किशोर०—( कुछ चौककर ) अचानक यय दिखा गये थे। काशीप्रसाद हमका गवाह है।

नरेन्द्र—काशीप्रसादने गलत सुना है।

[ किशोर पागलकी तरह उठकर नरेन्द्रकी ओर बढ़ना चाहता है। ]

राज०—आ क्या करते हो किशोर ! यह सब असीधर करते हैं, तब क्या काशीप्रसादकी बातका विश्वास करना होगा ? निश्चय ही इन्हींका बदनाम सब है।

किशोर०—तुम समझते नहीं हो बाबू—( किशोर बाबा देना चाहता है )

राज०—इस मामूली बीमारीमें ही होशबोस न लौंको किशन, फिर होजो ! मंगलमन बगलीसुर केका हम लोकोही परीक्षा लेनेके लिए ही आपसि किशोर, बीमारी बीमार मेक देते हैं इस बातको मेरी ठानमें नहीं आता कि किशोरमें पढ़ते ही तुम बगल लोको सब परसे क्यों भूख बाते हो ! ( कुछ रिपर पढ़कर ) और अगर यस्तीसे उन्हें बीमारीकी बात कह ही ही तो इतने क्या ! किशोर ही बड़े-बड़े इम्तिहान पास किने हुए अच्छे अच्छे विषयक डाक्टरोंमें भी भ्रम हो जाता है—यह तो अभी अड़के ही हैं। और लोको इस बातको। ( नरेन्द्रसे ) तो अगर बहुत मामूली ही आप कहते हैं ! बिना करनेका कोई कारण नहीं है—यही तो आपकी राय है !

नरेन्द्र—मेरे मंगलमनसे क्या आगा जाता है रामबिहारी बाबू ! मेरे ऊपर तो आप मरोग्य नहीं करते। बसिक इससे तो यही ठीक होगा कि किसी अच्छे पाठ द्वारा विषयक डाक्टरको बिलकुल उलझी राय से बर्जित।

किशोर—( बिहारीकर ) तुम फिरसे बात कर रहे हो, इसका जवाब रकाजक बात करा—यह मैं कह देता हूँ। यह घर न होकर कोई और जगह होनी तो तुम्हारा यह कथन करना—

बिबया—( नरेन्द्रकी ओर झुककर व्यक्ति रूपमें ) मैं जब तक बिबूगी नरेन्द्र बाबू आपके निष्ठ कृतज्ञ रहूँगी। किन्तु मे सोग जब अम्य इन्टरसे मेरी शिक्षा कराना चाहते हैं तब आप व्यर्थ ही अपमान न सहिए। ( फिर मुँह परकर छेय्यी है। )

रास—( व्यस्त होकर ) बाह ! जिन्हें तुमने बुझा मेका है, उनका अपमान कौन कर सकता है बेटी ! ( सजमर बाह ) यह बात भी सच है बिबय ! इस असंमत व्यवहारके लिए तुमको पश्चात्ताप होना चाहिए। मैं मानता हूँ, समस्त ही मानता हूँ कि बेटी बिबयाके रोगके शुद्धत्वकी सम्पना करके तुम्हारी मानविक पंचवत्ता खीगुनी बह गई है, तो भी—अपनेको तुम्हें स्थिर और शान्त बनाना ही होगा। खरी मज्दारी तुम्हें, खरी बिम्बेदारी तो केवल तुम्हारे ही स्थिर है मेका ! मगम्बर मगबानकी इच्छासे जो मारी बोझ एक दिन तुमको ही अकेले बहन करना होगा—यह तो केवल उखीली परीक्षाकी सूचना है। ( नरेन तुम्हारे सखी और छोटा कैग उठा छेता है )—नरेन बाबू, आपसे मुसे कुछ बखरी बातें करनी हैं, बखिर।

[ रासबिहारी नरेन्द्रको लेकर जैसे ही रंगमंचक सामनेकी ओर आते हैं जैसे ही बीचमें पर्दा खिरकर रोगीके कसकी किछुक डक देता है। दोनों आम्ने-सामने कुर्तियोंपर बैठ जाते हैं। ]

रास०—चार आबमिबोके सामने तुमको बाबू कहूँ या कुछ भी कहूँ नरेन, छेकिन मेका, मैं यह भूल नहीं सकता कि तुम हमारे उखी बगलीछके बेटे हो ! नहीं तो तुम्हारे मुसके ऊपर यह कहकर कि मैं तुमपर अछनुग हुआ या, तुमका द्वेष नहीं देता।

नरेन्द्र—जो सच या बही आपसे कहा—इसमें कुल करने या कसेय पानेकी छेई बात नहीं है।

रास०—ना, ना, यह बात न कहो नरेन। कठोर सच मनमें सफ्यी ही है। जो तुमता है, उसे तो सफ्यी ही है, किन्तु जो कहता है, उसे भी कम कसेय नहीं होता मेका।—बगलीखर।—छेकिन तुम मेका, बिबयके मनकी व्यवस्था समाप्त कर अपने मनमें किसी तरहकर छेय न रख लगेग।—धीर मेका तुमसे एक अनुरोध भी है। इन दोनोंका प्याह इकी

आम्मी बेसासमे होनेवासा है । अगर कसकसेमें ही रहो मैसा, तो इस  
हमममे हमको अकस सम्मिहित होना होसा । ना कहनसे कम नहीं चसेसा ।

नरेन्द्र—अच्छ । सेकिन—

रस०—जा । सेकिन-सेकिन कुछ नहीं मैसा, मैं वह नहीं सुनूँगा । अच्छा हों,  
अम्मी क्या कसकसेमें ही रहना होसा ? कुछ सुविधा-उविधा—

नरेन्द्र—जी हों । एक विद्यावती बगली वृक्षानमें छिम्हास एक मामूली-सा  
काम मिल गया है ।

रस०—अच्छ अच्छा, ठीक है । बगली वृक्षानमें क्या व्यवसा है । अगर  
मिसे रसागे तो काली रसम बना बसेगे नरेन ।

नरेन्द्र—जी ।

रस०—हों तो तनकाह किननी सेते हैं ?

नरेन्द्र—बाबको कुछ अधिक दे सकत हैं अम्मी तो सिर्फ चार सौ रुपये  
सेते हैं ।

रस०—( बोलें कपारपर चढ़कर आसर्षसे ) चार सौ ? चार । चार ।  
काली नौकरी है । सुनकर बड़ी लुपी हुई ।

नरेन्द्र—उत परेश मामक छोडरेकी तबित अच कैती है—आप कुछ क्या  
सकते हैं ?

रस०—अम्मी कुछ देर पहले उन म-बेदेको उनके यौव मेव दिया  
गया है ।

नरेन्द्र—यौव क्या बहोसे दूर है ?

रस०—वह तो मैं नहीं जानता मैसा ।

नरेन्द्र—( अचमल लम्ब रहकर ) तो फिर कोई उगाव नहीं । लैर, जाने  
हीबिए । आप मेरी ओरसे एक कत कियात बाबूसे कह हीबिएगा । पहिपाय-  
मकक अर्ये मनुष्यका आशेम अर्यस्त ताबारव कायसे ही उच्छ्रुति हो सकता  
है । निर्याक तमकनमें डाकटली इस बातपर वह अविश्वास न करें ।

रस०—अविश्वास क्या करेगा नरेन ? वह बात क्या हम नहीं जानत ?  
आप होनेके कारण यह बात मरे मुँहसे नहीं निकलती; मगर हम अपने  
ही आम्मी हो, इच्छिण हमसे कहा है—दोनों कनोके ऐसे मारे प्रेमके सिद्ध

बीच बीचमें मुझे देख पड़ते हैं। थिन्हें प्रकट करनेकी माया ही मेरे पास नहीं है। जान पड़ता है, मगराने जैसे संकल्प करके ही दोनोंको एक दूसरेके लिए बनाकर इस पृथ्वीपर भेजा है। उन्हें मैं प्रणाम करता हूँ, और सोचता हूँ, सार्वक है इनका मिथन, सार्वक है इनका जीवन।

नरेन्द्र—इसी वैशालमें शायद इनका म्याह होगा ?

रस—हाँ नरेन। देखो, उठ दिन तुम्हें जाना होगा—उपस्थित रहकर नवदम्पतिको आशीर्वाद देना होगा। कसरी करनेकी मेरी इच्छा नहीं थी। किन्तु सभी बार-बार करते हैं कि जिनकी आत्मा भीतर ही भीतर इस तरह मिथन एक हो गई है, उन्हें बाहरसे अलग रखना अपरम्प है। मैंने भी कहा—अच्छ, बही हो। तुम उनकी इच्छा ही मेरे भगवान्की इच्छा है। इसी वैशालमें एक होकर—मिथन वे दोनों सत्कार-सत्कारमें जीवनकी नौका चला रहे हैं।—कसरीकर। मेरे जीवनके दिन तो अब पूरे हो आये हैं, अब तुम्हीं उन्हें देखना—तुम्हारे घरोंमें ही उन्हें समर्पण करता हूँ। ( हाथ जोड़कर माथेसे स्नान और सिर छुलकर प्रणाम करना ) मगर हाँ, अब तुम्हें रात हुई या रही है मिया। आज ही क्या कलमें से छोट्या बहुत कसरी है ? न जानो तो क्या कुछ हब है ?

नरेन्द्र—ना, मुझे जाना ही होगा। चाहे बाठकी ही गाँवसे बाँटें।

रस—मैं ठहरनेके लिए बिद मी नहीं कर सकता नरेन। नई नौकरी है—नागा करना ठीक नहीं। मासिक नापक हो सकते हैं। आजका दिन तो तुम्हारा बेकरार ही बर्बाद हुआ। लेकिन क्या मैं पूछ सकता हूँ कि किस लिए अब तुम आये थे भैया ?

नरेन्द्र—दिन तो कल ही बेकरार गया। किन्तु सवेर यह आधा करके आया था कि शायद बपू देखकर यह माहकोलोप अपना औद्य से ला सकूँ।

रस—बपू देखकर ? अच्छा तो है, अच्छा तो है—फिर से क्यों नहीं गया ?

नरेन्द्र—विक्रमाने नहीं दिया। बीती—अच्छी कीमत पार तो बपू है—इससे एक पैसा भी कम न होगी।

रस—यह कैसी बात है नरेन ? दो तो रुपयेक बदल पार तो बपू ! कसकर अब तुम्हें उगकी इतनी बकल है और उनका किसी कामका नहीं है।

नरेन्द्र—मैंने सोचा है, उन्हें पार तो बपू ही देखकर ले बाँटेंगा।



एत०—ना, वह किसी तरह नहीं हो सकेगा। इतना बड़ा अपराध मैं यह न करूँगा। वह मेरी माँ की पुत्र-वधू है—वह अपाय तो मुझ तक पहुँचेगा। (अचानक पुनः वार वार चिल्लाकर) एक बात मैंने बारबार सोचकर देखी है। तुम्हारे साथ उनकी बातचीतमें, अगर कोई आपराध या गलतियाँ मुझे होय नहीं देख पड़ता किन्तु भीतर ही भीतर किसी मनमें तुम्हारे ऊपर न जाने क्यों इतनी लज है। वह बात केवल तुम्हारे इस मानके मामलेमें ही मैंने नहीं देख पाई—इस माइकोल्कोपके मामलेमें और भी अधिक स्पष्ट देख रहा हूँ। उसे देनेमें मुझे केवल इसीलिए आपत्ति नहीं थी कि वह किसीके किसी मतका नहीं है, बल्कि इसीलिए भी उसे लौटानेके लिए कि वह मर्दान तुम्हारे लिए बहुत बुरी है, तुम्हारे बहुत कामकी है। मगर अब वह मामला हुआ कि तुम्हें अपनी ही बुरी बसत है, जब मेरे कानोंमें वह मन्त्र पड़ी कि उसे लौटानेके लिये कान दे दो नहीं है, तब मैंने निश्चय कर लिया। सोचा, माइकोल्कोपके काम पाई या हो, अगर तुम्हो दिखे जायेंगे—बो कहा गया है वह पूरा किया जायगा। मैंने मन ही मन कहा—विजया पाई अब, पाई मितने दिनोंमें मुझे बुरा है, लेकिन मैं तुम्हो बुरा देनेमें देर न कर लूँगा। इसीसे लगे ही तुम्हो मैंने दो ही बुरा मेरा लिये। यह मेरा कर्तव्य था। उनकी रक्षा मुझे करनी ही होगी।

नरेन्द्र—बात पक्का है, लज्जत हो ली बुरा देखने भी उनकी इच्छा नहीं थी। उन्हें दिखल था कि मैं ठग लिय था रहा हूँ।

एत०—(हँसते हीम करके) हा ना ना। लेकिन अब इसके विचारकी बसत नहीं है नरेन्द्र। और ऐसा भी हो, तो वह केवल असंगत प्रस्ताव है। वह केवल अपाय है। वो छोड़ो बहलें बात ली। ना भैया, वह मैं उन्हें किसी तरह नहीं करने दूँगा। तुम दो ली बुरा देकर ही अपनी जीव ले जाना।

नरेन्द्र—नहीं रत्नविहारी बाबू, मेरी ओरसे आप उनसे अनुप्रेष न कीजिएगा। वह आराम ही चाहें, तब उनसे कह दीजिएगा कि मैं उन्हें पार ली बुरा ही कर दूँगा। और विजया बाबूसे कहिएगा कि वह मुझे छुड़ा करे—वह अब मुझे मरना नहीं था। लेकिन अब नहीं—मेरी माँ की लज हो गयी; मैं जानता हूँ।

(मरवान)

## तृतीय अंक

प्रथम दृश्य

समय—बिज्याके बैठनेका कमरा

[ बिज्या खरब हो गई है, लेकिन धीरे धीरे खुद खुद है ]

( कासीप्रसाद प्रवेश )

कासीप्रसाद—( बीसुओंसे विह्वल स्वरमें ) बिज्या रानी, इतने दिन तुम्हारी ठगियत करण रहनेके कारण कुछ कह नहीं सका । लेकिन अब कहना पड़ रहा है । छोटे बाबूने मुझे बचाव दे दिया है ।

बिज्या—क्यों ?

कासीप्रसाद—मेरे मास्किट रंग जले गये, उन्होंने कमी गाली नहीं दी; लेकिन छोटे बाबू मुझे बेल नहीं सका—दिनरात गाँवियों देते हैं । मैंने कोई कदम नहीं किया, तब भी—( बीसु पोंछकर ) उस दिन कबो मैंने उन्हें खरब नहीं दी, कबो नरेन बाबूको तुम्हारे कमरेमें मैं बुला बना, इसीसे उन्होंने मुझे बचाव दे दिया है ।

बिज्या—( कठिन स्वरमें ) वह क्यों है ?

कासीप्रसाद—कनहरीके दरबारमें बैठे कुछ कागजपत्र बेल रहे हैं ।

बिज्या—हूँ ! अच्छा, कोई बख़्त नहीं । तू बाहर काम कर ।

( कासीप्रसाद प्रस्थान । )

[ दरवाज़ा बाबू प्रवेश करते हैं । ]

बाबू—तुम्हारे पाठ ही आ रहा था बेटी ।

बिज्या—भाइय दवाब बाबू । आराम ही तो अब अच्छी है न ?

दयाल—आज तो ठीक हैं। मरेन बाबूको मैंने बिट्टी खिला दी। वह कम तीखे पहर धाकर दवा दे गये हैं। कैती बहुत पिक्रित है बेटी—बोलीच पंटेक मीतर ही बैठ बारह आने रोग दूर हो गया है।

बिजया—दूर क्यों न होगा ? आज सप्ता क्या उनपर साधारण विश्वास है ?

दयाल—तुम्हारा यह कहना सच है। किन्तु विश्वास तो वो ही नहीं हा जाता बेटी। हमने परीक्षा करके देखा है न, जान बाटा है, वरमें उनके पैर रखते ही रोगी क्या हा जातागा।

बिजया—ऐसा ही होगा।

दयाल—एक बात कहूँया बेटी, लेकिन तुम नाराज न होने पसोगी।—यह सच है कि उनकी उम्र अधिक नहीं है; मगर बिन सच नामी और बिना डाक्टरोंने तुम्हारी मित्रा चिकित्सा करके समझ और रूप नष्ट किये, उनकी अपेक्षा यह कहीं अधिक बिल है, यह मैं कठम साकर कह सकता हूँ। और एक बात है बेटी, मरेन बाबू केवल मेरी पत्नीकी ही चिकित्सा नहीं कर गये, और भी एक आत्मीकी स्मरणा कर गये हैं। ( टॉम्बिके ऊपर कायस्थ एक टुकड़ा रखकर ) मगर देखो, मैं तुम्हें स्पर्शाही नहीं करने दूँया; औरतकी एक बार परीक्षा करके देखना ही होया तुमको, यह मैं बोल देता हूँ।

बिजया—लेकिन यह तो अंधिरेमें बेजा फटना है दयाल बाबू—टोमीको देखे बिना प्रेस्क्रिप्शन ( Prescription = तुल्य ) मिलना।

दयाल—नहीं, ऐसा नहीं है। कम जब तुम अपने बापकी रेजिस्टर (कब्ररा) पकड़ लगी थीं तब ठीक तुम्हारे सामनेकी राहसे ही यह फैल गये हैं। तुम्हें अच्छी तरह ही यह देख गये हैं। ध्यान पकटा है, तुम अन्वमनरक थी, इसीसे—

बिजया—यह क्या लाहवी पोयालमें से ?

दयाल—मही जान थी। दूरत देखने पर यही भ्रम होता था कि कोई लाह है—पहचानना ही कठिन था कि कोई बंगाली है।

बिजया—( हँसकर ) यह आपकी अशुक्ति है दयाल बाबू—स्नेहच अतिरेक है।

दयाल—यह सच है कि मैं उन्हें स्नेह करता हूँ, जब ही स्नेह करता हूँ।

लेकिन मैं यह बात किन्तु ही बढ़ाकर नहीं कह रहा हूँ बेटी । इतना बक ।  
विद्यान् भावमी है, लेकिन घमण्ड धू तक नहीं गया । बातें बेसे मीठी हैं बेसे  
ही बन्नोंधी-सी तरह हैं । किसी तरह जाने देनेको भी नहीं चाहता—मही  
हण्ड होती है कि और कुछ देर रोके हैं ।

विद्या—रोके क्यों नहीं लेते ?

दयाल—( ईश्वर ) यह कहीं हो सकता है बेटी, उन्हें कितने काम  
हैं कितना परिश्रम उन्हें करना पड़ता है । तो भी मरीच समझकर हमपर  
कितनी दया करते हैं । मेरी बी बहसे बीमार है, तबसे प्रायः नित्य ही वह  
उसे देखने आने हैं ।

[ विद्युत्विहारीका प्रवेश । ]

विद्युत्—( विद्यासे ) कैसी लक्षित है आब ?

विद्या—अच्छी है ।

विद्युत्—अच्छी तो बेसी नहीं देख पड़ी है । ( दयालसे ) आप यहाँ  
क्या कर रहे हैं ?

दयाल—विद्युत्को बरा देखने आया था ।

[ विद्युत्की नजर टेबिलपर गले मुस्लेपर पड़ जाती है और वह उसे  
उठा उठा है । ]

विद्युत्—मुस्ले दिखाई दे रहा है । कितना है ? ( गौरसे देखकर )  
नरेनका नाम लिखा है । बाद बाकर साहबका ।—लेकिन यह यहाँ आया कि  
तरह ? ( दयाल बाबू और विद्या दोनों कुछ नहीं बोलते ) मुझे तो, कैसे आया ।  
बाकम आया है क्या ? हैं ! बाकम तो बस नरेनका बाकम है ! जान पड़ता है,  
इसीसे और बाकमोंकी दवा नहीं लाई जाती, गौरीकी दवा गौरीमें ही पड़ी  
सका करती है, उनके बाद केक ही जाती है । वह तो लैर, किन्तु इन  
अतिमुक्त भग्नतरिने वह कागज मका किस तरह ? किन्तु माफन ! बात मुझे  
माफन होनी चाहिए । ( दयालसे ) अभी तो आप लू सेन्टर दे रहे थे—  
घोड़ियोंसे ही कुन पड़ रहा था—मैं पूछा हूँ, अगर कुछ जानते हैं ।  
एकदम भीगी बिही बन गये । क्याए, कुछ जानते हैं ?

दयाल—जी हाँ ।

विजय—आः—यह बात है ! उसे कहों पाया !

दयाल—धी, वह मेरी स्त्रीको देखने आते हैं कि नहीं—और बहुत अन्धकार करते हैं—इसीसे मैंने उनसे कहा था कि बेटी विजयाके लिए अगर एक—

विजय—इसी लिए दयाल यह व्यवस्थापन है ! आप इनके मुन्नी बन बैठे हैं ! हूँ । ( पड़ीमर बाहर ) आपसे गने शान्ता विजय पूरा करनेके लिए कहा गया था—वह पूरा हो गया ।

दयाल—ओ, दो दिनके भीतर ही पूरा कर डालेंगा ।

विजय—मैं पूछता हूँ, हुआ क्यों नहीं !

दयाल—परमे मारी विपत्ति बीत रही थी—अपने हाकसे लाना पकाना पड़ता था—काम करने का ही नहीं लगा ।

विजय—( विरूप करके ) का ही नहीं लगा !—तो फिर और क्या—मुझ राख बना दिया—निहाल कर दिया ! मैंने लम्बी चालूने कहा था कि इन सब बुद्धो-बुद्धोत मेरा काम नहीं चलता—इन्हें मैं नहीं चाहता ।

विजय—( बीमे पर कठिन स्वरमें ) आप जानते हैं, दयालवाचको यहाँ किसने सुझाया है ! आपके चालूने नहीं—मैंने सुझाया है ।

विजय—बाहे किन्ने सुझाया हो यह जाननेकी मुझे जरूरत नहीं । मैं काम चाहता हूँ—मेरा संबंध कामके साथ है ।

विजय—बिनफ परमे विपत्ति है, वह केस काम करने का मकसद है !

विजय—इस तरह लम्बी विपत्तिकी बोझाई देखें हैं । किन्तु उसे मुझें तो मरा काम नहीं चल सकता । मैंने बकरी काम कर डालनेका हुक्म दिया था, वह क्यों नहीं हुआ !—मैं इसीकी केविजय चाहता हूँ । विपत्तिकी लहर मरी जानना चाहता ।

विजय—दयाल बाबू, अब आप बाहर । नमस्कार ।

[ दयालवाच प्रस्थान ]

विजय—दयाल बाबू गये अब कहिए, आप क्या कह रहे थे !

विजय—कह रहा था कि मैंने बकरी काम कर डालनेका हुक्म दिया था, हुआ क्यों नहीं, इसीकी केविजय चाहता हूँ । विपत्तिकी लहर मरी जानना चाहता ।

विद्वान्—देखिए विद्वान् बाबू, दुनियाके सभी लोग मिथ्यावादी नहीं हैं। सभी मिथ्या विशिष्टी दोहाई नहीं देते—कमसे कम मन्दिरका आचार्य नहीं देता। केर, इस बहसको छोड़िए। मैं आपसे पूछती हूँ कि जब आप यह जानते हैं कि दण्डारी काम होना ही चाहिए, तब कुछ आपने ही क्यों नहीं उसे कर दिया? आपने क्यों बार दिन गैरहाजिरी की? आपपर क्या विधि-आर्पण आई थी, बरा सुनें?

विद्वान्—( हतबुद्धि होकर ) मैं कुछ समझ नहीं रखूँ। मैंने क्यों गैरहाजिरी की?

विद्वान्—हाँ, मैं यही जानना चाहती हूँ। महीने-महीने दो तो रुपये कनसुआह आप लेते हैं। वह क्या तो यों ही आपका नहीं देती—काम करनेके लिए ही देती हूँ।

विद्वान्—मैं नौकर हूँ। मैं तुम्हारा कामका हूँ।

विद्वान्—काम करनेके लिए जिसे कतन दिया जाता हो, उस इन्के सिवा और क्या करत है? आपके असह्य असह्य मैं पुनःचार करती आई हूँ, लेकिन जितना ही मैं करती गई उतना ही अन्याय उपरान्त बढ़ता गया। बाइए, नीचे बाइए। मास्कि-नौकरक सम्बन्धक सिवा आपसे आपके साथ मर कोई सम्बन्ध नहीं रह्य। जिन नियमन मरे और कामकाय काम करत हैं ठीक उसी नियमन काम कर सके तो कश्चिए, नहीं तो मैं आपका बसाव देती हूँ। मरी कचहरीमें चुकनेकी चेष्टा न कीजिएगा।

विद्वान्—( उलझकर दाहने हाथकी तबली हिलते हिलते ) तुम्हारा इतना गुस्ताह।

विद्वान्—गुस्ताहम मरा नहीं, आपका हूँ। मर ही दरदरमें नौकरी करेगा और मरे ही ऊपर पुन्य करेगा। मुझे 'गुन' करनेका अधिकार आपका बिठने दिया। मरे नौकरको मर ही परम बसाव देनेकी—मरे अतिथिको मरी ही औलोके सम्पन्न कामानित करनकी हिम्मत आपमें कहीं आई?

विद्वान्—( ओरसे एकदम पागल-ना होकर ) अतिथिक बापका पुन्य या वो उत दिन उतका एक हाथ मैं नही छोड़ दिया। पायी, बदमाश, साष्टर कहीच। अगर फिर कभी उसको मैंने यहाँ देखा पाया तो—

[ बीरभरकं हाथसे डरकर कन्हाईसिंह बगैरह नौकर दरबानेपर भाकर मौतार होकने लगे । बिजयान बलिष्ठ होकर कन्हाईसिंहको धवत और सामानिक कहके कहा — ]

बिजया—आप नहीं जानते, लेकिन मैं जानती हूँ कि वह आपका ही कितना बड़ा सीमांत था कि आपने उनके ऊपर हाथ उठानेका अति साहस नहीं किया । वह उच्च शिक्षित मनुष्य हैं । उस दिन उनकी देहमें हाथ लगानेपर भी वह हाथ एक बीमार स्त्रीके घरमें अथवा न करके उसे कर्षित करके ही बल करते । किन्तु मेरा वह उपदेश न मूर्खिया कि आइन्दा उनकी देहपर हाथ लगानेकी इच्छा अगर आपकी हो तो पीछेसे पेश ब्रिब्रिया, सामनेसे मिड़नेका कुसाहत न करिएगा । सैर, बहुत बीजना-बिजना हो गया, अब और नहीं ! नीचेसे नौकर-चाकर, दरबान तक डरकर ऊपर आ गये हैं—बाहर, भींचे बाहर । ( प्रस्थान )

[ विजय श्रेष्ठ और विजयसे हतबुद्धि हो जाता है । उनकी आंख उलझती हुई नजर बिजयाकी ओर पड़ी रहती है । इसी समय अन्त भास्ते रासविहारी प्रवेश करते हैं । ]

रास०—माम्म क्या है विजय यह इतना बीजना-बिजना करेका है ? बिजया क्यों है ?

विजय—जानते हो बाबू, बिजयाने मुझसे कहा कि मैं उसके महीना पाले-बाप बनकर हूँ । और नौकरोकी तरह अगर माम्मका मन रखकर न चलेगा, तो वह मुझ डिलमिन् कर देगी !

रास — क्यों ? क्यों ? एकएक वह क्यों कहा ? तुमने उससे क्या कहा था ?

विजय—कहा और क्या ? काजीपक्षी बनाव दे दिया था यह हुआ पहला अपराध ।

रास — कहत क्या हो । तो इतनी कड़ी उसे बनाव क्यों दिया ? कभी उस दिन तुम नरेनका सम्मत्ता अपमान कर बैठे—जानते हो हा, उसके प्रति बिजयान—

विजय —वही तो बहुत रोय है । उसी जुआधोर सोफरके अरब ही तो इतना दुभा । जानते हो बाबू, बिजया कहती है कि नौकर होकर मैं उसके अतिथि—उसी नरेन—का अपमान भिन्न तरहसे करता हूँ—

रास०—ऐं ! और क्या कहा उसने ! ना, मैं बिजना ही सैमा-सुमूँ कर ठीक करता हूँ, तुम अपना ही एक-न-एक नया बसेड़ा सड़ा कर देते हो ।

बिजना — बसेड़ा काहेका ? इस पासी कासीपहको निकाल बाहर न करेंगा तो क्या घरमें रखेंगा ? कहा नहीं, सुना नहीं, एकएक एक अस्थि बानवरको छे भाकर बिजनाके बिजनीके ऊपर बिठा दिया—और वह मुहड़ा दयाल भी वैसा ही आ मुय है ।

रास०—अरे उनको भी कुछ कहा है क्या ? देखता हूँ, तुमने सब चीज कर दिया ।

बिजना०—कहूँगा नहीं ! एक लो हके कहूँगा । नरेन डाक्टरको वह बहुत चाहते हैं । उसे मैंने उस दिन घरसे निकाल बाहर किया—और वह छिपकर उसकी दवासी करने आये—एक प्रेक्लिफन (गुस्सा) तक लेकर बाहिर हो गए—बिजनाकी चिकित्सा होगी । इधर खीन्नी बीमारीका बहाना करके मुहड़ा बार दिनका गोला लगा गया एक बार कचहरीमें आया तक नहीं—Worthless, old fool (अन्ध, बेबकूद मुहड़ा)

[ रासबिहारी श्लेष और श्लेषसे सम्म मात्से बिजनाका मुँह चम्कते रहते हैं । ]

बिजना — बिजनाने तो अन्न तुम्हारा तक अपमान कर डाला !

रास — ठगते तुम्हारा क्या !

बिजना० — मेरा क्या ! मेरे मुँहके ऊपर वह करे कि दयाल बाबूको रासबिहारी बाबू नहीं आये, मैं खड़ा हूँ ! और यह भी कि दयाल बाबू कुछ काम करें या न करें, उन्हें कोई कुछ नहीं कह सकेगा ! वह मुझे अन्ध कहती है । कहती है, कि बिजनासे मेरे और कर्मचारी काम करते हैं, उछी बिजनास काम करना हा लो करो, नहीं बले बाओ ।

रास०—उसने तो तुमसे केवल पछे जानेको कहा, मेरा लो भी चाहता है कि तुमका गर्दनका देकर बाहर निकाल हूँ !

बिजना—ऐं !

रास०—हमें जो श्लेष 'छोटी जाति' कहते हैं सो कुछ बड़ नहीं है ! इधर हो, बाहिर लो तुम्हारा सबका है न ! बाहर-बाहरका केय हाता लो मत्तमसी लो छिन्ना, अपना मत्तम-मुय भी छमासता, दिवाहितक भी लपका होता, कब फिरसे क्या करना चाहिए, इतनी समीच भी आती । अब बाओ क्या, इस-वैस केकर



कोठोमें बपना पुछेनी काम करते फिरो । उठते-बैठते छोसे छोलेकी तरह पड़ा रहा कि कुछसे घेसते घुमघर्मा एक बार हो बाप, उसके बार धो इच्छा हो ख करना । मगर तुमसे सज नहीं हुआ । तू उठते मिन्नने गया । वह ठहरी राब-बंदगी लड़की—मुपतिह हरि रायकी पाटी, बिनसे सब घर घर बीपते थे । तू गया था हाथ बटुकर ठलकी नाकमें नकैम बाझने—बेबकूत करीब । मान-मुरखान सब गई इतनी बरी बारीदारीकी भाषा और मरोठा गया, हो ली बपए हर महीने आते थे, लो गये । अब बाबू बका, कितानके ऊपर हो लो हलकी मूठ पकड़ो । आवा है मेरे पास बाक ऑल्लि करके उसके नाम नासिध करने । दूर हो—अब मैं तेरा मुँह नहीं देखूँगा ।

[ इतना ब्यकर राजबिहारी संधीसे पैर बटुत हुए बहोसि चले बठ है । पीछे पीछे किम्वत भी मिहलकी तरह बीरे बीरे बका बाठा है । फिर बीरे-बीरे बिबका प्रवेश करती है और टेकिपर सिर लघकर बैठती है । इतनेमें दबाक प्रवेश करत है । ]

दबाक—वह क्या कर बैठी बेटी । और बह भी मुत कैसे एक बदनसीबके लिए ! मैं तो लका, संघेज और पक्कातापसे मरा बाठा हूँ ।

किम्वत—( सिर ठठाकर, ऑल्लि पोछकर ) आप क्या घर नहीं गये !

दबाक—मुससे बाया नहीं गया बेटी । पैर बस-बस करके बीपने लग काम-बेके उस किनारे एक गूबके ऊपर बैठ गया । बहुत-सी बातें कानोंमें पड़ गई ।

किम्वत—न पढ़ती तो टीक होता । लेकिन मैंने कुछ ब्यबाव नहीं किया । आपका बयममान करमेका उम्मे कोई ब्यबिहार नहीं था ।

दबाक—यह क्यों नहीं बेटी । जो काम तुमसे करना चाहिए था, वह मैंने नहीं किया फिर एक जिद्दी लिलकर उनस लुहरे तक मही थी—यह लक क्या मेरा बरराव नहीं है । हमसे क्या मासिहको कोष नहीं आता !

बिबका—कौन मासिह है, विजयन बाबू ! आपनेकी पान्थकिन करत मुसे लका बाणी है दबाक बाबू । लेकिन अगर वह बाया किम्वत है तो मेरा ही है । और किम्वत नहीं ।

दबाक—यह क्या न कहनी चाहिए बेटी,—कोषमें भी नहीं । हमारी मासिह कैसे तुम हो, बेबे ही किम्वत बाबू हैं । नहीं तो हम लक छमाहते हैं ।

विजया—ऐसा सम्मान गलत है। मेरे सिवा इस घरमें और कोई मायिक नहीं है।

दयाल—शान्त होओ बेटी, शान्त होओ। विजया बाबूमें इतना ही दोष है कि वह कुछ ओपी है और पोतेमें ही पंचक हो उठते हैं। लेकिन मनुष्यमें सभी गुण तो नहीं होते, उसमें कोई-न-कोई कमी तो रहती ही है। यहीपर नकिनीसे मेरी राय नहीं मिलती। बिन दिन तुम असुरक्ष होकर शय्यागत थी, उस दिन नरेनका अपमान करनेकी बात सुनकर नकिनी ओपके व्यागकृत्य हो उठी। देखी—इतका अलक्ष कारण विजया बाबूका विधेय है। साखी ईश्वरों और विधेय।

विजया—विधेय काहेके लिए दयाल बाबू ?

दयाल—क्या जाने कैसे, नकिनीके मनमें वह चारबा हो गई है कि तुम मन-ही-मन नरेनपर—करबा—करती हो। यही विजया बाबू सह नहीं सकते।

विजया—करबा तो मैंने उनपर नहीं की। मेरे किसी भी काममें तो उनके प्रति करबा नहीं प्रकट हुई दयाल बाबू।

दयाल—मैं भी तो यही कहता हूँ। कहता हूँ वैसी करबा तो विजया सभीपर करती है। मुझीपर क्या वह कम दवा करती है।

विजया—जी चाहे तो आप लोग दयाल की बात कह भी सकते हैं; लेकिन नरेन बाबू नहीं कह सकते। बल्कि उन्होंने तो बार-बार जो कुछ मुझमें पया है, वह मेरी निष्ठुरताका ही परिचय देता है। आप ही क्वाइए, वह तब है कि नहीं ?

दयाल—( लक्ष्मीके साथ ) ना ना, तब नहीं है—तब नहीं है; लेकिन हाँ, नरेन सब कुछ कुछ ऐसा ही सोचते हैं। उस दिन तुमने काशीप्रसाद दास मेरे घर उन्हा माइकोलोप मेव दिष्ट, तो नरेनने उससे पूछा—उन्होंने किनमे रुपये देनेके लिए कहा है ? काशीप्रसादने कहा—रुपये-पैसेकी बात तो उन्होंने कुछ कही नहीं, यों ही दिया है। इसपर नरेनने कहा—यों ही क्या रे ? काशीप्रसादने कहा—हाँ, यों ही से बाइए। रुपए बान पड़ता है, न देने होंगे। सबमूष इन्पर तो विश्वास नहीं किना बा लकटा। निधाय काशीप्रसादने गलत सुना या समझा है। इससे ही नरेन निगड उठे।

केले—ऊनसे बाहर कह दे कि मुझे इसे दान कर देनेकी जरूरत नहीं है, ठहा करनेकी भी जरूरत नहीं है। बा, छोड़ दे बा।

बिबबा—वह मैं व्यक्तिगतके मुँहसे सुन चुकी हूँ।  
दयाल—लेकिन नलिनीने उन्हें रोका था। उसकी धारणा यह थी कि नरेन्द्रका इसके बिना हर्ष हो रहा है—यह सोचकर ही बिबबाने इसे मेव दिया है—उपकार करनेके लिए भी नहीं और जंग-विद्रुप करनेके लिए भी नहीं। आपने शायद सोचा हो कि हावोहाव या उत्पन्न रूप न लेकर कभी बाहरको किसी दिन रूप के बिने बाँधे। मुझ तो ऐसा ही मान पड़ता है। कदाभी तो बेटी, सब है कि नहीं।

बिबबा—बान्सी नहीं दयाल बाबू। बीपारीकी दशातमें माइक्रोस्कोप मेवा या ठीक ठीक पार नहीं आता कि उस छत्र क्या सोचा था।

दयाल—मात नलिनी जोर देकर कहती है कि यही बात है। वह बेटी—नरेन्द्र कैसे मले, मेकनाथ, अपनेको मूल हुए, निस्सर्व मनुष्यका कोई कभी भयमान नहीं कर सकता—एक सिमल बाबूको छोड़कर। किन्तु नरेन खुद किसी तरह इस बातपर विश्वास नहीं कर सके। केले—बी आरमी मेरी पत्न दुपट्टेके दिन यह मशीन हो सी रूपमें लटीरफर, जो दिन बाद ही अपने मुँहसे इसके बाहर सी रूप में आता है, उसके लिए कुछ भी अपमान नहीं। वे बड़े आरमी हैं, उनके बहुत ऐतर्त्य है, इसीसे हम कैसे नि स्व लोगोकी ईसी उड़ानेमें ही उन्हें आनन्द मिळता है। खैर, बाने ही वे सब बातें बड़ी। मैं हम दोनोंको बाहरला है प्रेम करता हूँ। इससे क्लेश होता है। (बाप चुप रहकर) लेकिन नरेनने हमारे विषयको अपने हृदयसे दूरी कर दिया है। वह ऐसा दुष्कृत भयमानक और निराल्य आरमी है कि लम्बेने वह सुन बिबा है कि हम दोनोंका आह पका हो गया है, वह भी उठने नहीं सुना। हमारे कपड़े बाहर लटक कर हम समझाती बाबूने उसे यह जगह तुम्हारे तब केने वह थाक पड़ा और विद्रुप बाबूके ओबका कारण समझ पानेपर उठने उन्हें उत्पन्न ही समा कर दिया। कष्ट इतना ही वह अब तक नहीं समझ पा रहा है कि उन केने गरीब, पारहीन जननीका विमान बाबूने ऊँचकी दृष्टिसे केने देखा। इतना बड़ा प्रेम उनकी केने हुआ। मैं भी ठीक यही सोचता हूँ। कदा नलिनी ही मदन दिखती है—वह सब बातें सुन चुकी है।

विजया—सुन चुकी हैं ! सुनकर क्या कहती हैं नखिनी !

रमाक—कहती कुछ नहीं, केवल होंठ दबाकर हैंछती हैं—मुमकटा देखी है।

विजया—वह क्या पाछी गई !

रमाक—नहीं ! आप बापगी। उसने कहा था कि बाते समय एक घर मुमसे मिछकर बापगी। अब घायद तीन बचनेवाले हैं, बाती ही होगी या फिर बाखद नरेनके लिए ठहरी होगी।

विजया—आप कककसेते वह बानेवाले हैं !

रमाक—हाँ। मेरी स्त्रीको देखने आवेंगे। लेकिन नरेन अगर कककसेते कही बच गया बेटी, तो ककसे कदकर मुसे ही कठिनाई होगी।

विजया—वह कही बानेवाले हैं क्या !

रमाक—हाँ। अभी परतो ही कहता था कि अब वहाँ रहनेकी ठकरी हकम नहीं है। दक्षिण-अफ्रीका (South Africa) में कहीपर काम मिक्नेकी सम्भावना है। वहाँसे ककर पाते ही वह रवाना हो बापगा।

विजया—इतनी दूर !

रमाक—हम लोगोंने भी वही कहा। लेकिन वह कहता है कि मरे लिए क्या दूर और क्या नेरे ! क्या बेघ और क्या बिबेघ ! सम्ये बताकर है। सुनकर खचा, सब ही तो है। यहाँ ऐसा क्या आकर्षण है जो उसे अपनी ओर आकृष्ट किये रहे ? किन्तु वह खोजनेसे भी जैसे औत्सोमों औत्सु भर आते हैं। अफसस अब बाता है बेटी, याका-ना काम बापी है, उसे बाकर पूरा कर दालें।

विजया—लेकिन धर पाते समय और एक बार मुससे मिय स्त्रीदिपगा—  
वो ही न बले काइपगा।

[ काशीपदका प्रवेश । ]

कशीपद—( रमाकसे ) डकटर लाहव आपसे मिक्ना बाहते हैं।

रमाक—कौन डकटर, हमारा नरेन ! मुससे मिक्ना बाहता है !  
वहाँ बाकर !

कशीपद—नीचेकी पैठकमे बिठाऊँ, या बले बानेके लिए कर दूँ !

विजया—परदे बानेके लिए कह देगा ? क्यों ? ना, मेरे इसी कमरेमें उनके कुछ धन ।

( सिर झिझकर काशीपदका प्रस्थान । )

दयाल—वहाँ कुछना क्या अच्छा होगा बेटी ?

विजया—मरे घरके मझे-बुरेके बिचारका मार मेरे ही ऊपर रहे दयाल बाबू ।

दयाल—ना ना, यह मैं नहीं कहता । किन्तु बिजयाबाबू तुन पढ़ेंगे तो क्या—

विजया—मैं समझती हूँ कि उनके तुन पानेकी ही बसल है । उससे अपने बचानेके स्थानके सम्बन्धकी धारणा पक्की होगी है ।

( काशीपदका प्रवेश । )

काशीपद—डाक्टर साहब आये नहीं, चले गये ।

दयाल—कहे गये ? क्यों ?

काशीपद—पूछ, मिस दास हैं ? मैंने कहा—नहीं । बोले—तो फिर कोई बसल नहीं, उस घरमें ही मेट होगी । इतना ही कहकर चले गये ।

दयाल—मार्जने कुछना है, यह कहा था ?

काशीपद—कहा क्यों नहीं । बीछे, आव अथ समय नहीं है—अ बनेकी गाड़ीसे ही छोट जाना है । फुरलत किसी और समय हुआ तो और कितने दिन आकर मिक पढ़ेंगे ।

दयाल—( लज्जामागसे ) क्या जाने । ऐसी तो उत्तरी प्रकृति नहीं है बेटी । जान पड़ता है, लज्जामुख ही बड़ी बसती होगी जानेकी ।

विजया—( काशीपदसे ) अच्छा अब तू ना बहसि ।

[ बानेके लिए धूमके ही काशीपद सहसा अल्ला हो उठा । बोला—बड़े बाबू आ रहे हैं, और संजोबके साथ अन्य द्वारसे निकल गया । बीबी पालसे उत्तरीहारी काबूका प्रवेश । ]

रात—वहाँ हैं बेटी विजया । दयाल बाबू भी बेल पड़ते हैं । बैठो बेटी, बैठो—बैठो ।

[ दयाल बाबूने लज्जामुखके प्रथम किता विजया उठ लड़ी हुई । उत्तरीहारीके आसन ग्रहण करनेपर विजया भी बैठ गई । ]

रात—यह अच्छा ही हुआ तो दोनों जनोसे एक ही साथ एक ही

ही बनाह में हो गई। और भी पहले आ सकता था, किन्तु किसीको एकाएक लुई-गर्मी बैसा कुछ हो गया। सिरपर मुँहपर पानी डालकर हवा करनेसे, बस वह कुछ सुख हुआ तब कहीं आ सका। उसके मुँहसे सभी कुछ सुन पाया दयालु बाबू—( दयालु कुछ कहनेकी चेष्टा करते हैं, पर एतद्विहारी हाथ हिम्मतकर उन्हें रोक देते हैं )—ना ना ना, उसके दोषोंको घेनेकी चेष्टा न कीजिएगा दयालु बाबू। वो आप सरीखे साधुप्रकृति मगधराज पुरुषका भी अनुमान कर सकता है उसके पहले कहनेको कुछ नहीं है। आपके काममें हिम्माई देना पड़ी है—लेकिन इससे क्या ! साहब लोग किसीकी कसम्पनिष्ठा और उसके कर्ममय जीवनकी स्मरण बहाल करे, लेकिन हम साहब नहीं हैं। कर्मने ही तो हमारे लक्ष्य की नींवपर अधिकार नहीं कर सिका है। लेकिन उसने वह दण्ड पाया किसे ? देखी दयालु बाबू, उस कस्यामपकी कसना—उसने वह दण्ड उसीसे पाया, जो उसकी बर्मेसंगिनी है, जिसका आत्मा बुरा नहीं है। कुल कुल जियो बेटी, बही तो चाहिए। बही तो मैं तुमसे आशा करता हूँ ! ( धममर नाद ) लेकिन यह मैं किसी तरह नहीं समझ पाता कि जिसका मुझ जैसे लीके-साथे, झंसेझंसे, सत्तासे बिरक्त पुरुषका बेत होकर इतना बड़ा कर्मपद, पका हिम्मा और दुनिवादाह कैसे हो उठा ! मगधराज की यह कैसी स्मृति है कि संसारका रहस्य कुछ भी समझनेका उपाय नहीं हैगयेयी !

दयालु —उनका कुछ दोष नहीं है एतद्विहारी बाबू, मुझसे ही मारी अनुयाय हो गया है। इस तरह अवस्थामें ही उनकी कैसी कसम्प-निष्ठा है, कैसी विचष्टी बढ़ता है, वह कह नहीं सकता। उन्होंने जो कुछ कहा वह उचित ही था।

राज०—उचित था ! अवश्य मुझे सबकुछ ही कुछ होगा दयालु बाबू। आप भक्त हैं, शानी हैं, लेकिन अवस्थामें मैं बड़ा हूँ। वह मैं जानता हूँ कि संसारमें ' अति ' किसी चीजकी—किसी बातकी—अच्छी नहीं होती। यह भी जानता हूँ कि जिसका कर्ममय मात्र है। कर्मके मर्मसेमें वह अनुया है और कुछ नहीं देखता। किन्तु इसके यह माने नहीं कि मानीके मानीकी भी रखा न करनी होगी। ना, ना, मैं बूढ़ा आदमी हूँ, वह तेज भी नहीं है, वह जोर भी नहीं है—इसे मैं ' अक्षय ' नहीं कह लूँगा। अपना ठण्डा है, इस स्थिति इस मुल्ले मिथ्या बात तो निश्चय नहीं सकती दयालु बाबू।

दयाल—साबु ! साबु !

रात०—वह अपना ही दुआ बेटी । मुझे बापार आनन्द प्राप्त हुआ कि नियतको पर लोकोत्तम शिवा आनन्द तुम्हारे ही हाथ पायेका सुखीय प्राप्त हुआ । किन्तु मेरे इस प्रगल्भी तो देख रहे हैं बाप दयाल साबु—आनन्दमे हठना अपनेको बूझ बैठा हूँ कि अपनी बेटीको ही लगाने बैठ गया । जैसे वह मुझसे कम उत्तम मंगल चाहनेवाली हैं । आनन्द इतना आनन्द तो मुझे इसी लिए है कि तुमने अपना कम अपने हाथसे किया है । उत्तरी शरी मन्त्र देखना तुम्हारे ही हाथों ही लक्ष्मी है । उत्तरी छवि, तुम्हारी बुद्धि । वह भार वहने करके बनेया, तुम यह दिखानोगी । बगरीकर । ( बाई लडाकर ) ओह ! बार कमनेवाले हैं । अभी बहुत कम बकी है । पक्का हूँ बेटी विजया ! पक्का हूँ दयाल साबु ! ( जानेके लिए ठपठ होते हैं । )

दयाल—बखिर, मैं भी पक्का हूँ ।

रात०—लेकिन अलक यह तो अभी करनेको बकी ही है । ( बाईकर बैठ जाते हैं ) अपने इस बूढ़े काका साबुका एक अनुपेय तुम्हें रक्षना ही होना बेटी । लोभी, लोभी !

विजया—क्याह, क्या !

रात०—अम्मा, जया और फलानेसे वह भीतर-ही-भीतर कम बा रहा है । लेकिन इस बार तुम्हो कुछ कठिन बनना पड़ेगा । उसके लक्ष्य मँझते ही लक्ष्य मूक बाकी, वह न हो । लक्ष्य उसे पूरी मिलनी चाहिए । कमसे कम एक दिन भी वह इस तुलको भोगे, वही मेरा अनुपेय है ।

विजया—विजय साबु क्या अमानक आशुष हो पके थे !

रात०—ना, लो मैं न कहूँगा—वह कुछ भी नहीं है—वह यह तुम्हें कोई ककरत मगी है !

विजया—कभीपक !

( कभीपकका प्रवेश । )

कभीपक—जी—

विजया—विजय साबु दफ्तारमें हैं । उन्हें बरा तुल्य बा ।

कभीपक—जी आवा ।

( कभीपकका प्रस्थान )

रात०—( कोहपूर्वक सिखायीके सारमें ) जी बेटी ! तुम्हारे तुमसे रहा

नहीं गया, अभी ही हुआ मेरा ! (हँकर दयालुते) ठीक यही हर या मुझे दयालुवान्, वह दुखी हो रहा है, यह मुनते ही बिबबा सहन न कर सकेगी—  
—इसीसे मैं कहना नहीं चाहता था—न जाने कैसे अचानक मुझसे निकल पड़ा—लेकिन मैं रोऊँ कैसे ! मेरी बेटी कबनामयी है, यह तो संसारके सभी लोग जान गये हैं ! बसिय दयालु बानू—

दयालु—बसिय ।

( काशीप्रद का प्रवेश । )

काशीप्रद—छोटे बानू घर चले गये, उन्हें दुखानं आरामी गया है ।

एल०—आरामी गया है ! आब उसे न दुखती, सभी अच्छा होता बेटी ।  
लेकिन—ओः ! इस गड़बड़में हम एक बहुत बड़े कामको भूले जा रहे हैं ।  
दयालु बानू आज नये साज्ज पहन दिन है । हम जोगोकी बहुत दिनोंकी कसना है कि हम आजके छम दिनमें विशेष कससे बेटीको आशीर्वाद देंगे ।  
इस स्थिति वह अच्छा ही हुआ कि हमारे बिना कोई ही आरामी किसीको दुखाने लख गया ! वह भी उसी कबनामयका निर्दोश है । आइए दयालु बानू, और बिलम्ब न करिए—ठाठारय आपोवन सम्पूर्ण कर लें—बिलम्बके आते ही हम छोट अकर बिबबाकी अपनी छोटी कसबाय-कामना अर्पण कर पायेंगे ।  
आइए, बसिय ।

[ दोनोंका प्रस्थान । बिबबा जानेके पहले टेबलके ऊपरकी चिट्ठियाँ और कसबा-पत्र कसबेसे उठाकर रख रही थी । इसी समय काशीप्रदने तिर मौतर निकलकर कहा—]

काशीप्रद—माँजी, अकर ताहब—(कहकर आराम हो जाता है ।)

[ नरेन्द्रका प्रवेश । ]

नरेन्द्र—(हर और छपी एक तरफ रलते रलत) ममस्वर ! राहसे ही छोट आपा । खेपा, आप बेसी बामिदाय है, उससे, अगर न गया छे बहर नापब होगी ।

बिबबा—बेहद नाराज होकर मैं आपका क्या कर सकती हूँ !

नरेन्द्र—क्या कर सकती हैं, यह खयाल नहीं है, असल बात यह है कि क्या नहीं कर सकती ! लेकिन यह ! देखना हूँ, मेरी दयालु बानू कामरा हुआ है ।



बिम्बा—भायकी दवासे हुआ, यह भायने कैसे जाना। मुझे देखकर वा  
किसीसे सुनकर।

नरेन्द्र—सुनकर। क्यों, भायने क्या दवाक बाबूसे नहीं सुना कि मेरी  
दवाको जाना तक नहीं पड़ता, केवल मुल्लेको एक नजर देखकर और फरकर  
देक देनेसे भी भायके स्वप्न काम हो जाता है। हा हा हा हा—

बिम्बा—( हँस देती है ) इसीसे हायर बाकी भाया रोग दूर करनेके  
लिए राहसे झूठ भाये है। लेकिन ठगर नकिनी बेचारी को भायकी राह  
देखती होगी।

नरेन्द्र—यह बात बकर है। दवाक बाबूकी झीको एक बार ककर देस  
जाना होमा। लेकिन मेरे लिए भाय विषय बाबूके साथ अपना लगावा कर  
बैठी। छी छी छी छी—हा—हा—हा हा—

बिम्बा—इसी बली भायसे किलने कर दिया।

नरेन्द्र—दवाक बाबूने। अभी अभी नीचे उनका मुकाफत हुई थी—छी  
छी छी—यह भायका मारी अपना है।—मारी अपना। हा हा हा—

बिम्बा—अनाथ मेरा है, लेकिन भाय इतने प्रेम क्यों हो उठे।

नरेन्द्र—( गंभीर होकर )—प्रेम हो उठा। किन्तु नहीं। बकस यह बात  
तुमूल समझे बलीकर नहीं कर सकता कि सुनकर पहले परक कुछ भायोर-ता  
मनम पका वा; किन्तु उसके बाद बास्तवमे मुझे हुआ हुआ। भायकी ही तरह  
विमल बाबूका मित्राव भी ठठना नहीं है। जान पड़ता है, मजिजमे  
भाय लोभमे दिन-रात बादी बजेगी।

बिम्बा—भाय यही तो चाहते हैं।

नरेन्द्र—( हँसते बीच बाककर, प्रसन्न भावसे ) ना ना ना ना, छी छी,  
यह बात न कहिए। लक्ष्मण ही सुनकर मुझे क्या सेर हुआ। यह ठीक है  
कि उनका मित्राव अपना नहीं है; लेकिन भाय स्वयं भी बलरिणु होकर कुछ  
अपमानकी बातें कर बैठे, वह भी मारी अपना है। भाय ही लेखकर देखिए,  
बात समय बाहिर हो भाय तो मजिजमे बैठी लक्ष्मण भाय हीमी।  
राजकर मेरे लिए भाय दोनोंके बीच ऐसी एक अमीशिकर घटना घटित होनेसे—  
बिम्बा—इसीसे भाय बाबूके मारे इसी नहीं रोक पाते हैं।

नरेन्द्र—( गंभीर मुद्रासे )—जी जी आप क्यों बार-बार ऐसा समझ रही हैं । विवाह कीविधि, सचमुच ही बहुत दुष्प्रसू हुआ है । लेकिन तब मैं आप लोगोंके सम्बन्धमें कुछ नहीं जानता था । कुत्तारकी तर्जामें एक साधारण-सी बात आपके मुँहसे निकल गई थी, उसीसे इतना सब बसेड़ा ठठ लड़ा हुआ । पहले तो निराश्रयकृष्ण उस मास वेल्समें मैं इतना ही हो गया, उसके बाद बाहर ल बाहर राखबिहारी बाबूने मुझसे जो कुछ समझाकर कहा, उसका भी इशारा यही ईर्ष्या थी और मित्र नखिलीने भी स्पष्ट सम्बन्धमें उसे ईर्ष्या बताया । इत्यादिबाबूने भी उसीका समर्थन दिया । मुझमें मैं तो कभीसे मरा जाता हूँ, अब य सब कहता हूँ आपसे, कि इतने लोगोंके बीच मुझ जैसे एक नयन आदमीमें किसीकाबूके ईर्ष्या करने लायक क्या है, यह आप तक मैं नहीं सोच पाया । ( खामख मौन रहकर ) आप लोग तो आश्चर्य होनेपर सभी लोगोंसे बातचीत करती हैं । इन्हें उन्होंने क्या दोष देखा पाया ? कैद, या कुछ ही, आप लोग मुझे माफ़ करेंगे, और वह कैदामें क्या कहते हैं—अभि—अभिर्नदन—मैं भी आपका यही क्रिये जाता हूँ । आप लोग सुनी हो ।

विवाह—( मुँह बूझी और फेरकर ) अभिर्नदन आज न करके, उसी दिन आशीर्वाद दीविधि न ।

नरेन्द्र—उस दिन ? लेकिन तब तक मैं यहाँ ठहर सकूँगा ?

विवाह—ना, वह न होगा । राखबिहारी बाबूको बचन दे चुके हैं आप । आपको ठहरना ही होगा ।

नरेन्द्र—बचन तो नहीं थी है, लेकिन कबान देतीही ही इच्छा होती है । अगर रहा तो आश्रय ही आर्तिका । ( विवाह छिगाकर अर्द्ध पोंछ उठती है ) अच्छी बात है । मुझे और एक बातके लिए धमा मोंयना है । उस दिन एकएक अस्थिपदके हाथ माइकोल्कोप क्यों मेव दिया था ।

विवाह—अपनी चीज आपने आप ही तो बापस मोंयी थी ।

नरेन्द्र—हाँ तो ठीक है । लेकिन दामोदर बात तो कहता नहीं मेरी । तब तो —

विवाह—मुझसे भूल हुई थी । लेकिन उस मूर्खकी तब भी तो आपने मुझे कुछ कम नहीं री ।

नरेन्द्र—लेकिन काहीपदने जो कहा—

विजया—वह चाहे जो करे, लेकिन आपने वह कैसे विस्मृत कर दिया कि आपने उपहार देनेसे लज्जा में कर लक्ष्मी हैं ? अगर सम्मुख ही ऐसी स्पर्धा मैंने की थी, तो आपने अपने हाथसे उसका दण्ड क्यों नहीं दिया ? नौकरके द्वार मेरा अपमान क्यों किया ? आपका मैंने क्या मिताया था ?

[ अन्तर्द्वार धक्का उसके गलेमें बैठे गिरा गये । वह उठकर शिकम्भीके पास का काढ़ी हुई और बाहर लाफने लगी । ]

नरेन्द्र—उसी समय मेरी समझमें आ गया था कि वह काम ठीक नहीं हुआ । उसके बाद बहुत सोचता रहा—और वह देखिए—वह ईर्ष्या केन्द्रित होती थी । वह केवल अपनी शोकमें आप ही नहीं बदली जाती, बल्कि झूलझूलती सीमातीक्ष्णी तरह वृत्तरेपर भी हमला करनेसे बाध नहीं आती । माथे से मैं निश्चयसे जानता हूँ कि किञ्चित् काबूभी मुझसे ईर्ष्या करने बेसी मूढ़ और नहीं हो सकती । किन्तु उस दिन नखिलीके मुँहसे वह ईर्ष्याका छन्द मेरे कानोंमें पहुँचकर बैठे निप गया है—बैठे किसी भी तरह इसे मूढ़ नहीं पठा ।

विजया—( बैठे ही वृत्तरी और मुँह फेरे हुए ) फिर मूढ़ कैसा गये ?

नरेन्द्र—( हँसकर ) बहुत कोशिश करके । बड़ी मुश्किलसे । केवल वही बार बार मनमें आने लगा कि निश्चय ही ईर्ष्याका कोई कारण है, नहीं तो अचानक कोई किसीसे बाध नहीं करता । आपसे क्या मैं सब कहता हूँ उसके बाद कई दिन तक बीबीसे धक्के टिक आपका ही स्वरूप मेरे मनमें बना रहता था और आपने उसके बीबीसे जो बातें कही थीं, वे ही रह छुटकर बाह आती थीं । वही तो मैंने अभी कहा कि वह कैसा भयानक संक्रामक रोग है । कम कम घूँटनेमें घना, दिन-रात आपकी ही बातें मनमें चक्कर काटती हैं । इसकी क्या चिकित्सा थी, कहाँ से मध्य ? फिर क्या केवल नहीं ? आपको देखनेके लिए ही बीबीतीन दिन इसी राहसे पैदल गया-आया हूँ । कुछ दिन तक एक अच्छा पक्का भूत मेरे कंधेपर लगा रहा ।

[ हतना कहकर वह हँसने लगा । विजया

कुछ न कहकर कमरेके बाहर चली गई । ]

नरेन्द्र—( उठी और विलम्बके साथ देखकर ) अब वह क्या हुआ ? नम्राव होनेकी क्या बात मैंने कह दी ?

( कायपीनक प्रवेश । )

कासीपद—आप खले न बाहर गया। माथीने कहना मेरा है कि आप बाप पीकर बाहर गया।

नरेन्द्र—ना ना, उम्हें बाहर मना कर दो। मैं बस बापूके वहाँ बाप पियूँगा।

कासीपद—लेकिन माथीको बुला होगा।

नरेन्द्र—नहीं, हुक न होगा। उनसे बाहर कहो, आज मुझे समय नहीं है।

कासीपद—कहवा हूँ बाहर, लेकिन वह कभी न मानेगी।

[ एक ओरसे कासीपदका प्रस्थान और दूसरी ओरसे विद्याका प्रवेश। ]

नरेन्द्र—इत तरह एकएक कर खड़ी गई।

विद्या—कित तरह खड़ी गई।

नरेन्द्र—कैसे नाच रहे।

विद्या—तब तो देखती हूँ, आपकी धौलकी नजर कुछ गई है।—अच्छा, उठ भूखी कहानी बन समाप्त कर दीजिए।

नरेन्द्र—कित भूखी कहानी।

विद्या—वही जो पायल भूत कुछ दिन तक आपके कंधेपर सवार था। वह उतर तो गया न।

नरेन्द्र—(हँसकर) ऊँ—वह? हाँ, वह उतर गया।

विद्या—तो वह कहिए कि आप ख गये। नहीं तो कौन जाने, और कितने दिन वह आपका इत राहमें जुड़बोड़ करता करता फिरता।

कासीपद—( प्रवेश करके, नरेन्द्रकी ओर इशारा करके विद्यासे ) वह बाप नहीं पियेगा माथी।

विद्या—( कासीपदसे ) क्यों नहीं पियेगे। जा, तु बाप बनाकर खनेके किए कह दे। ( कासीपदका प्रस्थान। )

नरेन्द्र—मुझे माफ़ करिए, आज मैं बाप नहीं पी सकूँगा।

विद्या—क्यों नहीं पियेगे। आपको निश्चय ही बाप पीकर पाना होगा।

नरेन्द्र—( सिर झिझकर ) ना, ना, यह ठीक न होगा। उठ दिन उनसे बात किया था कि आज आकर उन खेतोंके वर पाप पियूँगा। न पीनेसे वे बहुत दुःखित होंगे।

बिजया—वे लोग कौन ? क्या सब कुछ ही का नकिनी ?

नरेन्द्र—दोनों ही बुझी होंगी। शावर मेरे लिए वे सब तैयार किये देती होंगी।

बिजया—तेजारीकी बात छोड़िये, संझिये हुआ। पानेको क्या क्या वे ही हैं और कोई नहीं है क्या ?

नरेन्द्र—और कोई कौन, दवाब सब ? (हँसकर) नहीं नहीं—बह बड़े शान्त आत्मा हैं—सीधे-साधे निरीह। इनके लिए उन्हें तो मैं अभी इसी घरमें देता हूँ। उनका डर नहीं है किन्तु वे बहुत नायब होंगी।

बिजया—वे कौन नरेन्द्र सब ? वे और कोई नहीं हैं—हैं केवल नकिनी। यही का-पीकर जानेस वही नायब होगी। कहिये, उन्हें आपका डर है, कहिये, वही कात कात है ?

नरेन्द्र—नायब होनेमें आप कोई कम नहीं हैं। आपको ध्यान देकर अगर वही का-पी करता तो क्या आप ही कम नायब होतीं ?

बिजया—तो काहूँ, कसरी काहूँ। आपको बहुत डर हो गई है, अब और न रोऊँगी।

नरेन्द्र—हाँ, डर बसर हो गया है। झूट जानेके लिए उन्हें ठाठ बजेकी माफ़ी शायद अब न पकड़ सकूँगा।

बिजया—पकड़ क्यों ? पाँके ? क्या नकिनी आपस बात बने तक आपका विचारही रहेगी ? वही तो तनिक-सा काहूँ ही आप नहीं-नहीं करने समझे हैं। सैकड़ों अनुरोध-उपरोध करने पर भी बात नहीं रकते; उपेक्षा करके ठठ बैठते हैं।

नरेन्द्र—पह आपका किन्तुक उत्तर अभियोध है। आपकी ओर भविष्य विचार-मग्न रोग आपसे कड़कर सत्तारमें और किसीकी है क्या ? और उपेक्षा करके किसीका निस्तार है भला ? डरस ही काम शुरू जाती है।

बिजया—संझिये आप तो नहीं करते; वही देखिये, मजबूत उपेक्षा करके बैठे का रहे हैं।

नरेन्द्र—उपेक्षा करके नहीं, तब छोड़ोसि बधा कर चुका हूँ, इसीसे का रहा हूँ। और केवल कसता ही नहीं है, एक किताबकी जुड़ बातें नकिनीकी समझमें नहीं आ रही हैं, वे भी समझाती होगी।

बिबबा—कौन-सी किताब ?

नरेन्द्र—एक हास्यीकी किताब है। उनकी दुष्टता थी। ए वस करनक बाद मंडिकस कस्मिमें मर्ती होनेकी है। इसीसे वो कुछ साधारण सा ज्ञान मुझे है, उससे उनकी थोड़ी-बहुत सहायता कर देता हूँ।

बिबबा—आप क्या उनके ग्राहबेट टपूर हैं ? येतन क्या पाते हैं ?

नरेन्द्र—बह कहना आपका अन्याय है। आपकी शतशतके हंगले मुझे अक्षर बान पढ़ा है कि आप उनपर प्रसन्न नहीं हैं। मगर बह आपपर कितनी भद्रा रखती है बह आप नहीं जानती। वहाँ जानेके बादसे जिनने अग्ल काम आपने किये हैं उन सक्ता कमान में उनके मुकसे मुन्ता रहता हूँ। आपकी कितनी बातें बह किया करता हूँ। आप दोनों एक ही कालिबमें पढ़ती थीं; आप बड़ी-सी गाड़ी-बाड़ीपर बैठकर आती थीं; सब लड़कियों आपको ताकती रहती थीं। नकिनी कह रही थी—आप बैसी रुसखी थीं बैसा ही आपका नम्र आचरण और मधुर स्वरहास था। आपसे उनका परिचय न था किन्तु तभीसे बह और अन्य सभी लड़कियों मन-ही-मन आपको प्यार करती थीं। इसी तरहकी न बाने कितनी बातें होती रहती हैं।

बिबबा—कब केकब बातें ही होती रहती हैं तो आप पढ़ते किन समय हैं ?

नरेन्द्र—पढ़ता कब हूँ ? मैं क्या उनका मस्तर हूँ ? या मेरे ऊपर उन्हें पढ़ानेका मार है ? आपकी तब बातें ऐसी डेढ़ी होती हैं कि बान पढ़ा है, खीची बल कहना आपका सीसा ही नहीं।

बिबबा—सीखती कैसे ? मास्टर वा कोई या नहीं ?

नरेन्द्र—फिर बही डेढ़ी बात।

बिबबा—( हँसी आ जाती है ) लेकिन आप कार्येग कर ? लाना-पीना न हो आप न हुआ सही, लेकिन पढ़ाना न होनेसे तो मारी लति होगी।

नरेन्द्र—फिर बही। ब्रता हूँ। ( टोपी हाथमें लेकर कई पग आगे बढ़कर झरके पास सहसा ठिठककर ) एक बात कहनेको थी लेकिन हर ब्रता है बही आप नाताज म हो जावें।

बिबबा—नाताज ही अगर होठेंगी तो उसकी आपको क्या बिम्ब है ? देना

मरवा कर दो—कहकर लख बाँसों दिलाऊँ, यह भी तो आप नहीं हो सक्ता ।  
 हर आपकी इच्छा है ।

नरेन्द्र—फिर बेसी ही डेढ़ी बातें । लेकिन सुनिए । यहाँ बसते आप  
 आई हैं, आपने बहुतसे कार्रवाई किये हैं । कितने ही विपत्तिके मारे गरीब  
 आध्यात्मिक कष्टों का समाप्त कर दिया है; कितने ही दीन-दुखी गरीबोंको  
 दान किया है, धर्म-मन्दिरोंकी स्थापना की है—

विजया—वह सब कितने सुनाया ! नकिनीने ।

नरेन्द्र—हा, उन्हींके मुँहसे सुना है । कितने ही गरीब हरिज बहुत कुछ  
 पा गये, मैं ही क्या कुछ न पाऊँगा ? मुझे आज वह माइकोल्कोप उपहार  
 दीविए, कल का परतों उतके दाम मेव दूँगा ।

विजया—दाम बेकर उपहार लेनेकी बुद्धि कितने आपको ही है ? नकिनीने ।

नरेन्द्र—ना ना, उन्होंने नहीं । उन्होंने सिर्फ़ यह कहा था कि वह आपके  
 तो किसी काम आया नहीं लेकिन वह पावें तो उसके बहुत काम आयेगा ।

विजया—अर्थात्, वह का पौँजेगा उनके हावमें । मैं देखूँ तो आप उसे  
 ल बाकर उन्हें उपहार देंगे—वही तो आपका प्रस्ताव है ।

नरेन्द्र—ना ना, वह नहीं है । बात यह है कि वह आपके भी किसी काम  
 नहीं आया, और अन्य सभीकी बाँसोंमें लटकनेकाला बनुछाल बन गया है ।  
 हमेंसे कह रहा था—

विजया—कहनेकी कोई जरूरत न थी नरेन बाबू । आपके पाठ बपोंकी  
 कमी नहीं है; बूझनोपर और भी माइकोल्कोप मिल सकते हैं । मोल लेकर  
 ही अगर उपहार देना हो, तो उन्हें बाजारसे ही करीब दीविएगा । वह मेरे  
 लिए जानु छल होकर ही मने पाल रहा ।

नरेन्द्र—मगर—

विजया—अगर-मगरकी कोई जरूरत नहीं । आप बेकर अपना भी छल  
 नष्ट कर रहे हैं और मेरा भी । और भी तो काम हैं ।

नरेन्द्र—( खनकर हलबुद्धि-वा विजयाकी ओर ताकता रहता है ) मैं  
 आपके सामने सब बातें अच्छी तरह समझाकर कह नहीं पाया और आप

मिथक उठती है। हो सकता है, आप मनमें समझती हों कि मैं अपनी व्यस्तताको छेपकर आप सेगोष्ठी कराकरीका होकर बचना चाहता हूँ। लेकिन वह कभी सच नहीं है। आपके घरमें आते हुए मुझे कितना संकोच होता है, वह मैं ही जानता हूँ। यहाँ आकर क्या करते क्या कह बैठता हूँ, अपना अनुमन ठीक नहीं रख सकता और आप खीझ उठती हैं। लेकिन वह मेरी अस्ममनस्क प्रकृतिका दोष है—मेरा मर्यादा आपकी अमर्यादा करना नहीं होता। और, जब मैं फिर आपको लिखाने नहीं आऊँगा। नमस्कार। (धीरे धीरे प्रस्थान।)

[तेबीस घेर रहते हुए स्वयं मात्रसे रसविहारीका प्रवेश। उनके पीछे दमस्त हाथमें चौंतीके पायमें फूल, चदन, अच्छ और एक बोड़ी लानेके मोट कदम किये हुए हैं। दमस्त बाबूके पीछे या नौकर हाथमें फूल-मालाएँ इत्यादि किये हैं। उनके पीछे विजवाके दफतरक सब कमचारी हैं। विजवा कुर्ची छोड़कर उठ लगी होती है।]

रस०—बड़ी विजवा, आज नये सातका पहला दिन है, वह क्या दुर्घट स्मरण है!

विजवा—कुछ देर पहले ही आप कह गये हैं, नहीं तो नहीं बा।

रस०—(मुनकापर) तुम भूल सकती हो, लेकिन मैं कैसे भूलूँ! वही तो मेरा ज्ञान-स्मरण है। बनमाखी बीते होते तो आपके दिन वह क्या करते, पाह आता है बेटी!

विजवा—बाह क्यों नहीं आता। आबक दिन वह मुझ विरोध करके आशीर्वाद दत।

रस०—बनमाखी नहीं हैं, लेकिन मैं तो हूँ। लाना या, वह कर्तव्य सबेरे ही पूरा करैगा। तुम दोनोंके स्मरण, आयु, निर्दिष्ट जीवनकी मित्रा मर्यादाके भीतरनोमें मौजूद। किन्तु कई कारणोंसे उसमें बाधा आ पड़े। पर बाधा तो लय नहीं है वह मिथ्या है। उसे तो मैं स्वीकार नहीं कर सकता बेटी। जानता हूँ आज तुम्हारा मन अधिपर है, तो भी मैंने दयासे कहा—मरह, आपके इस पुण्य दिनको मैं अर्घ्य न बामे दे सकूँगा; तुम तैयारी करो। तैयारी बाह किन्ती अकिञ्चन हा,—मैं आप भी तो बड़ा अकिञ्चन हूँ बेटी। दयालुने कहा—अब समय क्यों है! दिन बा रहा है। मैंने और देकर कहा—बेधा नहीं बीती—अभी



समय है। मैं अब कोई विपन-बाधा नहीं मारूँगा। आनन्दनकी लक्ष्मणसं क्या भला बाधा है बस। आनन्दनसे केवल बाहरके लोगोको ही बहकावा जाता है; लेकिन वह तो मेरी विजया है। बेटी लक्ष्मण ही नेगी कि वह उसके पितृहन्त कष्ट बाबूको हार्दिक शुभकामना है। खेय लौं गये मेरे घर। मास्सी बागमें फूस छोड़नेको बोड़ गया। माँगिकि लक्ष्मणी हकड़ी होनाम देर नहीं लगी। मुकुट-माख बौरह नहीं है न लही—बाका बाबूका भागीदार तो है।—बेसे ही सोचा बिजयत क्या नहीं आया, बेसे ही याद आया कि वह आये कैसे? यह खाइस उसमें क्यों है? फिर सोचा अच्छा ही हुआ कि वह लक्ष्मणके मारे क्यों लुछ बैठा है। ऐसा ही होता है बेटी—अन्यायका इण्ड धेसे हो प्राप्त होता है।—जगदीश्वर। ( पड़ीमर बाद ) तब इफतरमें आकर आबाब ख्याद कि तुम कौन कौन हो यहाँ, सब आओ हमारे साथ आजके दिन मैं तुम लोगोके मित्र भी बिरतनके लिए बिजयाके बस्मा-करी मित्रा माँग लेना चाहता हूँ।—आओ ली बेटी, मर पास।

[ इतना कहकर वह आप ही आगे बढ़ जाता है। बिजया उद्ब्रान्त मुक्तसे अकलक चुनबाप लफे ठाक रही थी। अब उसने गर्वन लुका ली। रासबिहारीने उसके नाममें बन्दनका टीका लगाकर ऊपर फूफ बिसेर दिये। ]

रास०—संसारमें आनन्द काम करो; लारख, सम्पत्ति और आसु बदे; ब्रह्मन्दमें अटक ब्रह्मा, भक्ति और विस्वास हो। आबके पुष्प दिनमें तुम्हारे कजा बाबूका पही भागीदार है बेटी।

[ बिजया दोनों हाथ जोड़कर मध्यस लगाकर नमस्कार करती है। अनेक लोगोके हाथमें फूस वे। उन्होंने वे फूस बिजयाके ऊपर बिम्बर दिये। ]

रास०—बेटी, तुम्हारे दोनों हाथ —( इतना कहकर बिजयाके हाथ लीचकर उनमें एक एक करके दोनों कड़े पहनाकर ) बसकि हिन्दस्ते इन बड़ोकी बीम नही भौकी जा लफटी। यह तुम्हारी —( एक कड़ी लौं छोड़कर ) वह मेरे बिभल्लो माताके हाथके आभूषण हैं। बेसो बेटी, किनम भित गये हैं। मरत कमर उन्होंने कहा था कि मैं हई कभी मर न करूँ, वे केवल आबके ही दियेके लिए—( रासबिहारीके आँसुओंसे ईष कण्ठसे आये खेन नहीं निकलते। )

हवास—( आशीर्वाद करनेके लिए पाठ ब्याकर ब्यस्त भावसे ) बेटी, तुम्हारा चेहरा बहुत पीला दिखाई पड़ रहा है । तबिलत तो कुछ खराब नहीं है !

विद्या—( सिर झिझकर ) नहीं ।

दयाल—मुसी होओ, आयुष्मती होओ, बगदीम्बरसे मैं वही प्रार्थना करता हूँ ।

[ विद्या उनके पैरोंके पास घुम्ने टेककर प्रणाम करती है । ]

दयाल—( स्वस्त होकर ) बस बस, हो गया बेटी । आनन्दमय मगधान् तुमको आनन्दमें रखें ।—लेकिन मुझ देखकर तो तुम बहुत ही बन्दी और मुस्त-सी जान पड़ती हो । तुम्हें विभ्राम करनेकी जरूरत है ।

रस —विभ्रामकी जरूरत तो है ही दयाल, बढ़ी जरूरत है । ( विद्यासे ) आज बन धीका उसकेका करके खाकर तुम्हारे मनको मैंने बड़ा बड़ा पहुँचाया है, लेकिन इसके बिना भी काम न चलता । आँकेके धुम दिनमें उन्हें पाल करना मरा कर्तव्य था । खर, अब और बातें करके मैं तुम्हें बड़ा नहीं दूँगा बेटी, बाओ विभ्राम करो ।—दयाल, जलो मारो, हम धीरे चलें । ( कर्मचारियोंकी आर कक्ष करके ) तुम सभी अपहरणमें बड़े हो । तुम लोगोंकी यह मंगल-कामना कभी निष्फल न होगी । केवल दयालका ही नहीं, तुम लोगोंका भी मैं कहता हूँ । अच्छा अब हम सब बने चलें, बटेकी कुछ विभ्राम करनेका अपसर दें ।

[ एक एक करके सब जात है । ]

[ विद्या हाथके कड़े उतार डालती है और चुपचाप और आँकर कुर्तूप बैठकर टेबिलपर सिर टिका देती है । क्षमभर बाद परेशका प्रवेश । ]

परश—( क्षमभर चुपचाप विद्याको ताकते रहनेके बाद ) माओ ।

विद्या—( सिर उठाकर ) क्या है रे परश ?

परश—तुम्हारा तो ब्याह होगा माओ ।

विद्या—ब्याह हाया ? यह तुझसे किन्तु कहा रे ?

परश—छप्पी धीरे कहत हैं । अभी अभी 'आशीर्वाद' + हा गया है, जो हम तकन देता है ।

+ विशाहकी एक रस, जो वरपत्नी औरसे ब्याह पछा होनेकी सूचक होती है ।—अनुवादक

विजया—कहाँसे देख ?

परेष—उठ दरवाजेकी पंखसे । मैं, मा, लक्ष्मी कुम्हा लगीने ।—हो जाने ऐसे हो न माजी, एक लक्ष्मी 'चर्ची' मोस बाँझ्या । ( लक्ष्मीके बाहर नजर पड़ते ही ) वह देखो, वह डाक्टर बाबू का रहे हैं माजी ! लक्ष्मी हुए स्टेसनकी तरफ का रहे हैं ।

विजया—( झपटकर लक्ष्मीके पास आकर और बाहर देखकर ) उन्हें पकड़ का लकड़ा है परेष ! तुझे बहुत बड़िया चर्ची करीब हूँगी ।

परेष—होगी न माजी ? ( कहकर चौड़ लगाता है । )

( परेषकी माया प्रवेश । )

परेषकी मा—आज क्या कुछ सामो-पिसोमी नहीं बिठिया रानी ! एक बूँद चाय भी नहीं पी तुमने ! ( देखिके पास आकर दोनों कपे हाथमें लेकर ) वह क्या किया ! आजके दिन क्या हाथसे इन्हें उठापना चाहिए बिठिया रानी ! फिर तुम ऐसी मुन्कड़ हो कि शायद वही छोड़कर चली सामोमी—लक्ष्मी नजर पड़ेगी वही क्या फिर वेगा ?—हाँ देखो, अपने परेषको एक भैंगूटी तुम्हें बनवा देनी पड़ेगी; उसकी यह बहुत दिनोकी लाप है ।

विजया—और तुम्हो एक हार—क्यों ?

परेषकी मा—तुम बेचक रैली कर रही हो; लेकिन क्या तुम वह समझती हो कि मैं वह बिना किये छोड़ूँगी ?

विजया—नहीं छोड़ोगी क्यों ? वही तो तुम लीयोंके पनेका दिन है !

परेषकी मा—उच ही तो है ! इन सब कामकाजोंमें नहीं पावेंगे तो और कब पावेंगे, तुम्हीं कताओ !—अप्य, एक प्लाटी चाय और कुछ खानेका के बाँके क्या ! न हो, अपने लोमोके कमरेमें पलो, मैं वहीं दे बाँकेसी ।

विजया—वही करो—मेरे लोमोके कमरेमें ही पहुँचा दो ।

परेषकी मा—काली हूँ बिठिया रानी, महाराजसे कुछ गलत-गलत पूरी बनानेको कह देती हूँ । ( गलवान । )

[ परेष और उसके पीछे मरेन्द्र, दोनों प्रवेश करते हैं । ]

विजया—यह ल परेष बपवा । लूत अचली-ली चर्ची ल लना—ठगना न करी ।

परेष्ट—नाह— [ पञ्च मारते ही आँखोंसे व्योमक हो जाता है । ]

नरेन्द्र—ओ, इसीसे उसे इतनी गरम थी । मुझे छोट लगेका भी अबकाय नहीं देना चाहता था । बर्सी खरीदनेका रुपया भूल दिया गया । लेकिन क्यों ? एकएक फिर क्यों मेरी पुकार हुई ?

बिब्या—( क्षणभर नरेन्द्रके मुखाब्धि ओर टाककर ) मुँह तो सूख रहा है—चेहरा ठहर गया है । क्या खाया-पिया ?

नरेन्द्र—खाया-पिया नहीं । दवाँकि एक बाकुर और आषा, भीतर घुसनेको भी ही नहीं खाया ।

बिब्या—क्यों ?

नरेन्द्र—मग्न नहीं क्यों । चीमें आषा, खब करी, किन्हीके पास न जाऊँगा—इधर अब आऊँगा ही नहीं ।

बिब्या—मैं डुरी हूँ, बेकर हो क्रोध करती हूँ और आप बहुत मछे आदमी हैं—क्यों ?

नरेन्द्र—कितने कहा कि आप डुरी हैं ?

बिब्या—आपने कहा । मेरा ही अफमान किया और मुझको दण्ड देनेके लिए बिना खाये-पिये कपड़ोंसे बले बा रहे हैं—मैंने मग्न आकाश क्या निगाड़ा है ।

[ कहते-कहते बिब्याकी आँखोंमें आँसू भर आते हैं और उन्हींको छियनेके लिए वह किन्हीके बाहर मुँह मुझकर काड़ी हो जाती है । ]

नरेन्द्र—कैसे अचरबकी बात है । मैं अपने बेरोको खेय बा रहा हूँ, इसमें मैं मेरा दोष है ।

( काशीपदका प्रवेश । )

काशीपद—मगधी, आपके सोनेके कमरेमें जाना पहुँच गया ।

बिब्या—( नरेन्द्रसे ) थकिए, आपका खाना परोसा रखा है ।

नरेन्द्र—मेरा खाना कैसा ? मैं तो आप ही मछी खाना था कि नहीं फिर आऊँगा ।

बिब्या—मगर मैं जानती थी । थकिए ।

नरेन्द्र—फिर मेरे खानेकी व्यवस्था आपके सोनेके कमरेमें ? वह मैं करी

हो सकया है ?—हैं काशीपुर, मित्रके लिए जाना परोता गया है, अब सब तो करो ।

काशीपुर—जी, माँजीके लिए । आज रात दिन बीत गया, इन्होंने कुछ नहीं किया है ।

नरेन्द्र—इसीसे वह सब मुझे जाना होगा ! देखिए, वह बग्याव हो रहा है । इतना कुछ मुझपर न बाहर ।

विजया—काशीपुर, तु अपने कमरे जा । जो बाग्याव नहीं, उन्में क्यों बसत देता है तु ! ( नरेन्द्रसे ) देखिए, ऊपरके कमरेमें ।

नरेन्द्र—देखिए । लेकिन वह बाग्याव कहा बग्याव है ।

( लज्जा प्रदान । )

## द्वितीय दृश्य

प्रदान—विजयाके छिनेछ कमरा

[ विजया और नरेन्द्र प्रवेश करते हैं । एक डेक्कके ऊपर तरह तरहकी खाने-पीनेकी सामग्री रखी है । ]

विजया—( डेक्ककी ओर इशारा करके ) बैठिए, भोजन कीजिए ।

नरेन्द्र—( बैठते बैठते ) आपके जानेकी यादों की वही छात्र न दे सके । रातें दिन आपसे कुछ छात्र नहीं ।

विजया—क्या नहीं, इच्छिए यहाँ से आयेगा ! आप कौन हैं जो आपके सामने एक डेक्कपर बैठकर मैं लाऊँगी ? अच्छा प्रस्ताव है !

नरेन्द्र—मेरी सभी बातोंमें ऐसा निश्चयना कैसे आपका स्वप्न हो गया है । इसके बिना आप ऐसे कदु कपन बोलती हैं जो हृदयमें कलकते हैं ! आप ऐसी बड़ी बातें क्यों कहती हैं !

विजया—बस पकता है, और कोई आपसे कही बातें नहीं कहता ।

नरेन्द्र—महो, कोई नहीं । ठीक बात ही कहती हैं । मेरी समझमें नहीं आती कि आप मुझपर क्यों इतनी नाराज हैं ।

विजया—वह हृदय माहुरोप देखकर करते आप मुझे ठग से गये हैं उसके

मैं आपसे सख्त नापस हैं। मेरा श्रोत्र किसी तरह धान्त नहीं होता। आपकी देखते ही वह माइक्रोस्कोप बाह्र आ जाता है।

नरेन्द्र—झूठ, झिझुल झूठ। आप खूब जानती हैं कि इस मामलेमें आपकी ही पीठ दुर्ग है।

विजया—अच्छी तरह जानती हूँ कि मैं नहीं खीली—पूरी तीरसे ठगा गई हूँ। खैर, इस छोड़िए—आप जाने बैठिए। छठ बजेकी यात्री तो घूट ही गई, नौ बजेकी गाड़ी भी क्या बखी जाने देंगे।

नरेन्द्र—ना ना, खीली जाने न दूँगा। ठीक समय पर पकड़ दूँगा।

[ नरेन्द्र धौबन करने लगता है। बाकीपद पदों खेचकर खींचता है। ]

काशीपद—माथी, आपका गाना—

विजया—ना, अमी नहीं। ( काशीपदका प्रस्थान । )

नरेन्द्र—आपके घरमें नौकरोंके मुँहका यह 'मा' सम्बोधन मुझे बहुत ही अजीब लगता है।

विजया—नौकर छोटा क्या कुछ और भी कहते हैं।

नरेन्द्र—कहते क्यों नहीं। मेमसाहब कहना—

विजया—आप बड़े निम्नक हैं। केवल पचाई क्या किया करते हैं।

नरेन्द्र—को देखता हूँ, वह कबू नहीं।

विजया—ना। आपका काम केवल मुँह बंद करके खाना-मर है। बाकीमें कुछ भी पढ़ा न पढ़ना चाहिए।

नरेन्द्र—तब तो मेरे प्राय ही न बनेंगे। इतनेमें ही मेरा पेट मर जाता है। इतना कौन खाएगा।

विजया—ना, पेट नहीं मर जाता। बसिक एक काम कीजिए, पचाई निम्न करते-करते ही अन्यमनस्क होकर खाएँ। सब साथे बिना किसी तरह घुमपरा न होय।

नरेन्द्र—इतना सब सेगेपर भी आप कहती हैं कि अमी पेट नहीं मर, खाना नहीं हुआ किन्तु कबूस्कोपमें मैं को रोब लाता हूँ, उसे अगर देख लो अन्धा हो जाईगा। देखती नहीं हैं, दृष्टी कई महीनेमें कैसा दुष्प्रभाव हो गया है मैं। मेरे डरेका रोटी बनानेवाला महाप्राय बैसा पात्री है, बैसा ही बदमाश मीकर भी

मित्र गया है। हमारे जाना बनाकर न जाने कहीं चक देता है। पता ही नहीं चला। मुझे किसी दिन ओटोमें दो बस आते हैं और किसी दिन धार बस आता है। वही ठेका रूखा हुआ मात और लुकी रोटी खानी पकती है। दूध किसी दिन किसी पौ जाती है, किसी दिन कोय बिक्री खुली पाकर कुछ आते हैं और सब इतर ठहर बिक्रेपर छोड़कर दर कर डालते हैं। बिसे देलकर ही भूषा होती है। महीनेमें आगे दिन सो खाना ही नहीं होता।

बिकना—येसे सब नाकबक मौकर पाकरोंको आप निकल बाहर क्यों नहीं करते? अपने डेरेमें इतना रुपया कब करके भी अगर इतना कद उठाना पड़ता है तो फिर नौकरी ही क्यों की जाए।

नरेन्द्र—एक हिसाबसे आपका कहना ठीक है। एक दिन कलके मीठारसे किसीने दो सौ रुपय चुग लिये। एक दिन आप ही कहीं एक सौ रुपयका नोट खो गया। अम्बामनलक खेयोको फाफापर ही बिपदा होती है कि नहीं। ( बरा कमर ) मगर बात यह है कि दुस्त-कद बहुत दिनोंसे लहते आनेके कारण सब उठना समझा नहीं। केवल कमी कमी घोरकी भूख आने पर ही खाने-पीनेका कद भला जान पड़ता है।

[ बिकना फिर छत्रमे चुपचाप झुनरी खती है। ]

नरेन्द्र—अच्छमें नौकरी मुझे अच्छी नहीं लगती, और सुलझे होती भी नहीं। मेरी जकरते बहुत ही कम हैं। आप देखा कोई बड़ा भारमी दोनों बूत लनेको दे देता और मैं अपने काममें गया रह लज्जा तो और कुछ न चाहता। लेकिन कैसे बड़े भारमी बन कहीं हैं? ( एकाएक हँसकर ) वे कैसे खाने हो गये हैं—एक पैसा भी निम्न कार्य करना नहीं चाहते।

[ यह कहकर वह फिर हँस पड़ता है। बिकना कैसे ही बिना कुछ बात बेठी रहती है। ]

नरेन्द्र—लेकिन आपके पिताजी अगर बिबा होते तो शायद इत कमब मेरा बका उपधार हो लज्जा—वह निम्न ही इत डेखलसे मरी रहा करते।

बिकना—वह आपने कैसे जाना? उन्हें तो आप पहचानने का जानते मरी थे।

नरेन्द्र—ना। मैंने भी उनको कमी मरी देखा और, उन्होंने भी आपपर मुझे

कमी नहीं देखा। लेकिन तो भी वह मुझे कुछ प्यार करते थे। कितने मुझ रूप देखकर निरन्तर शिष्टाके लिए मेरा था, जानती हैं आप। उन्होंने ही—अच्छ, हमारे आपके सम्बन्धमें क्या वह कभी कुछ आपसे नहीं कहा गया।

बिन्ना—कहना ही तो सम्भव है। लेकिन आप ठीक क्या इशारा कर रहे हैं, यह समझे बिना तो मैं बयास नहीं दे सकती।

नरेन्द्र—(सबका सोचकर) चाने दीधिय। अब वह बाबूजीना किस्तुन मेकर है।

बिन्ना—(व्यथ होकर) ना, कहिए—आपकी कहना ही होगा—मैं सुनौती ही।

नरेन्द्र—लेकिन जो मामला सत्य हो गया उसके बारेमें झुनकर ही क्या होगा, बताइए।

बिन्ना—ना, वह न होगा, आपकी कहना ही होगा।

नरेन्द्र—(हँसकर) कहना केवल निरर्थक ही नहीं है—कहनेमें मुझे खम्हा भी लगती है। शायद आप अपने मनमें वह सोचें कि मैं कौशिके आपके सेंटिमेंट (Sentiment—भावुकता) को उभार कर—

बिन्ना—(अधीर आकर) मैं अब और झुसामह नहीं कर सकती—आपके पैरों तकती हूँ, बतलाइए।

नरेन्द्र—जाने-पानेके बाद।

बिन्ना—मही, धम्मी।

नरेन्द्र—अच्छ, कहता हूँ, कहता हूँ। लेकिन उसके पहले एक बात आपसे पूछता हूँ। मेरे घरके बारेमें क्या सम्बन्ध ही उन्होंने किसी दिन आपसे कुछ नहीं कहा। (बिन्ना अधिकतर अत्यधिक या उतावली हो उठती है) अच्छ, लक्ष्मी होनेकी पकड़ नहीं मैं कहता हूँ। जब मैं विस्थापित गया था, तब अपने पिताजीके मुक्त मुना था कि आपके बापूजी ही मुझे मेव रहे हैं। भाव पार-पार दिन हुए, दयालु बाबूने मुझे कई शिष्टाका एक बरत दिया है। मीरेके दिन कोठेमें मेरा दूध-मूत्र कुछ अलग पड़ा है, उसीमें एक मेवकी दूध दरावमें कुछ चिट्ठी थी। पिताजीका पीर होनेके कारण दयालु बाबूने वह बरत मेरे ही हाथमें दिया। पढ़कर देखा, उनमें दो चिट्ठी आपके



मिठाजीके हाथकी सिन्धी थी। चापड़ आपने चुना होना कि आखिरी दिनोमें मेरे बान्सीने जामके फेरमें पड़कर बुआ लान्ना झूठ कर दिया था। जान पड़ता है, बड़ी हथारा एक पिट्टीके आरंभमें है। उसके बाद नीचेके हिस्सेमें एक बमह पर आपने मिठाजीने उपदेशके मिठसे लान्ना देकर बान्सीको सिखा है कि मन्थनके लिए सिन्धा नहीं करना। नरेन्द्र मेरा भी तो बेटा है—मैं वह उसीको देखेक्यों देता हूँ।

बिजया—( तिर उठकर ) ठठक कर !

नरेन्द्र—उसके बाद और और सब बातें हैं। लेकिन यह पत्र बहुत दिन पहलेका लिखा हुआ है। बहुत समय है उनका वह विषय बदला बदल गया हो और इसी लिए उन्होंने कोई बात आपसे कहनी आवश्यक न समझी हो।

बिजया—( कई सेकेंड तक स्थिर रहकर ) तो कहिए, आप बरफा दावा करेंगे। ( हँसती है )

नरेन्द्र—( हँसकर ) बच्चा कैसेगा तो आप को ही गज़ाहके समझें ठठक कैसेगा। आशा है, आप सब ही बोलेंगी।

बिजया—( खरन दिखकर ) निश्चय। लेकिन मुझे गवाह क्यों बनावेंगे ?

नरेन्द्र—नहीं तो व्यक्ति कैसे होगा। वह भी तो अवश्यमें लक्षित करना चाहिए कि वह कल्पद्रुम ही मेरा है।

बिजया—और किसी अवस्थायी अस्तित्व नहीं, बान्सीको आदेश ही मेरे लिए अवश्य है। वह मन्थन में आपका बीज बूँगी।

नरेन्द्र—( हँसती मुद्रा में ) जान पड़ता है, पिट्टीको ऑलॉवे बेसे बिना ही मन्थन वापस कर देंगी।

बिजया—नहीं। पिट्टी मैं बेचना चाहती हूँ। किन्तु वही सब अगर ठठमें किसी हाँ तो बान्सीके दुःखमें मैं किसी तरह आश्रय नहीं करूँगी।

नरेन्द्र—उनका मेरा अन्त तक नहीं बना रहा, इच्छा ही क्या प्रभाव है।

बिजया—यह मेरा बरफा नहीं रहा, इच्छा भी तो प्रभाव चाहिए—पर क्यों है ?

नरेन्द्र—करिब अगर मैं न हूँ ! अगर दावा न करें !

विजया—यह आपकी इच्छा । किन्तु ऐसी हास्यमें आपकी बुआके बड़के मी खे हैं । मुझे विश्वास है कि अनुरोध करने पर वे दावा करनेको तैयार हो जाएंगे ।

नरेन्द्र—( ईसकर ) उन लोगोंके बारेमें यह विश्वास मुझे मी है । यहाँ तक कि इच्छा लेकर कहनेको मी तैयार हूँ । ( विजयाने इस ईसमें साथ नहीं दिया, चुन रही ) अर्थात् मैं हूँ या न हूँ, आप बेंगी ही ।

विजया—अर्थात् बापूजीकी ही हुई चीजको मैं हकम नहीं कर जाऊँगी—यही मेरा पक्ष है ।

नरेन्द्र—(श्रद्धाभासमें) यह घर जब आपने एक सत्कारके लिए दे दिया है, तब मरे न लेखपर मी आपको हकम करनेका अधिकार नहीं होगा । इसके सिवा तब मैंने आपकी ही में क्या कहैया, आप बताइए । कोई आश्रयित स्वजन मेरे हैं नहीं जो उसमें आकर रहेंगे । बाहर कहीं-न-कहीं बाहर काम किये बिना मेरा गुजर नहीं होगा । इससे परकी जो व्यवस्था हुई है वही तो सबसे अच्छी है । और मी एक बात है । वह यह कि कियत बापूको आप इसके लिए किसी तरह राखी न कर पावेंगी ।

विजया—अपनी चीजके लिए किसी दूसरको राखी करनेका चेष्टा केवल कामके लिए मेरे पास पसन्द समझ नहीं है । लेकिन आप तो और एक काम कर सकते हैं । परकी जब आरम्भ करार नहीं है, तब उतका उचित मूल्य मुझसे ले लीजिए । फिर ब्यक्तको नौकरी मी न करनी होगी और अपना काम मी आप मात्रमें कर सकेंगे । आप राखी हो जाएँ नरेन्द्र बाबू ।

[ इस विनयपूर्ण कथनस्वरूपमें नरेन्द्रको मुग्ध किया, पक्षम मी किया । ]

नरेन्द्र—आपकी बातें सुनकर राखी होनेको ही भी चाहता हूँ, लेकिन यह होना नहीं । क्या जाने क्यों, मुझ बहुत बार यह ध्यान पड़ा है कि बापूजीके आगतके बदलेमें यह घर लेकर आप मनमें मुन्नी नहीं हो सके हैं, इसीमें कोई-कोई बहाना निरालकर आप यह मुझे छोड़ देना चाहती हैं । आपकी यह दया मैं हमेशा याद रखूँगा । लेकिन जो मुझे निम्नी न चाहिए, वह चीज मरीच होने के कारण भीतर ही तरह केने से सज्जा हूँ ।

विजया—आप जानत हैं, इस बातसे मुझे कितना कष्ट होता है ।

नरेन्द्र—मनुष्यकी दृष्टिसे मनुष्य क्या पाया है, वह क्या कभी हो सकता है ?  
 किन्ना—देखिए, आप सोचा देनेकी चेष्टा न कीजिएगा । आप क्या पायें,  
 ऐसी बात तो मैंने किसी दिन नहीं कही ।

नरेन्द्र—लेकिन बन्नी बो कहा था कि मैं माइक्रोस्कोप देखकर आपको ठग  
 ठे गया हूँ । कानोंको बहुत मझा लगावेवाला मधुर वाक्पत्र है वह—क्यों ?

किन्ना—( हँसी व्या वाली है ) लेकिन वह तो छद्म है ।

नरेन्द्र—बो हों, लज्जा तो है ही ।

किन्ना—आप गरीब हों या बड़े धनी, मुझे इच्छे क्या ? मैं तो केवल  
 कपूजीकी आत्माका पावन करनेके लिए ही वह घर आपको बौद्ध देना  
 चाहती हूँ ।

नरेन्द्र—इसमें भी योझा-ला मिथ्या यह मया । और उसे बाने दें । बल कभी  
 बड़ी प्रतिकार्य ही कर जाती, लेकिन पित्रके दुष्कर्मके मासिक देने क्यों तो किरन  
 चींटे देनी होती, वह जानती हूँ । अकेला वह घर ही तो नहीं है ।

किन्ना—अच्छा, बन्नी लज्जा सम्पत्ति लेती थी ।

नरेन्द्र—( हँसकर फिर दिखते हुए ) बड़े ऊँचे मस्ते दाना करनेकी  
 मुससे कर रही हैं, यहाँ तक कि अगर मैं न हूँ तो मेरी तुम्हारे सम्पत्ति दाना  
 करनेके लिए करनेकी बन्नी तक दे रही हैं; लेकिन उनके आदेशके अनुसार  
 मर दाना कहाँ तक पहुँच सकता है, यह भी मायम है । बन्नी वह घर और  
 कुछ बीच कमीन ही नहीं, उससे कहीं ज्यादा—बहुत अधिक देना पड़ेगा ।

किन्ना—कपूजीने और क्या क्या आपको दिया है ?

नरेन्द्र—उनकी वह जिद्दी भी मेरे पात है । उसमें उन्होंने केवल उठना ही  
 बरब देकर मुझे निरा नहीं किया है । बहरों को कुछ आप देल रही हैं  
 वह लज्जा उठीके अनन्त है । मैं केवल उठी परपर दाना कर सकता हूँ, ऐसी  
 बात नहीं है । वह मजान, वह पर, वह लज्जा देखि-कुली-आरना-दीराकमीरी  
 आर-प्रीत, परके दान-दाती, अमल-अमपारी मय उनके मासिक तक पर  
 दाना पर सकता हूँ । यह क्या आप जानती हैं ? कपूजीका हुकुम, कपूजीका  
 हुकुम तो कर रही हैं—देखी वह लज्जा ? ( किन्ना प्रहारपी मूर्तिकी तरह

[स्वाप सिर छुकावे बैठी रहती है) क्यों, क्या जान पड़ता है? वे लकेंगी  
न! यदि न हो, एक बार एकान्तमें निद्रा बाधूँ इस बारेमें छद्म श्रीवि-  
द्या।—हा: हा: हा: हा:—(विद्याके सिर उठाते ही उसके ऊतरे हुए पीछे  
देहरेपर नजर पड़ते ही नरेन्द्रका व्याहृत भ्रम जाता है।)

नरेन्द्र—(भयके साथ) बाप पागल हो गई हैं क्या? मैं क्या सम्मुख ही  
न सब चीजोंपर हाथ करनेवाला हूँ? या हाथ करते ही पा जाऊँगा? वय छो-  
से ही पकड़ से बाहर पागलपानेमें बंद कर दिया जायगा।

विद्या—(गमीर मुहसे) कहाँ है, देखूँ बापूजीकी चिट्ठियाँ।

नरेन्द्र—क्या होगा देखकर।

विद्या—ना हीबिए, मैं देखूँगी।

नरेन्द्र—चिट्ठियोंका बंडल ठीकी दिनसे मेरे इस कोठरी बेधमें पका है।  
ह छीबिए। लेकिन हथिया न लेना—पढ़कर छोड़ देना।

[वेधने चिट्ठियोंका बंडल निकालकर नरेन्द्र विद्याके सामने डाल देता है।  
वेधका फुटीके साथ बंधन सोलकर एकके बाद एक चिट्ठीको उखटते उखटते दो  
चिट्ठियों उठमेंसे निकल सेती है।]

विद्या—वह तो बापूजीके हाथकी लिखावट है।—बापूजी। बापूजी।

[दोनों चिट्ठियों आपसे लगाकर खण्ड होकर बैठ रहती है। नरेन्द्र और  
चिट्ठियों समझकर पुनःस्वाप भ्रम जाता है।]

## तृतीय दृश्य

स्थान—विद्याके घरसं लगी हुई बगियाचा एक हिस्सा

[बरफा कुछ कुछ हिस्सा हथोड़ी सम्मिलित दिखाई देता है। परस पोतीके  
तलमें देवा-चबना लेकर मोहम बाक्य हुआ था रहा है। पीछेसं सफरने हुए  
अनिहारी बाधू प्रवेश करते हैं।]

एल —ए हारमयदे छोकरे। लका रह—लका रह।

परेस—(ठिठककर लका ही जाता है) जी।

रात—बी ! इराम्मादे सुमार ! तू उठ नरेनको घरमे क्यों हुआ क्या था ?  
 परोश—माथीने कहा कि—

रात—माथीने कहा ! किन्तु रातको वह बरमादा घरसे गया—क्या !  
 परोश—तुझे नहीं माखूम बने बाबू !

रात—माखूम नहीं ! इराम्मादे, क्या, तेरी माथीने नरेनसे क्या क्या  
 बातें कीं ।

परोश—मैं तो यहाँ रहा नहीं बने बाबू ! माथीने कहा—यह ते परोश एक बप्पा,  
 इससे डोर-झाली और फलंग बाकर करीब था । मैं दौड़कर बच गया ।

रात—अब भी क्या सब सब कह दे नहीं तो प्यारेसे कोसे क्लावाकर  
 तेरी पीठका धमका उधर दूँगा ।

परोश—( बसावा होकर ) क्या करता हूँ बने बाबू, तुझे नहीं माखूम । नवे  
 दरबानने हमसे झूठ कहा है । तुम बसिक मरी मासे बाकर पूछ दो ।

रात—तेरी मा ! बही छापी तो सारी बुराईची बा है । इस भी निकल  
 दूँगा और उसे भी प्यारेके हाथसे यर्दनिया दिखाने बने माकर बाहर  
 कर दूँगा । और वह जो सत्य जानकर है, उसे भी निकलकर सब और  
 धम करूँगा ।

परोश—मैं कुछ नहीं जानता बने बाबू ।

रात—कसरदार ! ये सब बातें किसीसे न करना । अगर मैं सुना कि  
 तुने अपनी माथीसे एक भी बात कही है तो तब तक दोनों हाथ पीठकी तरफ  
 बैठाकर दरबानसे बसकिन्तु क्लावाऊंगा \* । कसरदार, कहे दता हूँ, एक  
 भी झूठ किसीसे न करना । बा—

[ राजबिहारी और दरबान पहले जाते हैं । दूसरी ओरसे विजया परोश  
 जाती है और हवासे परोशको अपने पास बुलाती है । ]

विजया—हाँ रे परोश, बने बाबू इसे क्यों क्यों दिखाने गए थे ? तुने  
 क्या किया है ?

\* मूलमें 'कल-विहारी' शब्द है । विहारी एक पोवा होना है विजया परोशों  
 शरीरसे लपकेते अपने पैदा कर देती हैं । विहारीय हिन्दी प्रतिपादक अलग  
 है ।—अनुवादक ।

परेय—उन्होंने कहनेको मना कर दिया है माथी । कहते थे—सगरादर, कहे देता हूँ, अगर एक मी रात तुने अपनी माथीसे कही इरामबादे सुभर, तो तुझे सिपाहीसे बैचवाकर कमविण्डू खगलकिया ।

[ कहते कहते तो बेता है । बिब्या स्नेहपूर्णक  
छत्की पीठपर हाथ फेरती है । ]

बिब्या—तुझे कोई डर नहीं है परेय । तू मेरे पास रहना । किन्की मजल है ओ तेरे हाथ लगाये ।

परेय—( अँखें पोटकर ) कहे बाबू कहते हैं—इरामबादे सुभर, नरेनको तू क्यों बुझा जाया था, क्या ? यह सख्त किन्की राठजक घरमें रहा—किन्की रात गये गया !—कोछ ।—अच्छा माथी, तुमने अफर बाबूसे क्या क्या कहा, मैं क्या जानूँ ? तुमने अपना सिबा और कैसे ही मैं डोर-बर्सी पतम खरीदने खज गया दीकता हुआ—है न ठीक ?

बिब्या—हाँ, क्या तो मया था ।

परेय—फिर ? ये नये दरवानबी क्यों कहते हैं कि मैं सब जानता हूँ । बड़े बाबू कहते हैं कि तुझे और तेरी माको घरके मारकर निकलवा दूँगा । और इस कासीपरको—इस मी निकल बाहर करूँगा ।

बिब्या—तू का परेय । डर नहीं । बड़े बाबू कुछ मर्बे तो जाना नहीं ।

परेय—अच्छा माथी मैं कमी नहीं जानूँगा । दरवान बुझाने आवेगा तो मैं भाग जाऊँगा—क्यों न ?

बिब्या—हाँ तू भागकर मरे पास आ जाना । ( परेय जाता है )

[ एसबिहारीका प्रवेश । ]

राठ०—तुम क्यों हो बडी । लपरे ही निकल पड़ी ? मैंने घरके भीतर सब खगह हँदकर देखा, बिब्या रानीका कही पता नहीं ।

बिब्या—आप आज इतन खरे कैसे आ गये ?

राठ०—किपर तरह तरहके अलक कामोला बोला ठहरा बेटी । इस एक बुझिस्ताफ मार अच्छी तरह तो ही नहीं लगा । मगर तुम्हारी ओंखें भी तो बस हो रही हैं । जान पड़ता है, तुम्हें भी अच्छे तरह भीद नहीं आर ?

बिब्या—नीद तो अच्छी ही आई ।

राज—फिर ? बान पड़ता है, ठंड का गई हो ?

विजया—जी नहीं। ठीक ही हूँ।

राज — तुम मरने ही क्यों, लेकिन मैं कैसे मान दूँगा ? कुछ न कुछ निश्चय ही हुआ है। सावधान रहना अच्छा है, व्यवस्थित रहना, नहाना-धोना नहीं।—हाँ, बराबर एक बार ऊपर चढ़ना पड़ेगा। तुम्हारे खेतों के कमरे में वह जो कोरेखी सिखोरी है, उसमें सब कमीन-बागबागकी किताब-पढ़ीके कागज-पत्र बर हैं। उन्हें एक बार अच्छी तरह पढ़कर देखना होगा। सुना है, बीचरी बाबूजी तरफसे बीरवालाजी सीमाजी लेकर एक मुकदमा बाहर होनेवाला है।

विजया—वे लोग मुकदमा करेंगे, वह व्यापस किसने कहा ?

राज — ( बराबर कहकर ) किसीने कहा नहीं बेटी, मुझे इसमें कुछ कहना मिला नहीं है। ऐसा न होना तो क्या इसकी बड़ी कमी-कमीका काम मैं इतने दिन बस पाता।

विजया—किसी कमी-कमी वाला वे लोग कर रहे हैं ?

राज — कमीन कुछ न होगी उसे जो बीचके कामका होमी।

विजया—कह, इतनी-सी ? छे वे ही के छे। इतनेके लिए मुकदमा करनेकी जरूरत नहीं है।

राज — ( बीचके साथ ) तुम बेसी अच्छीक सुनसे ऐसी बात सुननेकी आशा मैंने नहीं की थी बेटी। आता बिना बाबाक अगर दो बीचा छेक है तो कुछ फिर दो बीचसे हाथ न बीचो पड़ेगे, यह किसने कहा।

विजया—तब-तब तो कुछ ऐसा हो नहीं रहा है। मैं कहती हूँ कि मामूली कारणसे मामला-मुकदमा करनेकी कोह जरूरत नहीं है।

राज — ( बार-बार फिर शिखरत हुए ) ना ना, यह किसी तरह नहीं हो सकता। तुम्हारे बापू जब मरे उसमें सब कुछ छेक मर है तब बहुतक मेरे शरीरमें प्राण है, तब-तब बिना व्यापसिके दो बीचा तो बहुत है, वह अंगुष्ठ कमीन छेक देनेमें भी पौर अपरम होगा। इनके सिवा और भी अनेक कारण हैं, जिससे पुराने बागबाग अच्छी तरह एक बार देखनेकी जरूरत है। बराबर ऊपर चढ़ो बेटी,—वेर हानेसे मुकदमा होगा।

विजया—क्या मुकसान होगा ?

रस —बहुत-सी बातें हैं । क्वानी उनकी क्या कैफियत हूँ, क्या ब्याजें !

( मुनीमका प्रवेश )

मुनीम—बाहरकी बैठकसे वही-साते उठा ले जाऊँ मागी ?

विजया—( अचिंत होकर ) कुछ भी नहीं देख पाई मुनीमजी । भाव रहने दीविए, कल तबरे ही मैं निश्चय मंत्र हूँगी ।

मुनीम—बो आता ।

( बाते हुए मुनीमको विजयाने पुकारा । )

विजया —मुनिए मुनीमजी । कलहरीफ वह नया दरवान कसे ब्याज डूमा है !

मुनीम—क्याभय तीन महीने हुए होंगे ।

विजया—उसकी अब बसूत नहीं है । एक महीनेकी तनक्याह अधिक बेकर भाव ही उसे क्वाब दे दीविए । ( बरा बककर ) ना ना, किसी कसूके कारण नहीं । वह आदमी तुझे अच्छा नहीं जान पड़ता इस लिए ।

रस० —किना कसूरके किसीकी बीमिया मुकाना क्या अच्छा है बेटी !

मुनीम—तो फिर उसे क्या—

विजया—मेरा हुकम तो आपने तुन किया मुनीमजी ! भाव ही बिदा कर दीविए ।

रस०—( अपनेको सँगाठकर ) अब बरा बस करके चले बेटी । पुराना क्वाबाल एक बार अच्छी तरह पढ़ना बहुत ही बसूरी है ।

विजया—क्यों ?

रस०—कहा तो, काब है । फिर भी बार-बार एक ही बात दोहरानेके लिए मर पात फालतू कमब नहीं है विजया ।

विजया—कारण हैं, वह तो आपने कहा; लेकिन कारण एक भी नहीं दिलाया ।

रस०—कारण न दिलानेसे तुम नहीं जाओगी ? ( बरा बककर ) इसके माने यह कि तुम्हें मुतपर विरवाश नहीं है ! ( विजया चुप रहती है । )

[ राजविहारी अब अपनेको सँगाठ नहीं सके । पट्टीपर कच्ची ठोकरें बोले— ]



राज० — किस लिए तुम मेरा इतना बड़ा अपमान करनेका चाहत करती हो ।  
किस लिए तुम सुझपर अविश्वास करती हो । बरा सुनूँ ।

विजया—( हास्त स्वरमें ) मुझपर भी तो आप विश्वास नहीं करते । मेरे  
पैसेसे मेरे ही ऊपर जासूल तैनात करनेसे मनका मान क्या होगा, यह क्या आप  
समझ नहीं पाते । इसके अलावा अपनी सम्पत्तिक अस्सी आमावाज इबिषानेका  
मनका अपार मैं कुछ और समझूँ वा समझूँ नहीं, तो क्या यह अत्यामाविक  
होगा । वा यह आपका अपमान करना है ।

[ एतद्विहारी लम्बाटेमें आ गये । एकएक कुछ बौझ न सके । उनकी इतनी  
बड़ी पक्की बात एक छोटी पक्क लेगी, यह संभव उनके पक्के दिमागमें  
आता ही न था । और यह तो यह अपनेमें भी नहीं सोच सकते थे कि विजया  
निर्भय होकर उनके मुँहपर यह बात कह देयी । कुछ देर तक वह किर्तव्य  
विमर्शकी तरह खम्ब बैठे रहे । फिर इन प्रकृतिके योगोंका जो अन्तिम अंश  
होता है, वही सम्भवसे निकालकर प्रयोगमें आये । ]

राज० — कनमात्यकी इच्छा बचानेके लिए ही यह काम करना पड़ा ।  
मित्रका कर्तव्य समझ कर ही करना पड़ा । एक ऐसे बदनसीबको, जिससे जान  
है न पहचान, रास्तसे पकड़ मुकाबर, लम्बेके कमरेमें आर्ष-आभी एत तक  
हँसी-ठट्ठा करनेका मन्त्रक क्या मैं समझ नहीं पाता । इससे तुम्हें क्या अस्व  
मही मान्य होती, लेकिन हम लोगोंकी तो घर-बाहर कहीं सुद दिग्गजा कठिन  
हो रहा है । सपाकमें किसीके सामने फिर उठानका उपाय नहीं रहा । ( खमर  
कनसिपति करने इस प्रमाणका प्रमाण विजयापर कैसा हुआ यह देखकर )  
मैं पूछता हूँ वे बातें क्या अच्छी हैं । वा रोक्नेकी चेष्टा करना मेरा काम  
नहीं है ।

[ विजया चुन रहती है । ]

राज०—( कमीनपर लट्टी ठोकर ) वा चुन रहनेस काम नहीं चलेगा ।  
ये सब संगीन बातें हैं । तुम्हें बचाना देना होगा ।

विजया—बत पाह किनी संगीन हो, लट्टी खनका मैं क्या उत्तर दे  
सकती हूँ ।

राज० — इसे क्या तुम खठ करके उड़ा देना चाहती हो ।

विजया—मैं उड़ा देना कुछ नहीं चाहती क्या मायू। सिर्फ यह कहना चाहती हूँ कि यह सगहर झूठ है। साथ ही साथ यह भी आपसे कहना चाहती हूँ कि उसके बदलकर आप ही जानते हैं कि यह झूठ है।

रास०—मैं खुद जानता हूँ कि यह झूठ है।

विजया—जी हाँ, जानते हैं।—लेकिन आप गुरुजन हैं। आपसे इसपर महल या बाह-विवाह करनेसे भी नहीं चाहता। पुण्डने बागवत देखना अभी रहने दीजिए, ममले-मुकलमेकी बकल सप्लींगी तो आपसे कुछ मेवेंगी।

[ विजया खड बेती है। रासबिहारी सलातेमें हुल बने लगे पड़ते हैं। ]



## चतुर्थ अंक

### प्रथम दृश्य

रवाना—बिम्बाले घरसे मिले हुए बापका वृत्त भोर ।

[ बोड़ी दूर पर सरसती नदी कुछ कुछ दिखाई पड़ रही है ।

बिम्बा और कन्हारसिंह । दवाक बाबूका प्रवेश । ]

दवाक—तुम्हीको हँसता फिर रहा हूँ बेटी । सुन, इसी तरह आई हो ।  
ताना, मर जानेके पहले हजर देलना आई, धानक में हो बाप ।

बिम्बा—क्यों दवाक बाबू ?

दवाक—आप खैर है; बापू दिनके बाद ही पूर्णिमा होगी । अब और के  
दिन रह गये हैं बेटी, तुम्हीं कहीं ! विवाहका सब उद्योग, सब ठेकाई इगरी  
दिनोंमें पूरी कर लेनी होगी । अब वह पतविहारी सब बिम्बेदारी मरे ऊपर  
बालक निश्चित हो गये हैं ।

बिम्बा—आपने बिम्बेदारी की क्यों ?

दवाक—बह तो आनन्दकी बिम्बेदारी है—हँसता नहीं !

बिम्बा—तो फिर सिम्भवत क्यों कर रहे हैं ?

दवाक—घिझाफत नहीं करता बिम्बा । बात यह है कि मुझसे अवश्य यह  
अपराध है कि बड़े आनन्दकी बिम्बेदारी है, तो भी न जाने क्यों काम करनेका  
उत्साह अपनेमें नहीं पला । मन इससे दूर ही रहना चाहता है ।

बिम्बा—क्यों दवाक बाबू ?

दवाक—बह भी ठीक समझमें नहीं आता । जानता हूँ तुम्हने रत  
विवाहमें सम्मति दी है, अपने हाथसे हस्ताकर कर दिये हैं—आगामी  
पूर्णिमामें ब्याह होगा—तो भी बैस इसमें रत नहीं पला । उत दिन  
मरे अपमानसे नाराज होकर तुम्हने कियास बाबूका जो ठिरकर किया,  
यह सबकुछ ही कुछ जानेधाल या, सबकुछ ही कठोर या । तो भी  
न जाने क्यों मुझे जान पड़ता है कि इसके भीतर केवल मेरा अपमान ही

मरी है, और भी कुछ छिया हुआ है, वो तुम्हें हरमड़ी बँटिनी तरह बटकाता है। (कुछ बेर मौन रहकर) यह बात बकर है कि मैं तुम्हारे पात हमेशा नहीं माफ़ किन्तु मेरे अँसों तो हैं। तुम्हारे चेहरेपर वह निश्चयती मिलनभी स्वीय हीमि कहीं है—वह सुबोदबकी ल्यसी कहीं देख पकती है ! बेटी, तुम नहीं जानती, कितने दिन एकान्तमें तुम्हारा यका और उतरा हुआ चेहरा मेरी अँसोंके आगे घूसा किता है—मेरे हृदयके भीतर कभी कैसे उमड़ पड़ी है—

बिब्या—नहीं बयाल बाबू, यह सब कुछ नहीं है।

दयाल—तो क्या यह मेरे मनकी मूक है बेटी !

बिब्या—( मलिन हँसी हँसकर ) मूक तो है ही।

दयाल—ऐसा ही हो बेटी — मेरी मूक ही हो। जान पकता है, इस समय तुम्हें अपने मित्राभी बाद आ रही है, उनके किय मन न जाने कैसा कर रहा है—वही बात है न बिब्या !

[ बिब्या तिर हिसाकर उनके कयनका सम्येन करती है । ]

दयाल—( लंबी सँत छोड़कर ) इस छुम दिनमें अगर वह बीकित होते !

बिब्या—कित किय मुझे कोव रहे थे, यह तो आपने कतावा नहीं बयाल बाबू !

दयाल—अरे हों, वह तो कितुल मूक ही गया। बिबाहके निमन्त्रणपत्र छपाने होंगे, तुम्हारे कयु-कयवबोंको आहरके छाय बुखना होमा, उन्हें वहाँ मयनेकी ब्यकरवा करनी होगी—इसीसे अगर उनके नाम और पते मासूम हो जाते—

बिब्या—जान पकता है, निमन्त्रणपत्र मेरे ही मामसे छपाय जायेंगे !

दयाल—नहीं बेटी, तुम्हारे नामस क्यों छपेंगे ! रासबिहारी बाबू वर और कन्या दोनोंके अमिमासक हैं, इसकिय उन्हीके नामसे निमन्त्रणपत्र छपाना तय हुआ है।

बिब्या—तय क्या उन्होंने ही किया है !

दयाल—हों, उन्होंने ही तो किया है।

बिब्या—तो फिर वह भी वही तय करे। गरा कयु-कयवब कोई नहीं है।

दयाल—( विस्मयके साथ ) यह तुम्हारा क्या काम है बेटी ? यह करनेसे हम लोग क्या करनेका और और उत्साह करेंगे पावेंगे ?

विजया—अच्छा दयाल बाबू, उस दिन नरेन्द्र बाबूजी क्या आपने कुछ पुरानी चिट्ठियों का एक बंडल दिया था ?

दयाल—दिवा तो था बेटी । उस दिन एकएक मैंने देखा, एक दूर दयालके मीठार एक चिट्ठियोंका बंडल पड़ा है । उनके पिताजी नाम देलकर मैंने उन्हें हाथ दे दिया । कबो क्या मैंने अच्छा नहीं किया ?

विजया—नहीं दयाल बाबू, इसे दुरा कौन कह सकता है ? उनके पिताजी चिट्ठियों उन्हें दे दीं, यह तो ठीक ही किया । उन चिट्ठियोंको क्या आपने पढ़ा था ?

दयाल—( विस्मयसे ) मैंने ? ना ना परई चिट्ठियों प्रथम मैं पढ़ सकता हूँ !

विजया—उन्होंने उन चिट्ठियोंके सम्बन्धमें क्या आपसे कुछ नहीं कहा ?

दयाल—एक शब्द भी नहीं । लेकिन अगर कुछ जानलेखी बरतत हो, तो मैं उनसे पूछकर सब ही तुम्हें बता सकता हूँ ।

विजया—कब ही कैसे बतावेंगे ? यह तो अब इस तरह आते नहीं ।

दयाल—आते कबो नहीं । मेरे घर रोब ही आते हैं ।

विजया—हर रोब ! आपकी बीमारी बीमारी क्या फिर बढ़ गई है ? कहों, यह सब तो आपने एक दिन भी नहीं कही ।

दयाल—( हँसकर ) नहीं बेटी, अब तो यह सब बंगी है । इसीसे नहीं कहा । नरेन्द्रजी चिट्ठिया और मंगलान्धी दयाल यह सब है । ( हाथ जोड़कर मंगलान्धी प्रणाम करते हैं । )

विजया—यह अच्छी है, तो भी उन्हें रोब क्यों आना पड़ता है ?

दयाल—आमरूपक न होने पर भी कन्नामृगिणी प्रमत्ता क्या सहजमें दूर होती है ? इसके सिवा उन्हें आनन्द कोई काम-काज नहीं है । वहाँ कोई विशेष कर्तु-बीज या हृदय नहीं है । इसीसे कन्नाका लम्प बड़ी मिला करते हैं । मेरी बी तो उन्हें अपने कदकेके ही समान स्नेह करती है । स्नेह और प्यार करने लायक ही कहना है । ऐसे निर्मल, स्वभावसे ऐसे मजे आसानी मैंने कम ही दल है बेटी । नकिनीजी हँसत है कि वह बी ५० पाठ करके

इसकी फेड़ें। इस बारेमें वह नखिनीको कितना उत्साहित करते हैं, कितनी व्याफ़ा देते हैं, इसकी कोई हद नहीं। उनकी सहाय्यतासे नखिनीने इतने ही दिनोंमें अपने पुरुषके पढ़कर समाप्त कर दी हैं। जिसने-पढ़नेका होनाको बड़ा पात्र है।

विद्या—ठीक है। लेकिन व्याप क्या और कुछ संदेह नहीं करते।

दयाल—आरेका संदेह बेटी।

विद्या—तुम्हें क्या ज्ञान पकटा है, जानते हैं दयाल साहू।

दयाल—क्या ज्ञान पकटा है बेटी।

विद्या—तुम्हें ज्ञान पकटा है कि नखिनीके सम्बन्धमें उन्हें अपने मन्त्रमाला रख करके कह देना चाहिए।

दयाल—वह—वह कहती हो? वह बात तो मेरे भी मनमें आई है बेटी, लेकिन उसका समय अभी बीत नहीं गया। बल्कि दोनों बनोंका परिचय और भी कुछ अनिष्ट जब तक न हो के, तब तक कुछ न कहना ही उचित है।

विद्या—किन्तु नखिनीके लिए तो यह अतिवा कारण हो सकता है। उन्हें अपना मन स्थिर करनेमें शायद समय लगेगा—किन्तु इस बीचमें नखिनीकी—

दयाल—सब बात है। लेकिन मैंने अपनी बीसे वहाँ तक सुना है,

उत्तर—ना ना, नरेनपर हमें बहुत विश्वास है। मैं तो यह सोच ही नहीं सकता कि नरेनके द्वारा किसीकी कोई बलि हो सकती है या वह ब्रह्मर भी किसीके साथ सम्मान कर सकते हैं। लेकिन यह क्या बातों ही बातोंमें हम धरते बहुत दूर निकल आ रहे हैं। अच्छा जब इतनी दूर आ गई, तो क्यों न बेटी, अपना यह घर भी एक बार देख आओ। तुम्हारे जानसे नखिनीकी माँको तो बेहद खुशी होगी।

विद्या—बकिए। लेकिन सौतेलेमें सम्झा हो जानगी।

दयाल—सम्झा हो जाने दो। मैं उसकी व्यवस्था करूँगा। इसके सिवा तबमें कन्हारसिंह तो है ही।  
(सबका प्रस्थान।)

## द्वितीय दृश्य

स्थान—इयाल बाबूके घरके नीचेका बरामदा ।

नसिनी और नरेन्द्र

[ देखियेके दोनों ओर दोनों बैठे हैं । सामने कुन्नी हुई पोशी,  
इयाल, कपन आदि पढ़ने-लिखनेका सब सामान रखा है । ]

नसिनी—सबमुक्त ही मित रामके विवाहमें आप उपस्थित नहीं रहेंगे ? कुछ  
ही दिन तो रह गये हैं । फिर उत्तरविहारीबाबूने आपसे अनुरोध भी किया है ।

नरेन्द्र—उन्होंने अनुरोध अवश्य किया है, पर किनका विवाह है, उन्होंने  
तो एक बार भी नहीं कहा ।

नसिनी—बह कहती तो आप रहते ?

नरेन्द्र—नहीं । मैं ठहर नहीं सकता—सज्जन हैं । मुझे कसबीसे कसबी नहीं  
नौकरीपर जाना होगा ।

नसिनी—लेकिन मेरे विवाहमें ? उसमें भी न रहेंगे ?

नरेन्द्र—रहूँगा । निम्नवचन मित्रवाहगा । अगर अन्तम न हुआ तो  
आपके विवाहमें अवश्य ही उपस्थित होऊँगा ।

नसिनी—बचन देते हैं ?

नरेन्द्र—हाँ, बचन देता हूँ । अगर मित्रवा स्वयं अनुरोध करती तो शक  
इसी तरह उन्हें भी बचन देता । कपनका हर्ष होने पर भी ।

नसिनी—वेस्टिंग ब्रदर सुलबी, इस विवाहमें विधवाको मुक्त नहीं है,  
आनन्द नहीं है । इसमें मुझे भीतर सन्देह है । इसी कारण उन्होंने आपसे  
अनुरोध नहीं किया ।

नरेन्द्र—लेकिन उन्होंने आप ही तो सम्मति दी है ।

नसिनी—सम्मति बचनसे ही है, शक बाध्य होकर । लेकिन हरबसे  
सम्मति कभी नहीं दी । मेरे सम्मति ऐसे तीव्र-साधे आदमी हैं, जो सामनेका तिरा  
अमर बचन बरा भी नहीं देल पात पर उनके मनमें भी संशय परकर गया है  
कि मित्रवा जिसे चाहती है वह आदमी वह निम्न बाबू नहीं है । अभी तक ही  
मुझसे कह रहे थे कि नसिनी, आदमी सेपाटीका लारा मार मेरे ऊपर आ

का है; लेकिन मुझे अपने मनसे उत्साह नहीं मिलता। केवल वही मय हाँटा है कि कोई गार्ह्य काम करने का रहा हूँ। किंतु ही विषयको देखता हूँ, उठना ही जान पड़ता है कि वह दिन-दिन सुस्तती जा रही है, बेहरपर स्वाही होइती जा रही है। मैं क्यों यहाँ आया? आम्बरी दिनोंमें अगर पाप कमाईगा तो मरनेके बाद मरणात्माको काँकर क्या कहाव हूँगा?

नरेन्द्र—देखिए मित्र दास, वह सब कुछ नहीं है। निश्चय अमी-अमी बीमारीसे उठती हैं—अमी एक पूर्ण रूपसे अच्छी नहीं हुई हैं।

नखिनी—इसीसे दिन-दिन सुस्तती जाती हैं। लूण! डाक्टर मुस्तर्जी, मेरे मामा तो घामनेका देख पाते हैं, लेकिन आप वह भी नहीं देख पाते। आप उनसे भी अधिक अंधे हैं। उस दिनकी रात बाद करके देखिए। प्रेम होने पर कोई भी सड़की निश्चय बाधसे, चाहे किंतुना बीम होने पर भी, मास्कि-नौकरके सम्बन्धकी बात किसी तरह नहीं कह सकती थी।

नरेन्द्र—बड़े आदमी रूपके आईकारमें एक कुछ कर सकते हैं मित्र दास। उनकी कानूनपर आगम नहीं रहती।

नखिनी—यह कहना आपका मारी अम्बाव है डाक्टर मुस्तर्जी। आपके भी पहलेसे मैं उधे जानती हूँ—हम एक ही कालिबसे पढ़ती थी। ऐस्वर्ग है; लेकिन मैंने उनमें कभी ऐस्वर्गका गर्व नहीं पाया। उनमें किंतुना दया है—वह किंतुना जान पुण्य अनुष्ठान करती हैं, आप क्या भूल गये। अपरिचित होकर भी वह आपने जाकर कहा, तो उन्होंने गुरम पूषणबाबूको 'पूजा' करनेकी अनुमति दे दी। निश्चय बाबू और एसविहारी बाबू अन्य कोशिश करके भी उस पर नहीं कर सके। मरता, सहायभूमि और न्याय-अन्यायका बोध विनोय सबग होनेपर ही ऐसा हो सकता है, बरा बिचार करके तो देखिए। मेरे मामा तो मरीब हैं, लेकिन वे उनपर किंतुनी भया रहती हैं। इसमें क्या अमी-रीका परमद बाहिर होता है डाक्टर मुस्तर्जी?

नराम्र—(कुछ सोचकर) तो तो सब है। अगर मायूम हो गया कि किंतुने मोहन नहीं किया तो उसे किसी तरह भूषण न जाने देंगी। बाद जिस तरह हो, उसे आपस स्थापेगी। और सिधने-पिधनेमें आदर-बलभी सब तो कुछ पूछे ही नहीं।



नमिनी—फिर ? वह तब क्या सम्पत्तिके बर्माहस होता है ?

नरेन्द्र—और इस बहकीकी पितृमर्क केरी अस्सुन और लसीम है । यह मन्त्रन केनेके बाहर से उनके मनमें बाधित नहीं थी, केना पहा या केवल विमलत बाबूकी बर्माहसीसे—

नमिनी—वह बात हम समी जानते हैं इतरर मुकरी ।

नरेन्द्र—हाँ, बहुत लोग जानते हैं ।—उस दिन उनको बरा परेशानीमें डाकनेके लिए ही बनमाकी बाबूकी उस पिछीका उत्तेल करके मैंने कहा था कि मेरे बाबूकीन बाहे बिना सब किवा हो, किन्तु आपके बाबूकी यह पर मुझे ही बौतुर्मे दे गये थे तो मी आपने छीन लिया । मुनकर विमलता केहरा उतर गया । बोली—वह बात अगर सच है मैं आपके वह पर लीया हूँगी । इसपर मैंने कहा—बात तो मैंने सच ही कही है, लेकिन यह पर बापस लेकर मैं खुद बाहर हूँगा । परमे पास-कुल उत्तर करके हो बापस सिवार और कुले डेरा डालेंगे । इसकी अपेक्षा को कुछ हुआ, नहीं अन्तर्न है । उनमें लि रिक्कर कहा—वह न होगा—आपको केना ही पड़ेगा । बाबूकीके बाहेरकी अपेक्षा मैं प्राण जानेपर भी नहीं कर लूँगी । पर न लही, परके मुनासिब हाम की हो वह से लीकिए । मैंने कहा—मिठा मैं नहीं के लूँगी । बोली—तो मैं आपके बुरके नातेके अलमीबोको लीट हूँगी । बाबूकी को दे गये हैं, वह मैं लीहूँगी नहीं—लिखी तरह नहीं—वही मेरा प्रन है । यह मुनन्त मेरे सिरपर बुहभुद्धि लवार ह । गई । मैंने कहा—इस प्रन्की रसा करनेके लिए क्या क्या देना हीमा, जानती हैं ? लाली यह पर ही नहीं—वह पर, वह कमीशरी, डाक-हाली अमल-कर्मचारी, लाल-लैंग-देमिस-कुली, सब उनके मालिक लकको मेरे हाथमें लीप देना होगा । दीकिएगा वह तब ? दे लेंगी ?

नमिनी—( विमलके साथ ) बमप्राय बाबूकी ऐसी कोर किट्टी है क्या ? कई, हम लीसेमिसे ता लिखीको आपका वह लही बापस ।

नरेन्द्र—( ईसकर ) वह लमाकी बात किसे कर्तु ? मैं क्या पामल हूँ ? लेकिन लिखीकी बात को पूछो तो लम्बुप ही इस मन्त्रनकी बनमाकी बाबूकी किट्टी है । ( ईसकीस लिखकर ) लल कोठमें एक दूरी दराबके भीतर एक पिछीबोझ दीक बा । मेरे पिछीकी नाम देलकर दपास बाबूने वह कुले

दे दिया। मैंने पढ़ा तो देखा, उसमें यह मजेकी बात लिखी है। आप तो जानती हैं कि बनगाली बाबू मेरे पिताके लम्बे मित्र थे। उन्होंने ही मुझे पढ़ने-लिखनेके लिए विनम्रता सेनाया।

नसिनी—इसके बाद ?

नरेन्द्र—बिगबाने कहा कि बेतों पिताजीकी जिद्दी। मेरे जेबमें ही निहिता थी। निश्चयकर सम्मन बाप दी। बाइल लोसकर भूल बंगालकी तरफ नौबने लगी वह चिट्ठी। एकएक निश्चय उठी—यह मेरे पिताजीके हाथकी लिखावट है। इसके बाद दोनों चिट्ठियाँ मायेसे लगाकर पक्क मारते ही एकदम फयर हो गए।

नसिनी—इसके बाद ?

नरेन्द्र—उनकी वह मूर्ति देखकर मैं डर गया। एकदम चुप और निश्चल हो खड़ा था। एकएक देखा, दबी कर्माईस उनकी छातीकी फुल्लियाँ फूल फूल उठनी हैं। फिर और बैठनेका तावट नहीं हुआ, चुपकेसे चला आया।

नसिनी—चुपकेसे चल जाये। फिर उनके पास नहीं गये ?

नरेन्द्र—ना, उधर गया ही नहीं।

नसिनी—उन्हें देखनेको आपका भी नहीं चाहता ?

नरेन्द्र—( हँसकर ) यह जानकर आपको क्या मिक्य ?

नसिनी—नहीं वह न होय। आपको बताना ही पड़ेगा।

नरेन्द्र—केवल आपहीसे मैं यह कह सकता हूँ। लेकिन बचन दीविए कि कभी किसीसे नहीं कहिएगा।

नसिनी—बचन मैं नहीं हूँगी। तो भी आपका भी चाहता है कि नहीं ?

नरेन्द्र—चाहता है—उसदिन हरपही भी चाहता है।

नसिनी—( बाहर देखकर बड़े उन्मत्तसे )—वह जे।—आइए, आइए। मरकार। अच्छी है।

( बिगबा और दयालुता प्रवेश )

बिगबा—( नरेन्द्रकी आर पीठ परकर नसिनीसे ) नमस्कार। मैं अच्छी हूँ कि नहीं, वह पता लगाने तो आप एक दिन भी नहीं गये।

नसिनी—रौब ही जानेको खोजती हूँ, मगर भरक कामोंमें—

बिगबा—परका कामकाय शामद हम लोगोंके वहाँ नहीं है ?

नखिनी—है क्यों नहीं। लेकिन मामीजीकी बीमारीसे—

विजया—किन्तु फुल्ल नहीं मिलती। क्यों न।

नरेन्द्र—( लम्बे आकर हैंतले हुए मुँहसे ) और मैं जो वहाँ मौजूद हूँ, तो आपसे परचास ही नहीं पाई।

विजया—परधान पैसेसे ही क्या परधानता बकरी है। (नखिनीसे) बखिर्र मिल दात, ऊपर बखिर्र मामीजीसे बरा मिल-सेक बाँके। बखिर्र।

[ नरेन्द्रके ऊपर दृष्टिगत श्री न करके नखिनीकी एक तरहसे ठेकर के जाती है। ]

नखिनी—( बाते-बाते ) डाक्टर मुलाखी, बात बिना सिये आप कहीं मम न बाहरया। हमें बीरनेमें डेर न होगी।

दयाल—मेला, तुम भी ऊपर जखो न। वहीं बात पीना।

[ नखिनी और विजया चली जाती हैं। ]

नरेन्द्र—ऊपर जानेसे डेर हो आपकी दयाल बाबू। फिर छः बजेकी गान्धी स्काइ न पहुँचेंगे।

दयाल—तुम तो उस आठ बजेकी ट्रेनसे जाया करते हो—आठ इतनी बन्द बाकी क्यों कर रहे हो। न हाँ, बात वहीं खानेके लिए कह दें।

नरेन्द्र—नहीं दयाल बाबू आठ बात रहने दीजिए। ( पकी देखकर ) वह देखिए, पौंच कम गये हैं। अब मुझे ठहरनेका अवकाश नहीं है। मैं जाता हूँ। मामीजी बुलिया न हाँ।

दयाल—तुम तो ठस होगा ही नरेन।

नरेन्द्र—ना ज़ुल्ल न करें। और एक दिन आकर मैं उन्हें समझा दूँगा।

( प्रस्थान )

[ मीतर नखिनी और विजयाके हैंतले-बाँकेका धम्म सुनकर देता है। इनके बाद ही न दयाल बाबूकी स्त्रीके साथ प्रवेश करती हैं। ]

दयालकी स्त्री—( दयालसे ) नरेन्द्र कहीं गया। वह तो मही देल फटा।

दयाल—अभी अभी कहा गया। बीबा—काम है, आठ छः बजेकी ट्रेनसे जाना शुरू करता है।

रत्नाम्नी स्त्री—यह कैसी बात है। पान नहीं पी, खाना नहीं खाया—ऐसा तो वह कभी नहीं करता।

[ सभी चुप रहते हैं। बिजया दूसरी तरफ झिंझ कर लड़ी रहती है। ]

रत्नाम्नी स्त्री—( पतिसे ) तुमने जाने क्यों कहा। वह क्यों नहीं कहा कि इससे मुझ का दुःख होगा।

रत्नाम्नी—मैंने कहा था लेकिन फिर भी वह ठहर नहीं सका।

रत्नाम्नी स्त्री—तो निश्चय ही कोई कसपी कम होगा। कुछ वह कभी नहीं भ्रमता। कैसा मजबूत व्यक्ति है बेटी। कैसा विद्वान्, कैसा ही बुद्धिमान्। मुझे तो उसने मतनेसे क्या दिया। रोब लीचरे पहर नमिनी और वह बैठे बैठे पढ़ते-लिखते हैं और मैं आकष देखती हूँ। देखकर कैसा अच्छा लगता है, तुमसे क्या कहूँ। भगवान् उत्तम मन्त्र करें।

बिजया—सच्चा हो गई, अब मैं बाँकेजी मामीजी।

रत्नाम्नी स्त्री—चाहे कितनी तबियत खराब हो, तुम्हारे ब्याहमें मैं अवश्य ही उपस्थित रहूँगी। नरेन्द्र कहता है कि मुझे बहुत पक्का छिना न चाहिए। तो वह चाहे जो करे, मैं नहीं सुनूँगी। इन राजारामोंकी सभी बातोंको मना जाय तो जीना घूमर ही जाय।—आधीरात करती हूँ, सुखी होओ कभी उमर हो। बिजयस बाबूजी मैंने बाँकेसे नहीं देखा, लेकिन इन ( रत्नाम्नी बाबू ) के मुँहसे मुना है कि सच्चा मजबूत है। ( हँसकर ) वर पकड़ तो है न बेटी, आप ही तुमने चुनाव किया है—

बिजया—इसमें चुनाव करनेका क्या है मामीजी। जिसके सम्बन्धमें सभी पुरुष एक-से हैं। कोई मुसकी या बातचीतकी मज्जामें कुछ होधिबार है और कोई नहीं है, इतना ही फर्क है। प्रबोधन होमपर हो मीठी बातें कह देते हैं और काम निष्ठ जाने पर तयमूर्ति पारण कर बैठते हैं। इसमें मध्य या भ्रम नहीं है मामीजी। हम लोगोका दुःखका जीवन अन्त अन्त तक दुःखमें ही रहता है।

नमिनी—वह बात आपको म कहनी चाहिए मिन राय।

बिजया—इत समय मैं बहुत नहीं बर्बानी, लेकिन अपना ब्याह होनेपर एक दिन बाद बीबिएगा कि बिजयामे तब ही कहा था। सीट, अब बेर हो रही है, मैं पछती हूँ।—कहाँ-कहाँ।—

देवपद्मे—माथी—

दवाक—( व्यस्य माथसे ) औंठेरी पत है । एक अल्टेन लव हूँ बडी ।

विजया—( ईतफर ) औंठर कहीं है, दवाक बाबू, बाहर वसिए, आकाशमें  
चौदनी छायें हुई है । हम बैलरके का ठेकेने, आप बिना न कौबिए । अफम,  
ममलकार । ( प्रस्थान )

दवाकजी जी—( पसिसे ) कइकीने क्या कहा, कुछ सुना ?

दवाक—क्या ?

दवाकजी जी—तुम खेरोके क्या खान नहीं हैं ? कबल आये, उठकी बाल-  
पतिमें बैठे एक दवाकईका सुर का । जब हँसती थी तब मी । विजयाकी  
पहले मैंने कमी नहीं देला; लेकिन आज उठका मुँह देखकर खान पका,  
बैठे उसे पकड़कर हाथ-पैर बाँधकर कोई बलि देनेको बिले का रहा है ।  
मैंने पूछा—वर पण्ड तो आका गेयी । बोली—इसमें पसंद-नापसंदकी बात क्या  
है मामीजी, जिवौका दुःखका जीवन अंत तक दुःखमें ही बीतता है । वह  
क्या आनन्दका आह है ? देखो, कहीं कुछ पकड़ बरूर है । उठके मा नहीं  
है, आप नहीं है—मुँह देखकर बड़ी ममता होती है । बिना समझ-बूझ  
वह काम न कर बैठना ।

दवाक—मैं क्या कर सकता हूँ, काको । एतविहारी बाबू ही मासिक हैं ।

दवाकजी जी—बाद रही, उनके ऊपर मी और एक बड़ा मासिक है ।  
तुम उनके मंदिरके आचार्य हो—उठके बपपति, उठके घर मुलसे समत-पीते  
हो । उठका मम-मुल, मुल-मुल देखना क्या तुम्हारा कर्तव्य नहीं है ? तब  
कुछ सोचे-समझे बिना ही क्या वह काम कर बैठोगे ?

दवाक—तो तुम्हीं काको, मैं क्या करूँ ?

दवाकजी जी—इस आहमें तुम आचार्यका काम न करो । मैं कहती हूँ,  
करोगे तो एक दिन तुम्हें पछताना होगा ।

दवाक—( विमिश्र मुससे ) लेकिन विजयाने तो स्वयं इस विवाहमें अपनी  
सम्पत्ति दी है, एतविहारी बाबूके सम्पत्ति अपने हाथसे अगदर दवाक  
दिये है ।

नखिनी—कर दे, इससे क्या होता है ? उसके हाथने इतकत किने हैं, किन्तु हरबने नहीं किने । उसकी भीमने 'हों' की है, किन्तु उसके हरबने सम्पत्ति नहीं दी । वह मुझ और हाथ ही क्या बढ़ा हो चायगा मामाजी, और उसके हरबकी वास्तविक असम्पत्ति दब चायगी ?

दवाळ—तुमने यह कैसे जाना नखिनी ?

नखिनी—मैं जानती हूँ, भाव जाते समय नरेन बाबूजी चेहरा देखकर भी क्या तुम समझ नहीं पाये ?

दवाळ और दवाळकी स्त्री—( एक साथ ) नरेन ! हमारा नरेन !

नखिनी—हों, बड़ी ।

दवाळ—असम्भव ! एकदम असम्भव !

नखिनी—( हँसकर ) असम्भव नहीं है मामाजी, सत्य है ।

दवाळ—( चोर देखकर ) लेकिन विवाहाने जो मुझसे स्वयं कहा—

नखिनी—क्या कहा ?

दवाळ—कहा, तुमपर और नरेनपर बरा नजर रखनेके लिए । कहा, नरेनको तुम्हारे चारेमें अपने मनका माल रख करके बता देना चाहिए ।

नखिनी—( झगड़ते हुए ) छी छी, नरेन बाबू मेरे बड़े भाईके समान हैं मामाजी ।

दवाळकी स्त्री—कैसे आश्चर्यकी बात है ! तुम हमारे सस 'ज्योतिष' को क्या भूल गये ? उसके विचारकसे कौटुम्बिक तो अब कुछ घेर नहीं है ।

दवाळ—ज्योतिष ! हमारा बही ज्योतिष !

दवाळकी स्त्री—हों हों, हमारा बही ज्योतिष । ( हँसकर ) इस अवि भाद कीके साथ मुझे सारा जीवन बिताना पड़ा ।

दवाळ—मैं अभी नरेनके बेरेपर जाऊँगा ।

दवाळकी स्त्री—इतनी रातको ? क्यों ?

दवाळ—क्यों ? पूछती हो—क्यों ?—अपना कर्तव्य मैंने ठीक कर लिया है । उससे अब मुझे कोई डिया नहीं लगेगा ।

नखिनी—तुम शांत मनुष्य हो मामाजी, किन्तु कर्तव्यसे कम चीज ~ निश्चित कर लय है । लेकिन भाव रातको नहीं—तुम कम लपेरे जाना ।

इपास—यही होना बेदी । मैं लपेटकी पाकीसे ही चक्क बाँटेंगा ।

नन्दिनी—मैं तुम्हारी पाव ठेका कर रखूँगी मामाजी । अच्छा, अब ठहर जाओ, तुम्हारे मोहनका समय हुआ ।

इपास—धन्य !

( सक्का प्रस्थान । )

### तृतीय दृश्य

स्थान—विजयाका घर, पुस्तकालय । विजया पत्र पढ़ रही है ।

( परेशमी माता प्रवेश । )

परेशमी मा—रातको तुमने कुछ खाया नहीं, आज लपेटे-लपेटे कुछ खाओ न विजया रानी ।

[ विजया फिर उठाकर बंसी है और फिर लिखने लगती है । ]

परेशमी मा—ला-पौकर फिर लिखी । उठो—धन्य, बरकर बाबू आ रहे हैं ।

[ कहकर खिन्न जाती है । परेश नरेन्द्रको पहुँचाकर चक्क जाता है । नरेन्द्र मीठार सुवर्ते की एक कुर्सी खींचकर बैठ जाता है । उसका मुँह खुल हुआ है, दात अत्यन्त हैं । मुँह और ओष्ठमि उद्वेग और अघातिका निद्रा से भरा है । ]

नरेन्द्र—कम मुझे पदधान क्यों नहीं पाई, बहारए तो । आबसे हमेशाके निद्रा अपरिचित हो गया, बही दातद इच्छा बा ।

विजया—आपकी बीमारी और बेहरा कैसा हो रहा है । उम्पित तो बरकर नहीं है । इतने लपेटे कैसा आ गये । जान पड़ता है, कुछ खाया-पिया भी नहीं ।

नरेन्द्र—स्टेडनकर पाव पी आया हूँ । उसके उठते ही चक्क पिवा बा । कम लाया नहीं गया, नींद नहीं आई—रातभर केवल एक ही बात मनको मकली रही कि दातद दर्दका कद हो गया अब मुकमल न होगी ।

विजया—कल बिना प्याये ही उस घरसे भाग गये । बेरेवर कीट कर भी कुछ नहीं लाया और उसके सठकर महलना-लाना कुछ नहीं, इतनी राह बेदम चले आये । बाँट कर निद्रा दूँ बाबू, बही बेहरा हो रही है दातद । मुझे क्या आप उम्पित भी पाविते न रहने देंगे ।

नरेन्द्र—आप भी बहुत मनुष्य हैं। पराये घरमें पहचानना नहीं चाहती और अपने घरमें इतना अधिक पहचानती हैं कि एक आश्चर्य-सा बयान है। कलका काण्ड देखकर मैंने सोचा कि लख देनेसे आप मेट ही नहीं करेगी, इसीसे बिना लख दिये परेशके साथ आकर आपको अमानक भा पकड़ा है। कुछ भयान अवस्था हुई है, वह मैं मानता हूँ, किन्तु आकर ठगवा नहीं। (बिश्वा कुन्वाप नरेन्द्राधी और ताकती रहती है) कल बहोते और देखा, दक्षिण-आफ्रिकासे केवल (स्मृतिधार) आया है कि मुझे नौकरी मिल गई है। बार दिन बाद कलाधीसे दक्षिण आफ्रिकासे बहाना आया। आप अमर न आ पाता तो फिर कभी मेट ही न होती। आपके गुम निवाहका निमंत्रणपत्र भी मिला है। वह गुमअम्य देखा जानेका लोभमय न होगा। किन्तु अपना आशीर्वाद, अपनी अहर्निश गुम-कामना आपके पहल ही बनाने वाला हूँ। मेरी बातों पर आप अविश्वस्त न करें, वही आपसे प्रार्थना है।

बिश्वा—बहोते नौकरी छोड़कर दक्षिण आफ्रिका चले जाएंगे ? लेकिन क्यों ?

नरेन्द्र—(हँसकर) बहो बहोते अधिक बेतन मिलेगा, इच्छित। फिर मेरे लिए बेता कलका केता ही दक्षिण आफ्रिका।

बिश्वा—और क्या ! तो तो ऊँच है, लेकिन क्या मस्तिष्क राखी हो गई है ? अगर राखी मी हो तो इतनी कसरी कैसे जाएंगे मरी समझमें नहीं आता। उनका सब कुम्भका करक कहा है क्या ? और इतनी दूर जानेके लिए ही वह कैसे राखी हो गई ?

नरेन्द्र—ठहरिए, ठहरिए। अभी तक किताब सब बात सोचकर बकर नहीं कही गई, लेकिन—

बिश्वा—लेकिन क्या ? ना यह किसी तरह न होने पायेगा। आप साग हम लोगोको क्या वास्तु किछीना समझते हैं कि हमारा इच्छा हो वा न हो, रस्तीसे बीपकर अपने पीछ गाड़ीमें गठ लीजिएगा और हमें अप्रक साथ बाना ही होगा ! वह किसी तरह न होगा। उनका राखी हुए बिना आप किसी तरह इतनी दूर न जा सकेंगे।

नरेन्द्र—(कुछ देर तक निष्कपनिमूढ़की तरह लक्ष्य रहकर) मामला क्या



है, मुझे समझाकर कहिए न ! वरलों का कब इस नई नौकरीकी बात बरतक बाबूसे कहते ही वह भी चौंक उठे वे जोर इसी तरहकी कोई आपत्ति उठाई थी, जिसे मैं समझ ही न पाया। इतने आत्मनिर्भरोंसे केवल नकिनीके मतामताके ऊपर ही मन्त्र मोहा जाना या न जाना क्यों निर्भर करता है और वही क्यों बचा रहेगी—वह सब कमपाप पदेकी बनता जा रहा है। बात क्या है, सोल्फर हो कहिए !

विजया—( सन्मग्न बह बीरे बीरे ) उनसे आपने क्या विवाहका प्रस्ताव नहीं किया ?

नरेन्द्र—मैंने ! ना, किसी दिन नहीं।

विजया—न किया हो, तो भी क्या करना न चाहिए था ! आपके मन्त्राभावी कीमतोंसे जिया नहीं है।

नरेन्द्र—( कुछ देर सन्मग्न रहकर ) मैं वही सोच रहा हूँ कि वह अनिष्ट किसके हाथ पड़ित हुआ। स्वयं उनके द्वारा ही कभी हुआ नहीं। हम दोनों बन् बानसे हैं कि वह अवश्यम है।

विजया—असंभव क्यों है।

नरेन्द्र—इसे छोड़ो।—एक कारण तो यह है कि मैं हिन्दू हूँ और हम दोनोंकी वांछि भी एक नहीं है।

विजया—वांछि आप मानते हैं।

नरेन्द्र—मानता हूँ।

विजया—आप प्रीतिव्रत होकर इस चीजको अन्धका केले मानते हैं।

नरेन्द्र—अन्ध-धुरेकी बात मैंने नहीं कही—वांछि मानता हूँ, वही क्या है।

विजया—अन्ध, बुरी वांछिकी बात बाने दीविए। किन्तु वहाँ वांछि एक है वहाँ भी क्या केवल सारा वर्गमन्त्रके कारण ही विवाह नहीं हो। उल्टा—यह बात क्या चाहते हैं ! लेकिन आप वहाँके हिन्दू हैं। आपकी ही वांछिने बाहर कर दिया है। क्या आप समझते हैं कि आपके लिए भी किसी अन्य स्थायी कुमारी विवाहके योग्य नहीं है ! आपको इतना आईकार किस लिए है ! और अगर आपका वही सच्चा मत है तो शुरूसे ही आपने यह बात क्यों

नहीं जाता ही ? ( कहते-कहते बिजयाकी ओंसोमें ओंसू मर आये और इतीको ठिपनेके लिए उसने मुँह फेर लिया । )

नरेन्द्र—( छबमर एकटक ताकते रहकर ) आप लपट होकर जो कह रही हैं, वह तो मेरा मत नहीं है ।

बिजया—निश्चय नहीं आपका क्या मत है ।

नरेन्द्र—मरी परीक्षा करतीं तो आपका मसख्म हो जाता कि वह मेरा न क्या मत है, न सुझा । इसके सिवा नस्मिनीके मामलेको लेकर क्यों आप इधर उधर पा रही हैं ? मैं जानता हूँ कि उनका मन कहीं व्यथित है और वह भी निश्चय ही समझ आयेगी कि मैं पृथिवीके वृत्तरे घेरको क्यों भाग पा रहा हूँ । मेरे जानेके लिए आप बेकार बिजया न करें—उत्थित न हों ।

बिजया—बेकार ! नस्मिनीका अमृत न होने पर भी क्या आप समझते हैं कि क्यों आपकी मुसीबत हो वहाँ आप जा सकते हैं ?

नरेन्द्र—ना, नहीं जा सकता । आपकी नापसीमें भी मेरा कहीं जाना नहीं हो सकता । लेकिन आप तो सभी बातें जानती हैं । मेरे जीवनकी साथ भी आपसे छिगी नहीं है । विशेषमें शायद किसी दिन वह साथ पूरी भी हो सकती है लेकिन इस देशमें इतने बड़े निरुद्धमे हीन वरिष्ठ रहना न रहना काम है । मुझे रोकिव्या नहीं ।

बिजया—आप हीन-वरिष्ठ तो नहीं हैं । आपके सब है—इच्छा करत ही सब चीज से सकते हैं ।

नरेन्द्र—इच्छा करते ही अवश्य छेय नहीं सकते, किन्तु आपने जो देना पड़ा है वह मुझे बाद है और हमेशा बाद रहेगा । मगर बेचिय, सेनेका भी एक अधिकार रहना चाहिए । वह अधिकार मुझे नहीं है ।

बिजया—( समझी हुई कसाईको सँगासत-सँगासते, उछेकित स्वरमें । ) है क्यों नहीं, अवश्य है ! यह सम्पत्ति मेरी नहीं है, बापूजीकी है । और वह आप जानत हैं । नहीं तो हँसीमें भी आप उनके स्वतन्त्रता का करनेकी बात बयानपर नहीं कर सकते । लेकिन मैं होती तो इतना कहकर ही न रह

निष्का—मुझे बनाये बिना कहीं बाइपासा तो नहीं ?

नरेन्द्र—ना । बालोके पहले हमसे कह बाँकेया ।

निष्का—भूक तो म बाइपासा ?

नरेन्द्र—( हैरत ) भूक बाँकेया ?—जसिय हयासभाबु, हम लोग जलें ।

दवाब—जलें । धन्य भरी, कससा हूँ ।

[ एक ओरसे दवाब और नरेन्द्र और दूसरी ओरसे निष्का जाते हैं । ]



## पञ्चम अंक

### प्रथम दृश्य

स्थान—निक्काके बैठनेका कमरा ।

[ परेश प्रवेश करता है । चौड़ी पगड़ी छाती और छीटका कुर्ता पहने है । गलमें चुनी हुई आदर लगी है, लेकिन पैर नंगे हैं । ]

परेश — माजी, तीन-चार बज गये; लेकिन पासबी तो अब तक नहीं आई ? मेरी मा बवा कहती है, जानती हो माजी ? कहती है, बूढ़े ब्याल बाबू सठिया मये हैं—ज्योता देकर भूख गये ।

निक्का—हुंसे, जान पड़ता है, बड़ी भूख लगी है परेश ।

परेश —हाँ बड़ी भूख लगी है ।

निक्का—अभी तक कुछ खाया नहीं ।

परेश—नहीं । सिर्फ़ लगेरे बरा ही लेया आई थी । फिर माने कहा कि म्पातेमें खाना बड़ी देरमें मिलेगा, हो और भात ख खे । इसीसे—देखो माजी, यह इतना-सा खया है ।

[ इतना कहकर ठठने हाथसे परिमाण दिखा दिया । फिर पूछ—]

परेश—तुम्हो भूख नहीं लगी माजी ?

निक्का—( बरा हँसकर ) मुझको भी बड़ी भूख लगी है रे ।

( परेशकी माका प्रवेश )

परेशकी मा—भूख क्यों न लगेगी बिटिया रानी ! समय धन कहीं रह गया है । बूढ़ेन यह किबा क्या, क्याओ तो—भूख तो मही गया ! आदमी मेककर पता लगाऊँ !

निक्का—जी हाँ ! आदमी मेकनेकी बरकरत मही है परेशकी मा । अगर सबमुब ॥ भूख बने होये तो बहुत बजित होगे ।

परेशकी मा—लेकिन ज्योता खानेकी आगामे तुम्हाय परेश तो यह

ताकते-ताकते परेशान हो गया। जान पड़ता है, कोई इबारत बर्फ मशीन के किनारे जाकर बेल आया है कि पाखण्डी आ रही है या नहीं।—वा बरोध, एक दफा और जाकर देखा। (परोध जाता है) लेकिन सबसुख ही उनकी समझ देखकर मुझे अचरब हो रहा है। कम उठनी देरसे तो हास्तर धातु की डेकर घर गले और फिर कई घंटे के बाद ही क्या देखती हैं, बूढ़ा लमरेन जिसे कुछ हाविर है। पूछने लगा—परोधकी मा, तुम्हारी माजी क्यों हैं? मैंने कहा—ऊपर अपने कमरेमें ही हैं। लेकिन इतनी रातको क्यों कह किया आपने? बोले—परोधकी मा, कम दोनहरको मेरे नहीं तुम कोय मोहन करना—तुम, परोध, पाखण्डी और मेरी बेटी बिकवा। मैं निर्मलन होने आया हूँ। मैंने पूछा—निर्मलन काहेका है आपायाजी, बोले—उत्तम है।—आहेका उत्तम है धिठिया रानी।

बिकवा—मुझे नहीं मालूम परोधकी मा। मुझसे तो आकर कहा कि कम दोनहरको मेरे नहीं तुमको बचना होमा बेटी। पाखण्डी-आर मेव हूँमा पैदा तुम का न लगेयी। लेकिन तब तक कुछ समझ-झाना नहीं। पूछा—क्यों इनाम बाबू? बोले—मैंने मत रखा है। तुम सब पदार्थन करोयी, तयों वह मत लड़क होया। लीबा, मंदिर ही तो है, बापर कुछ किया होमा। लेकिन वो जानयी कि ऐसा होमा तो मैं निर्मलन लीबा ही न करयी परोधकी मा।

( उत्तरिवाणीका प्रवेश )

उत्त०—वह क्या। अभी तक तुम नहीं गई बेटी? बाप सब यथे।

परोधकी मा—पाखण्डी मेकनेको कहा या ऊन्होमे, तो अभी तक नहीं आई।

उत्त०—उनके लगी काम ऐसे होते हैं। पाखण्डी अगर उनको नहीं मिली थी तो मेरा पात सगर क्यों नहीं भेजी? मैं पाखण्डीका इतिहास कर देता। दोनहरको लिखना या, तो काम कर ही। क्या बिलकुल आत्मयी है। इसीलिए विपन्न बिकवा करता है। अगर सुहावर भी बहुत खोर डाक यथे हैं—तम्बाने बाद आना ही होमा।

( चौहते हुए परोधका प्रवेश )

परोध—पाखण्डी आ गई माजी।

[ उत्तरिवाणीको देखते ही वह संकुचित हो उठता है। ]

रतन—कहता क्या है रे ? आ रही है ? तेरे लिए तो मरे हैं । बेसना परोष, इतना न जाना कि तुझे ही डोबीमें डालकर मरना पड़े । (विषपाते) बाबो बेटी, अब बेर न करो—दिन विस्तृत नहीं रह गया है । बाहर पाकड़ी में ब्रेना । मुझे भी जाना होगा । बिना मरे तो प्राण बचेगे नहीं, बेहद नाराज होया, बुरा मानेगा । वह तो वह नहीं समझता कि दो दिन बाद मेरे घरमें भी ठसक है—कामकी मीड़के मारे हम सेमेन्टी फुल्ल नहीं है मुझे । लेकिन मेरी बात कौन सुनता है । 'राखिहारी बाबू, एक बार घरमें बार-बार डालनी ही होगी ।' अतएव गये बिना मरता नहीं । मगर कह देना, रतन हो गई तो फिर मैं न जा सकूँगा । बाबो बेटी, तुम जाओ । मैं बाहर तब तक मिट्टीके कामका दिसाव देऊँ ।

कामका १०-१०—आदमी लबरेले घाम लक मुते रहते हैं । मरना क्या है, एक महल है, कामकी क्या कोई हद है । जो मेहमान आये वे यह न कह लें कि तेरातीमें कहीं कोई कतर है ।

[ इतना कहकर लगे जाते हैं । उनके बाद और तबका भी प्रस्थान । ]

## द्वितीय दृश्य

स्थान—दवाखाने बरकी बाहरी बैठक ।

[ तरह तरहकी मॉगलिक लबाबट है । बहुत-से लोग आ-जा रहे हैं । ककरव छाया हुआ है । उसके बीचमें पाकड़ीके कहतींभी तुमक मुन पड़ी । सबभर बाद विषया प्रवेश करती है । उसके पीछे परोष अलीपद और परोषकी मा हैं । दवाख बूतरो औरत लीके हुए आते हैं । ]

दवाख—( एक उम्मतले ) वह ली, येरी बेटी आ गई ।

विषया—( हँसते हुए मुलने ) आरकी व्यवस्था भी लूज है ! पाकड़ी मेबनेमें इतनी धर कर ली—हम लब मूखों मर रहे हैं । वही शायद आपका दोरहरका निम्नत्व है ।

दवाख—आज लो तुमको मोहन नहीं करना है बेटी । कद घोड़ा-ल तो होगा । हाँ । मष्टाचार्यकी भी आहा आज लो माननी ली पड़ेगी । नरेन लो मूखके मारे निर्बीज-ल पड़ा है ।—क्यों रे परोष, तू क्या कहता है ?

[ एक आरामी स्वस्त मातसे आता है । उसके हाथमें खुर और छोहागकी पीछे गोरह तब एक अगलमें बैसी हुई हैं । ]

आरामी—( दबाछते ) दान सामग्री और छोहागकी सब पीछे आ गई हैं । मैंने सबानेके लिए कह दिया है । बर और कन्नाके पहननेकी छोटी गोरह तब सामान वह है । नार्थो इसीसे रंगने और कुत्तानेके लिए दे दूँ !

दबाछ—हाँ बाकर दे दो । कितने बच हैं ! सप्ताके बाद ही तो लग है । शावह अब अधिक देर नहीं है । ( विक्वासे ) मातसे अन्धमें अब, दिन-मुहूर्त तब मिल गया । न मिलता तो भी आब विवाह करना होता, वह किसी तरह नहीं इस तकता । मगर वह तो मगधानकी कृपासे सब ठीक ठाक मिल गया । इसीसे तो मगधानाबकी हँसकर कह रहे थे कि आबका मुहूर्त बेसे बलकर विवाहके लिए ही पनामे लिखा गया था ।—आब तुम्हारा ब्याह है बेटी ।

विक्वा—आब मेरा ब्याह है !

दबाछ—इसीसे तो आब हमारा वह आनन्दका आयोजन है, महोत्सवकी धूम है ।

विक्वा—( कन्ना कण्ठसे ) आब क्या मेरा ब्याह हिन्दू-रीतिसे करेंगे ?

दबाछ—हिन्दू-विवाह क्या विवाह नहीं है बेटी ? किन्तु साम्प्रदायिक मतवाद मनुष्यको एतद भेद बना बैठा है कि कल तीसरे पहरमर सोब-सोबकर भी मैं इस दुष्ट बलकर कोई समझान नहीं सोब लग । लेकिन नख्खीने हममरमें मुझे समझा दिया—वारा संशय मिटा दिया । बेटी—उनके पिता जिसके हाथमें उन्हें दे मने हैं उसीके हाथमें उन्हें बीधिए । नहीं तो छल करके अमर अपात्रको दान करोगे, तो तुम लोग और अपात्रके भायी होओगे । और फिर मनका मिलना ही तो क्या ब्याह है, नहीं तो ब्याहके मंग संस्कारमें हों या मारामे, उन मंगोका उपासक मगधाना बशमें या मंदिरके आचार्य, इससे कुछ अलग-जाता नहीं । इसी की बलक समझा बेसे एकदम हक हो गई विक्वा । मन-ही-मन कहा—मगधान ! तुमसे तो कुछ छिया नहीं है । इनका ब्याह मैं बाहे किन मतसे क्यों न करूँ, तुम्हारे निध्न अपराधी न होऊँगा, वह मैं निधय जानता हूँ ।

एक मगपुरा—निधय निधय । निकटुत तब बात है ।

दयाल—( धनभर चुप रहकर ) तुम नहीं जानती देखी कि नरेन्द्र तुम्हें मिठना चाहता है। तो भी वह ऐसा सङ्कल्प है कि तुम्हारे सिरपर झूठका बोझ बांधकर तुम्हें भी प्रहसन करनेको राखी न होता। आदिसे अन्ततक उसके सब कामोंपर घोर करके देखो न मित्रवा।

[ बिजवा चुपचाप सिर छत्रमे सिरपर मानसे काही रहती है। नन्दिनी दौड़ती हुई आकर उसके हाथ पकड़ती है। ]

नन्दिनी—बाह, मुझे अभी तक समझ ही नहीं गिबी। कामकी मौकमें कुछ मात्स्य ही न हुआ। ऊपर कन्धे मई, तुमको सबानेकर भार आब मेरे ऊपर पड़ा है। पछे कसी।

[ इतना कहकर वह बिजवाको कीचड़न भीतर धापी जाती है। साथमें परेश, परेशकी मा और कसीपद जाते हैं। नेपथ्यमें शलक बज उठता है। महाशय भीक्ष प्रवेश। ]

महा०—कम समुपरीयत है। आप श्वेग अयुमति दीक्षित, सुमन्त्रार्थ आरंभ करें।

श्वेग बोध—( एक साथ ) हम सम्पूर्ण अन्तःकरणसे सम्मति देते हैं महाशय-भी, शीघ्र ही शुभकर्म आरंभ कीक्षित।

महा०—बो आश। ( प्रस्थान )

[ गँवके किनार-जतिहर नाना तरहक आग अनेक कामोंसे आते जाते देख पड़ते हैं और भीतर ककरव सुनाई देता है। ]

दयाल—मेरे भी मनमें संशय आया था। एक बड़ी बात यह है कि बिजवाने उन जोगेसे हमी मर छी है—बचन रिपा है। नन्दिनीन कहा—यह बड़ी बात नहीं है मामाभी। बिजवाके अन्तर्पामीने उन हाथीका माथ नहीं दिया। तो भी तुम क्या उठके हुएपके सत्त्वको नौपकर उठकी बजानी स्वीकृतिको ही महसूस होये। सुनकर अनाहू होकर मैं उसकी ओर लाङ्घने लगा। वह कहने लगी—केवल मुँहसे निरुत्सर्गके कारण ही कोई बात सत्य नहीं बन जाती। तो भी जो श्वेग उसीको सबके ऊपर स्थान देते हैं, वे ऐसा सत्त्वके कारण नहीं करते—वे सत्त्व भावनके ईश्वरों प्यार करनेके कारण ऐसा करते हैं। आप सब श्वेग स्थान ही जानते, इन महाशय महाशयके बाप-दादे सबके



कुछ-मुठेरित थे। फिर बहुत दिनोंके बाद भाव उठी बंधनी कन्याके विवाहमें पुरोहितका काम करनेके लिए मैं हूँ पा गया—वह मेरे लिए बड़ी सन्तुष्टिवादी बात है। उसके आधीर्वाहसे वह विवाह सम्पन्न हो, निर्मित हो—यही क्षण लोगोंके निकट मेरी प्राप्ति है।

सब लोग—हम आधीर्वाह करते हैं कि वर और कन्याका सम्पादन हो।

दयाल—कन्या-दान करने बैठे हैं विधवाकी दूरके नातेकी एक बुद्धि—

एक मनुष्य—कौन—कौन। ईश्वरकासी धोखाधड़ी विषय।

दयाल—हाँ वही। कसेधके साथ मनमें वह बलात्कृत है कि आज नहीं वनमन्त्री बाधू जीवित होते। अपनी एकमात्र कन्या विधवाको मरेन्द्रनाथके हाथमें छोड़नेके लिए ही उन्होंने मरेन्द्रको पढ़ाया किन्तुमा और अष्टमी बनाया था। दयालके आधीर्वाहसे वह सदा मनुष्य बना है। वनमन्त्री बाधूके पढ़ा-लिखाकर मनुष्य बनाये हुए मरेन्द्रके हाथमें ही हम उनकी कन्या छौप रहे हैं। वनमन्त्री बाधूकी अमिष्यता भाव पूरी हुई।

सब लोग—हम फिर आधीर्वाह देते हैं—वे तुम्हीं हों।

[ वनमन्त्रीसे शंखध्वनि और कलश ध्वनि सुनाई देता है। ]

दयाल—( अस्ति ईश्वर ) मैं भी मरदानसे प्रार्थना करता हूँ कि हम दोनोंकी हानि न हो।

एक बूढ़ा—हम सब आपके भी आधीर्वाह देते हैं दयाल बाधू। तुम्हें प्य, राखिहारीके लड़के किशोरके साथ विधवाका स्वाद होगा। हम ठहरे प्रवाहन। तुम्हारे मरसे मरे जा रहे थे। वह कैसा पापी है—

दयाल—( लज्ज भावसे हाथ ठठकाकर ) मा ना ना। ऐसी बात मत कहिए मरदानबाधू। प्रार्थना करता हूँ उनका भी संकल हो।

बूढ़ा—संकल होगा। संकल होगा। गुरुमें पड़े। मेरे हाथके—

दयाल—ना ना ना—ऐसी बात न कहनी चाहिए—न कहनी चाहिए—मिलीके भी लिए। कदाचित् मरदान समीप मरने।

बूढ़ा—किन्तु वह बूढ़ा बहिन—

[ वीरमन्त्री बालसे राखिहारी बाधूका प्रवेश। सब विधवाका उठ खड़े होते हैं। ]

सब लोग—आइए, आइए, आइए, पधारिए राखिहारी बाधू। हम सभी आपके शुभसम्पत्ति प्रतीक्षा कर रहे हैं।

रात०—( लिट्टी नबरसे दवाखानी ओर देखकर ) आज मामला क्या है, बताओ तो दयाल ! दरबारपर केलेके काम हैं, कच्चा रत्न हैं, भरके भीतर छलका छन्द अभी अभी सुना—तेवारी तो कुछ बुरी नहीं की—लेकिन यह कारेफी तेवारी है ! बर मुर्ख तो !

दयाल—( मय और बिनयके साथ ) आज बिजबाफा म्माह है मार !

रात०—यह राय मिलने दी, बर मुर्ख !

दया—किछीने नहीं मार ! कदमापबन्धी—

रात०—हूँ ! कदमापबन्धी ! पात्र कौन है ! कम्पनीका लड़का वही नरेन !

दयाल—तुम तो—आप तो जानते हैं कि बनमाफी बाबूकी निरकाशकी यही हकम थी—

रात०—हूँ, जानता क्यों नहीं ! बनमाफीकी छक्कीका म्माह क्या अन्तको दिखूँ रीतिसे ही किया गया !

दयाल—आप जानते हैं कि अन्तमें लम्बी बिबाह-अनुष्ठान एक हैं !

रात०—लड़की क्या वह भी भूख गई कि ठठके आपकी दिख्नुमाने योंसे निकाल बाहर किया था !

[ इत समय फिर अन्तापुरसे शलजनि और तरह-तरहका कम्पन सुनाई देने लगा । ]

दयाल—हमकाय निर्मित समाप्त हो गया ! अब मनमें कोह कमनि न रख कर आखीर्वाद हो मार, कि बर-बपू दोनों सुखी हो, बर्मका हो और फिरदीपी हो !

रात०—हूँ ! मुझसे कहकर भी यह कर लफ्ते मे दयाल ! तब यह छट बाटुर न करनी होती ! इसीपर मुझे लफ्ते अधिक पूरा है !

[ रातबिहारी जानेकी उद्यत होते हैं । इतनेमें नकिनी कहींसे दौड़कर आती है ।

नकिनी—( मयलनेके सुरमें ) बाह ! आप क्या म्माहके घरसे मुँह मीठ किए बिना ही बले बायेंगे ! यह न होगा ! आप ला-पीकर तब बहोंसे ब लकेंगे रातबिहारी मामा ! किन्तु कहते निमन्त्रण देकर मैंन आखी बहें कुम्पया है !

रात०—दयाल, यह लड़की कौन है !

दयाल—मेरी मानपी नकिनी !

राज०—बड़ी छीठ बड़की है।

( प्रस्थान )

दयाल—( राखिहारीकी ओर मगर किये हुए ) हृदयमें बड़ी व्याधा पार्ई है। मर्यादा उनके होशको दूर करें।—मांगुसी महाशय, शक्ति, हम लोग जल्दकर अम्मागस्तोके जाने-पीनेकी व्यवस्था करा देंगे। आजके दिन कहीं भी कोई अपराध न होने पावे।

पूर्ण मांगुसी—प्रवागतिके आधीरात्रसे कहीं किसी तरहकी सुटि नहीं है दयाल बाबू—सभी व्यवस्था ठीक है। ( प्रस्थान )

दयाल—( दृष्टांसे बर-बधूको दिखाकर ) नकिनी इन छोलेको भी कुछ खाने-पीनेको देना होगा बेटी। बाबू, अपनी मामीसे आकर कहो।

नकिनी—बाबू मैं मामाजी।

दयाल—मैं भी आता हूँ, जय।

( दोनोंका प्रस्थान । )

[ राजमरके किए रंगमंचपर आखी बर और बधू, दोनों रह जाते हैं । ]

नरेन्द्र—( विचाराते ) गंभीर होकर क्या सोच रही हो, आखी तो मर ।

विजया—( हँसकर ) खेवती हूँ तुम्हारी दुर्गतिकी बात। वह जो मरहकोलमेप खेवकर मुझे ठग के गले दे, उसका पता वह तुम्हारा कि अन्तको मेरे ही हाथ ग्राह करके उसका प्रायश्चित्त करना पड़ा।

नरेन्द्र—( खेवती माया दिखाकर ) उसका वह फल है। वह क्या लवा है।

विजया—हाँ बड़ी छे। मगर लवा क्या तुम्हें कुछ कम मिली है।

नरेन्द्र—छे मिलने दो। लेकिन देखो, बाहर बह बल किसीके आग प्रकट न करना। नहीं तो दुनिया मरक छीम रही व्यवस्था तुम्हारे हाथ मार कोलकोप बेचने बीके आर्गेगे। ( दोनोंकी हँसी )

नकिनी—( प्रवेश करके ) आखी माई मिलेन मुलकी और आइए बा० मुलकी। मामीकी आप लोगोका खेवन परेते लिये पैठी है।—मगर यह छे बजामो, इतने बोरकी हैसाह कबो हो रही बी।

विजया—( हँसकर ) यह जानकीकी तुम्हें बकरत नहीं—

( पर्दा गिरता है । )

समाप्त

